मीडिया मैप

उदार जनतंत्र का सजग प्रहरी

● वर्ष : 10 ● अंक : 09 ● सितम्बर : 2025 ● पृष्ठ : 40 ● मूल्य : 50/-

- सबसे महंगा व्यापार युद्ध : भारत को एक तीखी स्वदेशी प्रतिक्रिया की आवश्यकता क्यों
- नेपाल में ओली सरकार की विदाई - सुशीला कार्की नई प्रधानमंत्री

: हम क्यों :

मीडिया मैप एक वैचारिक पत्रिका है। हमारे समाज के नीतिपरक और मूल्यनिष्ठ बिन्दु तथा इनसे जुड़ाव रखने वाले आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक मुद्दे इसकी विषयवस्तु है। मीडिया मैप की संपादकीय नीति उदारवादी, आधुनिक, प्रगतिशील व सर्व धर्म समभाव की भावना पर आधारित है।

मीडिया मैप हमारे बहुलतावादी समाज की विविधताओं से सृजित समस्त सोच, विचार, दृष्टिकोण, मूल्य और मान्यताओं को अपने में समाहित करने का एक प्रयास है। हमारा उद्देश्य वैज्ञानिक सोच द्वारा समाज से जुड़े मूल मुद्दों पर एक प्रबुद्ध जनमत विकसित करना है, जिससे देश में संकुचित मानसिकता और आपसी टकराव से ऊपर उठकर एक उच्चस्तरीय विचार-विमर्श का वातावरण तैयार हो सके।

मीडिया मैप

उदार जनतंत्र का सजग प्रहरी

संपादकीय सलाहकार मंडल
डॉ. बलदेवराज गुप्त
के.बी. माथुर
डॉ. सलीम खान

प्रधान संपादक
प्रो. प्रदीप माथुर

संयुक्त संपादक : डॉ. सतीश मिश्रा
सहायक संपादक : प्रो. शिवाजी सरकार
विज्ञान तकनीकी संपादक : राजीव माथुर
विशेष प्रतिनिधि : डॉ. मुज़फ्फर गज़ाली
मुख्य उप संपादक : जितेन्द्र मिश्र
वरिष्ठ उप संपादक : प्रशांत गौतम
उप संपादक : अंकुर कुमार

प्रबंध संपादक : चन्द्र कुमार एडवोकेट
प्रबंधक : जगदीश गौतम
विधि परामर्शदाता : संजय माथुर

पंजीकृत कार्यालय : 2324, सेक्टर-डी
पॉकेट-2, वसंत कुंज, नई दिल्ली

संपादकीय कार्यालय : 70 ज्ञानखंड-4, इंदिरापुरम
गाजियाबाद- 201014 (उत्तर प्रदेश)

दूरभाष : 9810385757/9910069262
एम बी के एम फाउंडेशन प्रकाशन

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक प्रदीप माथुर द्वारा लक्ष्मी नगर, नई दिल्ली से मुद्रित एवं मकान नंबर 70, ज्ञानखंड-4, इंदिरापुरम, जनपद-गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश- 201014 से प्रकाशित।

सभी लेखों में लेखकों के अपने उल्लेखित विचार हैं। लेखों और विचारों को लेकर किसी तरह का विवाद होने पर पत्रिका के संपादक, प्रकाशक, मुद्रक इसके लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र जिला और न्यायालय गाजियाबाद ही होगा। इस पत्रिका से जुड़े सभी पदाधिकारी, सहयोगी और लेखक अवैतनिक हैं। पीआरबी एक्ट के तहत संपादक प्रो. प्रदीप माथुर उत्तरदायी हैं।

RNI No. : UPHIN/2016/68336

अनुक्रमणिका

4 संपादकीय : पुराने विश्व की विदाई और नये युग का आगाज़

विचार-प्रवाह : बिहार-महागठबंधन की चुनौती और सत्ता पक्ष की बेचैनी 5-6

7 सोशल मीडिया से : आसान बहाना है मुद्रास्फीति

सबसे महंगा व्यापार युद्ध : भारत को एक तीखी स्वदेशी प्रतिक्रिया की आवश्यकता क्यों? 8-9

10-11 ट्रंप की H-1 B नीति और भारतवासियों को व्यवसाय की चुनौती

ट्रम्प की नीतियों पर भारतीय प्रवासियों में आपसी मतभेद 12-13

14-15 नजरिया उस पार का : नेपाल में ओली सरकार की विदाई

एससीओ शिखर सम्मेलन : वैश्विक भू-राजनीति में एक महत्वपूर्ण मोड़ 16-17

18-19 राष्ट्रीय सुरक्षा व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का संतुलन

ऐतिहासिक तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर आरएसएस एजेंडा लागू 20-21

22-23 शिक्षक दिवस पर विशेष : मंदिरों की चांदी और स्कूलों की बर्बादी

मंच पर गांधी की आत्मा : इतिहास को जीवंत करता नाटकों का दोहरा प्रदर्शन 24-25

26-27 टाइटैनिक त्रासदी पर लखनऊ में प्रदर्शनी

पंजाब, जहां तबाही जीवन का एक भ्रम बन गया है 28

29-30 गुणवत्ता की मुहर-प्रत्यायन का महत्व

चुनाव की ओर बढ़ते बांग्लादेश में मीडिया की सुरक्षा 31-33

34-35 दिल्ली के मुख्यमंत्री-अतीत व वर्तमान

नवीकरणीय ऊर्जा संक्रमण : भारत की रणनीतिक हिस्सेदारी 36-37

38 मीडिया मैप : उदार जनतंत्र का सजग प्रहरी

Email : editor@mediamap.co.in

संपादकीय

प्रो. प्रदीप माथुर

♦♦

अमेरिका दशकों तक दुनिया का एकछत्र शासक रहा है, लेकिन अब तस्वीर बदल रही है। चीन अपनी आर्थिक ताक़त से चुनौती पेश कर रहा है, रूस सैन्य क्षमता और ऊर्जा संसाधनों के बल पर अपनी पकड़ मज़बूत कर रहा है, और भारत रणनीतिक संतुलन बनाते हुए वैश्विक राजनीति का केंद्रीय खिलाड़ी बनकर उभर रहा है। यह त्रिकोण अमेरिका की एकध्रुवीय विश्व व्यवस्था के सामने एक विकल्प मंच तैयार करता दिख रहा है। भारत की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय है। एक ओर वह अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ QUAD का हिस्सा है, तो दूसरी ओर SCO और RIC (रूस-भारत-चीन) मंचों पर भी सक्रिय है। यह उसकी 'रणनीतिक स्वतंत्रता' का प्रमाण है। सीमाई विवादों के बावजूद भारत और चीन वैश्विक मंचों पर सहयोग की आवश्यकता को समझते हैं- यही भारत की कूटनीति की बड़ी उपलब्धि है।

♦♦

पुराने विश्व की विदाई और नये युग का आगाज़

दुनिया एक नए मोड़ पर खड़ी है। सवाल यह है कि क्या सचमुच पुराने विश्व की विदाई हो चुकी है और नये युग का आगाज़ हो चुका है? बीते सप्ताह बीजिंग, मॉस्को और वाशिंगटन के बीच जो कूटनीतिक हलचल दिखी, उसने इस सवाल को और प्रासंगिक बना दिया है।

चीन के तियानजिन में आयोजित शंघाई सहयोग संगठन (SCO) का शिखर सम्मेलन केवल एक वार्षिक बैठक नहीं था, बल्कि वैश्विक राजनीति में बदलते समीकरणों का स्पष्ट संकेत था। वर्ष 2001 में स्थापित यह संगठन अब 10 सदस्य देशों और 17 साझेदारों के साथ यूरेशिया की राजनीति, अर्थव्यवस्था और सुरक्षा का प्रमुख मंच बन चुका है। लगभग पांच अरब लोग, यानी पूरी दुनिया की 70% आबादी, किसी न किसी रूप में SCO से जुड़ी है। इस बार सम्मेलन में ग्लोबल गवर्नेंस इनिशिएटिव (GGI) का प्रस्ताव सामने आया, जिसने भारत के 'वसुधैव कुटुंबकम्-एक पृथ्वी, एक परिवार' की अवधारणा को अंतरराष्ट्रीय समर्थन दिया।

अमेरिका दशकों तक दुनिया का एकछत्र शासक रहा है, लेकिन अब तस्वीर बदल रही है। चीन अपनी आर्थिक ताक़त से चुनौती पेश कर रहा है, रूस सैन्य क्षमता और ऊर्जा संसाधनों के बल पर अपनी पकड़ मज़बूत कर रहा है, और भारत रणनीतिक संतुलन बनाते हुए वैश्विक राजनीति का केंद्रीय खिलाड़ी बनकर उभर रहा है। यह त्रिकोण अमेरिका की एकध्रुवीय विश्व व्यवस्था के सामने एक विकल्प मंच तैयार करता दिख रहा है।

भारत की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय है। एक ओर वह अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ QUAD का हिस्सा है, तो दूसरी ओर SCO और RIC (रूस-भारत-चीन) मंचों पर भी सक्रिय है। यह उसकी 'रणनीतिक स्वतंत्रता' का प्रमाण है। सीमाई विवादों के बावजूद भारत और चीन वैश्विक मंचों पर सहयोग की आवश्यकता को समझते हैं- यही भारत की कूटनीति की बड़ी उपलब्धि है।

आज की घटनाओं को महज़ कूटनीतिक शिष्टाचार मानना भूल होगी। बीजिंग का सम्मेलन, रूस का विजय दिवस समारोह और अमेरिका की बढ़ती बेचैनी मिलकर यह संकेत दे रहे हैं कि अंतरराष्ट्रीय सत्ता संतुलन बदल रहा है। ग्लोबल साउथ-एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका-के देशों को अब एक ऐसा मंच मिल रहा है, जहाँ उनकी आवाज़ दबाई नहीं जाएगी।

क्या यह एक नया शीत युद्ध है? शायद हाँ, लेकिन यह अमेरिका-सोवियत दौर जैसा नहीं होगा। अब जंग हथियारों की नहीं, बल्कि आर्थिक शक्ति, तकनीकी श्रेष्ठता और क्षेत्रीय गठबंधनों की होगी।

पुराने विश्व का वर्चस्व धीरे-धीरे टूट रहा है। एक नई बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था आकार ले रही है, जिसमें कोई भी शक्ति अकेले निर्णायक नहीं होगी। बीजिंग से लेकर वाशिंगटन तक यही संदेश गूंज रहा है- 'पुराने विश्व की विदाई और नये युग का आगाज़ अब केवल नारा नहीं, बल्कि सच्चाई है।'

■■■

विचार-प्रवाह

बिहार : महागठबंधन की चुनौती और सत्ता पक्ष की बेचैनी

बिहार की राजनीति इस समय नए मोड़ पर है। यह बदलाव विकास योजनाओं से कम और विपक्ष की आक्रामकता से अधिक जुड़ा हुआ है। कांग्रेस और राजद की संयुक्त 'वोटर अधिकार यात्रा' ने राज्य के चुनावी परिदृश्य को हिला दिया है। राहुल गांधी और तेजस्वी यादव के नेतृत्व में सासाराम से शुरू हुई यह 1300 किलोमीटर लंबी यात्रा 25 जिलों से गुजर चुकी है और लोगों में उत्सुकता और उम्मीद दोनों पैदा कर चुकी है।

रैलियों की भीड़ चुनाव जीतने का पैमाना न सही, पर जिस तरह बिना बुलाए लोग उमड़े और 'वोट चोरी' जैसे मुद्दों पर गंभीरता से चर्चा सुनी, वह सत्ता विरोधी लहर की झलक देता है। आम लोगों में यह डर गहरा है कि उनका वोट सही जगह नहीं पहुंच रहा। यही वजह है कि यात्रा ने महागठबंधन को एकजुटता का मंच दिया है और सत्ता पक्ष को रक्षात्मक मुद्रा में ला दिया है।

पटना की रैली में गांधी मैदान से आंबेडकर पार्क तक मार्च की योजना थी, जिसे प्रशासन ने अनुमति नहीं दी। फिर भी गांधी मैदान में राहुल गांधी, तेजस्वी यादव, हेमंत सोरेन, यूसुफ पठान और अन्य नेताओं की उपस्थिति ने माहौल गरमा दिया। समर्थकों ने 'वोट चोर, गद्दी छोड़' के नारे लगाए और महागठबंधन की ताकत का प्रदर्शन हुआ।

यह यात्रा केवल रैलियों तक सीमित नहीं रही। इसने पूरे प्रदेश में चर्चा छेड़ दी है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, डी. राजा, संजय राउत जैसे वरिष्ठ नेताओं की मौजूदगी ने इसे राष्ट्रीय स्वरूप दिया। समाजवादी पार्टी के अखिलेश यादव और डीएमके नेता एम.के. स्टालिन भी समर्थन दे चुके हैं।

बिहार में चुनावी जंग का बड़ा मुद्दा मतदाता सूची और चुनाव आयोग की भूमिका बन गया है। विशेष सघन पुनरीक्षण (SIR) में 65 लाख नाम काटे जाने पर विपक्ष हमलावर है। आरोप है कि यह कटौती खास समुदायों को निशाना बनाकर की गई। सुप्रीम कोर्ट में भी यह मामला गरमाया हुआ है। आम मतदाता समझ रहा है कि उसकी आवाज और उसका वोट लोकतंत्र की नींव है।

महागठबंधन की इस सक्रियता ने कांग्रेस और राहुल गांधी की साख को बढ़ाया है। पहले जिन पर संदेह था, अब उन पर भरोसा लौटता दिख रहा है। तेजस्वी यादव भी अपनी भूमिका को लेकर अधिक परिपक्व नजर आ रहे हैं। विपक्ष के भीतर यह समझ बन रही है कि अकेले लड़कर सत्ता पक्ष का सामना करना संभव नहीं है।

दूसरी ओर, सत्ता पक्ष पर दबाव साफ झलक रहा है। भाजपा अब भी अपने मजबूत संगठन और कैडर पर भरोसा करती है, जो हर बूथ पर सक्रिय है। लेकिन जनमत का रुझान बदलने की आशंका उन्हें परेशान कर रही है। जदयू की साख भी कमजोर होती दिख रही है।

चुनाव मैदान में चिराग पासवान की पार्टी और प्रशांत किशोर की कोशिशें भी मौजूद हैं। दोनों सत्ता पक्ष से वोट काटकर अप्रत्यक्ष सहयोग कर सकते हैं, पर सरकार बनाने की स्थिति में नहीं दिखते। बिहार का चुनाव अब महज सीटों की गणना से अधिक लोकतांत्रिक मूल्यों की लड़ाई बनता जा रहा है। वोटर अधिकार यात्रा ने राज्य की राजनीति को नई ऊर्जा दी है। परिणाम क्या होगा, कहना कठिन है, पर इतना तय है कि इस बार मुकाबला कड़ा होगा और बिहार की जनता की किस्मत का फैसला दिलचस्प होगा।

■■ प्रो. शिवाजी सरकार

मैं फिर से खेलना चाहता हूं : ग़ाज़ा का एक बच्चा, लाखों बच्चों की आवाज़

मेरे प्यारे देशवासियों,

फ़िलिस्तीनी पासपोर्ट रखने वाले आज़ाद होकर बोल नहीं सकते। वे इस सम्मेलन तक पहुँच नहीं सकते। उनकी आवाज़ नहीं सुनी जाती। मैं यह सब कह रहा हूँ, इस उम्मीद में कि मेरी आवाज़ आप तक पहुँचेगी, भले ही हमें बहुत समय से कोई सुन नहीं रहा।

माननीय अध्यक्ष, आदरणीय प्रतिनिधिगण,

आप स्त्री हैं, इसलिए आप जानती हैं कि किसी माँ का दिल कैसा टूटता है जब उसके बच्चे बमों से घायल होते हैं या मर जाते हैं।

मेरा नाम मायने नहीं रखता। बस इतना जान लें कि मैं ग़ाज़ा का एक बच्चा हूँ।

एक बच्चा, भूखा और उजड़ा हुआ, नंगे पाँव रोज़ाना रोटी, पानी और सुरक्षा की तलाश में भागता हुआ। यह सिलसिला किसी एक दिन या एक महीने का नहीं, बल्कि दो वर्षों से लगातार चल रहा है।

मैं बोल रहा हूँ क्योंकि कवि रफ़ात अलअरीर, जिन्हें मार दिया गया, लिख गए थे- 'अगर मुझे मरना पड़े तो तुम ज़रूर जीना...ताकि मेरी कहानी सुना सको।'

मैं सिर्फ अपनी कहानी नहीं कह रहा, बल्कि उन हज़ारों बच्चों की ओर से बोल रहा हूँ, जिनकी आवाज़ें उनके बड़े होने से पहले ही ख़ामोश कर दी गईं।

मैंने वो सब खो दिया जो हर बच्चे का हक़ होता है।

कक्षा में पेंसिल की खुरच-खुरच की आवाज़, दोस्तों के साथ खेलना, माँ की लोरियाँ, पिता का पढ़ाई कराना, यहाँ तक कि मोबाइल पर समय ज़्यादा देने पर डाँट खाना-सब छिन गया। अब मेरी दुनिया सिर्फ बारूद की गंध और जले हुए मांस की बदबू है। अब मैं दोस्तों को मलबे के नीचे से लाश बनकर निकलते देखता हूँ।

अब आकाश से भोजन नहीं, बम और गोलियाँ बरसती हैं।

समंदर सामने है, मगर पीने को एक घूँट पानी भी नहीं।

ग़ाज़ा में हर सुबह यह डर लेकर होती है कि आज शायद आखिरी दिन हो।

मेरे दोस्तों से मिलिए।

दस साल की दाना रातों में बमबारी के सपनों से चीखकर उठ जाती है।

सात साल की जना अय्यद, जिसका वज़न सिर्फ 9 किलो रह गया है, अस्पताल में पड़ी है। कभी सबसे तेज़ दौड़ती थी, आज खड़ी तक नहीं हो सकती।

मेरी प्यारी दोस्त समीरा मलबे से मिली टूटी गुड़िया को सीने से लगाए चुप बैठी रहती है। जब मैंने उससे पूछा कि वह क्या चाहती है, तो उसने धीरे से कहा- 'मैं बस फिर से खेलना चाहती हूँ।'

और मेरी छह साल की दोस्त हिंद रजाब, जिसने फोन पर रोते हुए कहा था- 'मैं बहुत डर रही हूँ। कोई आकर मुझे ले जाए।' तीन घंटे बाद जब मदद पहुँची, हिंद नहीं रही। उसकी चीखें अब भी मेरे कानों में गूंजती हैं।

अस्पतालों में बच्चे बिना दवा, बिना बिजली, बिना बेहोशी की दवा के ऑपरेशन झेलते हैं। बहुत-सी मौतें इसलिए होती हैं कि खून, एंटीबायोटिक्स और साधारण दवाएँ तक नहीं मिलतीं। डॉक्टर कैद हैं, पत्रकार मारे जा रहे हैं, संयुक्त राष्ट्र के कर्मचारी भी मारे गए।

आज ग़ाज़ा में 6,25,000 बच्चों की पढ़ाई छिन चुकी है। स्कूल खंडहर बन गए हैं। एक पूरी पीढ़ी का भविष्य दफ्न हो रहा है।

लेकिन हम टूटे नहीं हैं। फ़दवा तौक़ान की कविता की तरह-

'एक पेड़ रो रहा था... फिर भी खड़ा रहा, हरा-भरा, गर्वीला और ज़िंदा।'

हम भी वैसे ही हैं- घायल, भूखे, मगर ज़िंदा।

माननीय प्रतिनिधिगण,

मैं यहाँ राजनीति की नहीं, इंसानियत की बात करने आया हूँ।

हम आंकड़े नहीं, बच्चे हैं। हमें सपने देखने, पढ़ने और जीने का अधिकार चाहिए।

मैं आपसे निवेदन करता हूँ-

अपने प्रस्तावों को अमल में बदल दीजिए।

अपने वादों को हमारी सुरक्षा में बदल दीजिए।

हमें, ग़ाज़ा के बच्चों को, भविष्य का अधिकार दीजिए।

अंत में, मैं मिर्ज़ा ग़ालिब की पंक्तियों से समाप्त करना चाहता हूँ-

'हम ने माना कि तग़ाफ़ुल न करोगे लेकिन, ख़ाक हो जाएँगे हम, तुम को ख़बर होने तक।'

रेहान अंसारी

धर्मनिरपेक्षता पर न्यायपालिका की चूकें आलोचना के घेरे में

हाल ही में आयोजित एक स्मृति व्याख्यान में, जिसका विषय था 'धर्मनिरपेक्षता और न्यायपालिका- एक असहज रिश्ता,' ओडिशा उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति एस. मुरलीधर ने भारत की धर्मनिरपेक्ष संरचना को बनाए रखने में न्यायपालिका के मिले-जुले रेकॉर्ड पर गंभीर चिंतन किया और कई ऐतिहासिक निर्णयों तथा संस्थागत विफलताओं की तीखी आलोचना की।

उन्होंने धर्मनिरपेक्षता को संविधान द्वारा सभी धर्मों के प्रति समान सम्मान की गारंटी बताया। अपने बचपन के दिनों को याद करते हुए उन्होंने नागपट्टिनम की यात्राओं का उल्लेख किया, जहाँ मंदिर, दरगाह और चर्च साथ-साथ अस्तित्व में हैं। उन्होंने इस सह-अस्तित्व को भारत की 'साझा संस्कृति' करार दिया।

व्याख्यान का अधिकांश हिस्सा बाबरी मस्जिद प्रकरण पर केंद्रित रहा। न्यायमूर्ति मुरलीधर ने 1885 में फैज़ाबाद अदालत की उस चेतावनी से घटनाक्रम को जोड़ा जिसमें हिंसा की आशंका जताई गई थी और फिर 1992 में मस्जिद ढहाए जाने तक की पूरी प्रक्रिया को रेखांकित किया। उन्होंने सर्वोच्च न्यायालय के 2019 के अयोध्या फैसले की आलोचना की। उनका कहना था कि अदालत ने यह स्वीकार करने के बावजूद कि मस्जिद का ढहाया जाना अवैध था, भूमि मंदिर ट्रस्ट को सौंप दी। इसे उन्होंने न्यायिक अतिक्रमण (Judicial Overreach) करार दिया।

उन्होंने जवाबदेही की कमी की ओर भी ध्यान दिलाया और कहा कि वे राजनेता जिन्होंने मस्जिद की रक्षा का वादा किया था, उन्हें कोई दंड नहीं मिला। आपराधिक मुकदमों में पर्याप्त साक्ष्य होने के बावजूद सभी आरोपी बरी हो गए। इसे उन्होंने 'संस्थागत विस्मृति' और 'दण्डमुक्ति का आदर्श उदाहरण' कहा।

वर्तमान चुनौतियों की चर्चा करते हुए उन्होंने 1991 के पूजा स्थल अधिनियम को सौहार्द बनाए रखने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बताया, लेकिन साथ ही वाराणसी और मथुरा में बढ़ते मुकदमों के प्रति चेताया। उन्होंने हिजाब मामले का भी उल्लेख किया और कहा कि भारतीय धर्मनिरपेक्षता का मूल स्वरूप समायोजन है, बहिष्कार नहीं।

न्यायमूर्ति मुरलीधर ने न्यायिक व्याख्या में निरंतरता की आवश्यकता पर ज़ोर देते हुए कहा कि संविधान के तहत धर्मनिरपेक्षता किसी भी तरह से समझौते योग्य नहीं है।

सोशल मीडिया से

आसान बहाना है मुद्रास्फीति

मेरे पिता की शादी उडुपी में हुई थी। केवल वे, मेरी माँ और कुछ करीबी रिश्तेदार।

- पूरी शादी का खर्चा था सिर्फ 15 रुपया।
- मेरी शादी पर 25,000 रुपया खर्च हुए।
- मेरे बच्चे की शादी पर 30 लाख रुपया।

और फिर हम पूछते हैं : हमारे दादा-दादी क्यों 30 साल की उम्र तक घर खरीद लेते थे, भाई-बहनों की शादी करा देते थे, परिवार पाल लेते थे... जबकि हम 50 की उम्र में भी एक फ्लैट खरीदने के लिए जूझते हैं?

आसान बहाना है मुद्रास्फीति (Inflation)।

- ईमानदार जवाब है- भोगवादी संस्कृति (Consumption)।
- उनकी शादी में खर्च होता था एक साड़ी, एक धोती, कुछ लड्डू और दो तोला सोना।
- हमारी शादी में लाखों खर्च होते हैं- सजावट, प्री-वेडिंग फोटोशूट और दूसरों से बेहतर दिखने की दौड़ में।
- उनके स्कूल मुफ्त या सरकार द्वारा सब्सिडी वाले थे। सालाना 20-100 रुपया।
- हमारे ज़माने में 1,000 रुपया तक।
- आज 2.5 लाख रुपया सालाना फीस 'सामान्य' मानी जाती है।
- वे घर बनाते थे सिर्फ रहने के लिए।
- हम घर बनाते हैं- पूल, क्लब हाउस और जिम के साथ, जिन्हें हम इस्तेमाल भी नहीं करते।

वे घर पर खाना खाते थे।

- हम महीने का 10,000 रुपया बाहर खाने पर खर्च कर देते हैं।

सबसे अहम बातः

- भौतिक संस्कृति ने तुलना पैदा की।
- तुलना ने प्रतियोगिता पैदा की।
- प्रतियोगिता ने महत्वाकांक्षा को हवा दी।
- महत्वाकांक्षा ने उपभोग बढ़ाया।
- उपभोग ने हमें कर्ज़ के जाल में फंसा दिया।
- विज्ञापन हमें वो चीज़ें बेचकर अरबों कमाता है जिनकी हमें ज़रूरत नहीं।
- वित्तीय कंपनियाँ हमें वो चीज़ें उधार देकर बेचती हैं जिन्हें हम खरीदने में सक्षम नहीं।
- और हम गर्व से उसे 'लाइफस्टाइल' कहते हैं।
- यह कहानी सिर्फ भारत की नहीं है।

अमेरिका को देखिए :

- दुनिया का सबसे अमीर देश। 80,000 प्रति व्यक्ति आय। वहाँ एक प्लम्बर भारत के सीईओ से ज्यादा कमाता है।
- फिर भी 60% लोग महीने की सैलरी से अगली सैलरी तक किसी तरह गुज़ारा करते हैं।
- क्योंकि वे भूखे नहीं हैं।
- बल्कि इसलिए कि उन्होंने अपनी खपत (Consumption) को आय से कहीं तेज़ बढ़ा लिया।
- और हमने-भारतीय मध्यम वर्ग ने- उस मॉडल को गर्व से कॉपी कर लिया।

सच्चाई बहुत सीधी है :

- हमारे दादा-दादी ने कमी और गरिमा के साथ जीवन जिया।
- हम जी रहे हैं अधिकता और कर्ज़ के साथ।
- उन्होंने हमें संपत्ति दी, बिना सेल्फ़ी के।
- हम छोड़ जाएंगे सेल्फ़ियाँ, बिना संपत्ति के।
- हमें मुद्रास्फीति ने नहीं मारा।
- हमें महत्वाकांक्षा ने मारा।
- विज्ञापनों ने इसे गढ़ा।
- वित्तीय तंत्र ने इसे बेचा।
- और हमने इसे खरीदा-गर्व से, प्रतियोगिता में, बिना रुके।

सबसे महंगा व्यापार युद्ध : भारत को एक तीखी स्वदेशी प्रतिक्रिया की आवश्यकता क्यों?

प्रो. शिवाजी सरकार

जब अमेरिकी वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट ने हाल ही में भारत-अमेरिका संबंधों को 'बहुत जटिल और रूसी तेल के मुद्दे पर नहीं' बताया, तो उन्होंने एक स्पष्ट संकेत दिया। यह पेट्रोलियम के बारे में नहीं है। यह अपने कृषि, डेयरी और अन्य संवेदनशील बाजारों को खोलने से इनकार करने वाले भारत को दंडित करने के बारे में है। वाशिंगटन का संदेश स्पष्ट है- अनुपालन या परिणाम। और इसके परिणाम अतिरिक्त 25 प्रतिशत टैरिफ के रूप में सामने आए हैं- मौजूदा बोझ को दोगुना करके 50 प्रतिशत कर दिया है।

नियंत्रण, तेल नहीं : नए टैरिफ रूसी तेल के बारे में नहीं हैं। ये दुनिया के सबसे अधिक आबादी वाले देश और उसके सबसे तेज़ी से बढ़ते उपभोक्ता बाज़ारों में से एक को अनुशासित करने के बारे में हैं। बेसेंट का यह दावा कि अमेरिका को 'यूरोपीय साझेदारों का पूरा समर्थन' प्राप्त है, यूरोपीय संघ के साथ भारत की चल रही मुक्त व्यापार वार्ता के लिए स्थिति को और बदतर बना देता है, जहां ब्रुसेल्स अमेरिकी दबाव में झुक सकता है।

अमेरिका की मानसिकता समझौता करने को तैयार नहीं है। पूर्ण अनुपालन के अलावा कुछ भी काम नहीं आएगा। भारत से एक दास-भक्त साझेदार की तरह व्यवहार करने की अपेक्षा की जाती है। इतिहास हमें कुछ भयावह उदाहरण देता है- लैटिन अमेरिका में अमेरिकी चालाकी, 1971 के बांग्लादेश युद्ध के दौरान और उसके बाद भारत के विरुद्ध हेनरी किसिंजर की साज़िशें, और दक्षिण एशिया में दुष्ट शासनों को वाशिंगटन का समर्थन। आज, वही दबाव फिर से उभर रहे हैं, इस बार भारतीय अर्थव्यवस्था पर।

बेसेंट की यह चेतावनी कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप 'अगर भारत टैरिफ पर पीछे नहीं हटता, तो वे भी पीछे नहीं हटेंगे', इस सख्त रुख को और पुख्ता करती है। ट्रंप भले ही चुप रहें, लेकिन उनके अधिकारी भारत को बदनाम करना जारी रखे हुए हैं। यह दबाव टैरिफ से आगे भी बढ़ गया है, जहां अमेरिका ने यात्रा, व्यापार और छात्र वीज़ा पर सख्ती की है- और आरोप लगाया है कि भारत इनका सबसे ज़्यादा दुरुपयोग करता है।

बाजार में उथल-पुथल : 50 प्रतिशत शुल्क से भारत के अमेरिका को होने वाले 70 प्रतिशत निर्यात पर असर पड़ेगा, जिससे वार्षिक बिक्री 87.3 अरब डॉलर से घटकर अनुमानित 49.6 अरब डॉलर रह जाएगी।

इसका झटका तिरुपुर, नोएडा और सूरत स्थित संयंत्रों के बंद होने से लग रहा है। निर्यात कीमतों में 35 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जिससे भारत के सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 0.5 प्रतिशत की कमी आई है। फिर भी, रूसी तेल का दुनिया का सबसे बड़ा खरीदार चीन, ऐसे शुल्कों से अछूता है- यह इस बात का प्रमाण है कि वाशिंगटन की असली चिंता मास्को नहीं, बल्कि नई दिल्ली है।

सेंसेक्स पहले ही केवल तीन दिनों में 1,828 अंक गिर चुका है, जिससे निवेशकों की 7 लाख करोड़ रुपये की संपत्ति स्वाहा हो गई है। दो महीनों में, बाजार का घाटा 15 लाख करोड़ रुपये को पार कर गया है। भारत के इलेक्ट्रॉनिक्स और इंजीनियरिंग की ओर धीरे-धीरे रुख करने के बावजूद, कपड़ा, हथकरघा, रत्न एवं आभूषण, चमड़ा और समुद्री उत्पाद जैसे निर्यात-उन्मुख क्षेत्र नुकसान में हैं।

विडंबना यह है कि 2008 के बहुचर्चित भारत-अमेरिका परमाणु समझौते के बावजूद, भारत जेटप्रणोदन, धातु विज्ञान या परमाणु प्रणालियों जैसे क्षेत्रों में कभी भी महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकी हस्तांतरण हासिल नहीं कर पाया है। आज भी, अमेरिका अपने बाजारों में भारतीय निर्मित कारों के प्रवेश पर रोक लगाता है, जबकि भारत दक्षिण अफ्रीका, मेक्सिको, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, चिली, जापान और यूरोप के कुछ हिस्सों में सफलतापूर्वक निर्यात करता है।

स्वदेशी की ओर : सरकार ने स्वदेशी को नए सिरे से बढ़ावा दिया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 26 अगस्त, 2025 को भारतीयों से 'वोकलफॉर लोकल' बनने और भारतीय सामान खरीदने का आग्रह किया। उन्होंने कहा, 'स्थानीय स्तर पर उत्पादित कोई भी चीज नई स्वदेशी है।' भारत और अमेरिका मार्च से द्विपक्षीय व्यापार समझौते पर बातचीत कर रहे हैं, जिसके पांच दौर पूरे हो चुके हैं, लेकिन वाशिंगटन ने अब आगे की बातचीत स्थगित कर दी है।

इस बीच, भारत लगभग 60 अरब डॉलर मूल्य के निर्यात को अमेरिका की ओर मोड़ने की कोशिश कर रहा है। इसके लक्षित बाजारों में यूरोप, जापान, कोरिया और

ऑस्ट्रेलिया शामिल हैं। लेकिन सफलता के लिए सिर्फ़ बयानबाज़ी से ज़्यादा की ज़रूरत है–इसके लिए दीर्घकालिक आपूर्ति श्रृंखलाओं का निर्माण, गैर–शुल्क बाधाओं को दूर करना और खरीदार नेटवर्क को मजबूत करना जरूरी है।

अब तक, भारत ने आसियान, ईएफटीए समूह, संयुक्त अरब अमीरात और ऑस्ट्रेलिया सहित 13 मुक्त व्यापार समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं। यूरोपीय संघ के साथ बातचीत जारी है। फिर भी, अमेरिका के अलग–अलग टैरिफ वियतनाम, बांग्लादेश, चीन और तुर्की जैसे प्रतिस्पर्धियों को अनुचित लाभ देते हैं, जिन पर शुल्क कम लगता है। भारत को समुद्री उत्पादों, वस्त्र और चमड़े के क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण ज़मीन खोने का खतरा है। इन बाज़ारों को वापस जीतना, उन्हें खोने से कहीं ज़्यादा कठिन होगा।

इसके विपरीत, ब्रिटेन का मुक्त व्यापार समझौता (FTA) ज्यादा उत्साहजनक है, क्योंकि लंदन ने भारतीय निर्यात के 99 प्रतिशत पर शुल्क हटाने पर सहमति जताई है। इससे भारतीय निर्माताओं को दुर्लभ अधिशेष लाभ मिल सकता है, जिसे अमेरिका नकारने पर अड़ा है।

घरेलू नतीजे : जमीनी स्तर पर इसके परिणाम गंभीर हैं। कपड़ा इकाइयां नए ऑर्डर रोक रही हैं, जबकि चमड़ा मजदूर, रत्न–काटने वाले और झींगा प्रसंस्करणकर्ताओं को छंटनी और वेतन में कटौती का सामना करना पड़ रहा है। सबसे ज्यादा प्रभावित निर्यात से जुड़ी कम वेतन वाली नौकरियों में काम करने वाले गरीब मज़दूर हैं। अच्छे मानसून के कारण ग्रामीण मांग स्थिर बनी हुई है, लेकिन शहरी निर्यात–उन्मुख उद्योगों में तीव्र मंदी का सामना करना पड़ रहा है।

रणनीति पर पुनर्विचार-बैटरी से डीजल तक : भारत की असली चुनौती सिर्फ अमेरिकी टैरिफ़ से बचना नहीं है, बल्कि अपनी आर्थिक रणनीति पर पुनर्विचार करना भी है। विदेशी ब्रांडों पर अंध निर्भरता, स्वदेशी वैश्विक खिलाड़ियों की अनुपस्थिति और अस्थिर निर्यात बाज़ारों पर निर्भरता ने अर्थव्यवस्था को कमज़ोर बना दिया है।

एक सबक ब्रांड निर्माण का है। मारुति एक समय भारत की सफलता की कहानी हुआ करती थी, लेकिन दूरदर्शिता की कमी के कारण सुजुकी ने भारत की हिस्सेदारी कम करके ब्रांड को निगल लिया। आज, भारत को स्थिर नीतिगत समर्थन के साथ नए घरेलू ब्रांड बनाने होंगे।

बैटरी चालित कारों की ओर बढ़ना, जिनसे अमेरिका भी पीछे हट रहा है, शायद समाधान न हो। बैटरियां महत्वपूर्ण खनिजों के आयात पर नई निर्भरताएं पैदा करती हैं, जिससे भारत एक और असुरक्षित चक्र में फंस जाता है। एक ज़्यादा व्यावहारिक तरीका यह हो सकता है कि आईसीई इंजन वाले वाहनों, खासकर डीज़ल, को मज़बूत किया जाए, जिनका भारत पहले से ही यूरोप को निर्यात करता है। डीज़ल इथेनॉल से सस्ता और ज़्यादा विश्वसनीय है, और थोड़ी सी कल्पनाशीलता से इसे पूरे दक्षिण एशिया में प्रतिस्पर्धी कीमतों पर बेचा जा सकता है।

आगे का रास्ता : बेसेंट भले ही अपने शब्दों को नरम करने की कोशिश करें, यह आश्वासन देकर कि 'आखिरकार, हम एक साथ आएंगे।' लेकिन तात्कालिक वास्तविकता कठोर है। भारत ऐसे टैरिफ का सामना कर रहा है जो आने वाले वर्षों में उसके व्यापार की गतिशीलता को नए सिरे से परिभाषित कर सकते हैं।

आगे का रास्ता और अधिक स्पष्ट स्वदेशी नीतियों में निहित है– केवल नारों के रूप में नहीं, बल्कि रणनीतियों के रूप में–

- मजबूत घरेलू ब्रांड का निर्माण।
- निर्यात बाजारों में आक्रामक तरीके से विविधता लाना।
- स्थिर नीतियों के साथ स्थानीय उद्योगों को समर्थन देना।
- लचीली आपूर्ति श्रृंखलाओं में निवेश करना।
- आयातित प्रवृत्तियों का पीछा करने के बजाय स्वदेशी प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देना।

भारत पहले भी ऐसे दबावों का सामना कर चुका है और उनसे उबर चुका है। लेकिन मौजूदा व्यापार युद्ध अब तक का सबसे महंगा साबित हो सकता है। परीक्षा इस बात की होगी कि क्या भारत इस संकट को सच्ची आर्थिक आत्मनिर्भरता के अवसर में बदल पाता है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार और मीडिया कार्यकर्ता व वित्तीय रिपोर्टिंग के विशेषज्ञ हैं)

♦ ♦

अमेरिका की मानसिकता समझौता करने को तैयार नहीं है। पूर्ण अनुपालन के अलावा कुछ भी काम नहीं आएगा। भारत से एक दास-भक्त साझेदार की तरह व्यवहार करने की अपेक्षा की जाती है। इतिहास हमें कुछ भयावह उदाहरण देता है- लैटिन अमेरिका में अमेरिकी चालाकी, 1971 के बांग्लादेश युद्ध के दौरान और उसके बाद भारत के विरुद्ध हेनरी किसिंजर की साजिशें, और दक्षिण एशिया में दुष्ट शासनों को वाशिंगटन का समर्थन। आज, वही दबाव फिर से उभर रहे हैं, इस बार भारतीय अर्थव्यवस्था पर। बेसेंट की यह चेतावनी कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप 'अगर भारत टैरिफ पर पीछे नहीं हटता, तो वे भी पीछे नहीं हटेंगे', इस सख्त रुख को और पुख्ता करती है। ट्रंप भले ही चुप रहें, लेकिन उनके अधिकारी भारत को बदनाम करना जारी रखे हुए हैं। यह दबाव टैरिफ से आगे भी बढ़ गया है, जहां अमेरिका ने यात्रा, व्यापार और छात्र वीज़ा पर सख्ती की है- और आरोप लगाया है कि भारत इनका सबसे ज़्यादा दुरुपयोग करता है। 50 प्रतिशत शुल्क से भारत के अमेरिका को होने वाले 70 प्रतिशत निर्यात पर असर पड़ेगा, जिससे वार्षिक बिक्री 87.3 अरब डॉलर से घटकर अनुमानित 49.6 अरब डॉलर रह जाएगी। इसका झटका तिरुपुर, नोएडा और सूरत स्थित संयंत्रों के बंद होने से लग रहा है। निर्यात कीमतों में 35 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जिससे भारत के सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 0.5 प्रतिशत की कमी आई है।

♦ ♦

ट्रंप की H-1 B नीति और भारतवासियों को व्यवसाय की चुनौती

स्थिति काफी जटिल है। स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ईपीएफ प्रोत्साहन के माध्यम से एक लाख करोड़ के रोजगार सृजन कार्यक्रम की घोषणा की। यह स्वागतयोग्य कदम है- लेकिन डोनाल्ड ट्रंप के नेतृत्व में H-1B वीज़ा पर हमले का विकल्प नहीं है। इसके लिए नए और अलग तरह के समाधान की आवश्यकता होगी।

यह एक स्वदेशी तरीका हो सकता है, मगर इसमें अधिक नवाचार चाहिए। ध्यान उद्योगों के पुनरोद्धार, उचित वेतन नीतियों और दीर्घकालिक रोजगार पर होना चाहिए। भारत को ऐसा तंत्र विकसित करना होगा जो पर्याप्त गुणवत्तापूर्ण नौकरियां पैदा कर सके और अमेरिका के वीज़ा संबंधी दबाव का सामना कर सके।

H-1B बहस अब खासतौर पर कम वेतन वाली नौकरियों पर केंद्रित है। उच्च कौशल वाले और ऊँचे वेतन स्तर (लेवल 3 और 4) के आवेदकों को अभी भी बेहतर सौदे मिल सकते

प्रो. शिवाजी सरकार

हैं, लेकिन अमेरिकी कंपनियों की भारतीयों को कम वेतन पर नियुक्त करने की प्रवृत्ति ने राजनीतिक प्रतिक्रिया को जन्म दिया है। वर्षों से शिकायतें बढ़ती रही हैं और कोई भी अमेरिकी राष्ट्रपति-ट्रंप हों या कोई और-ऐसा ही कदम उठा सकता था।

भारत को ऐसी स्थितियां भी बनानी होंगी जिससे IIT जैसे संस्थानों से निकला शीर्ष प्रतिभा, जिस पर करदाताओं का भारी खर्च होता है, विदेश भागने के बजाय देश में ही काम करे। एक IIT बी.टेक छात्र पर सरकार चार साल में 10-15 लाख रुपये खर्च करती है। 2024-25 में IIT बजट 9,660 करोड़ रुपये है। इसके बावजूद 30-36% IIT स्नातक हर साल विदेश चले जाते हैं, और जो देश में रहते हैं, उनमें से लगभग 70% गूगल, अमेज़न, माइक्रोसॉफ्ट, मैकिंज़ी जैसी विदेशी कंपनियों के लिए काम करते हैं।

H-vB वीज़ा धारकों में भारतीयों का दबदबा है-72% भारतीयों को मिलता है, जबकि 12% चीनी नागरिकों को। इनमें से अधिकतर STEM क्षेत्रों—डेटा साइंस, AI, मशीन लर्निंग और साइबर सुरक्षा-में कार्यरत हैं, जिनमें से 65% कंप्यूटर संबंधी नौकरियों में हैं। उनकी औसत वार्षिक आय लगभग 1.01 करोड़ होती है।

लेकिन वीज़ा जैसी समस्याएं केवल अमेरिका तक सीमित नहीं हैं। ब्रिटेन ने भी नौकरियों पर रोक लगा दी है जब तक कि भारत के साथ मुक्त व्यापार समझौता नहीं होता।

भारत को प्रतिभा को रोकने के लिए ज़बरदस्ती या नए कानून नहीं, बल्कि बेहतर नौकरी परिस्थितियां बनानी होंगी। इन्फोसिस के नारायण मूर्ति द्वारा सुझाए गए 70 घंटे साप्ताहिक कार्य या एलएंडटी के

चेयरमैन एस.एन. सुब्रमण्यम द्वारा 90 घंटे के सप्ताह का सुझाव भारतीय तकनीकी पेशेवरों के साथ गंभीर अन्याय है। देश को 48 घंटे का सप्ताह, 8 घंटे का कार्य दिवस बहाल करना चाहिए, न कि औद्योगिक विवाद अधिनियम के तहत अमल में लाई गई 12 घंटे की पाली को लागू करना। ऐसी कठोर नीतियां ब्रेन-ड्रेन को बढ़ावा देंगी और भारतीय श्रमिकों की विश्व स्तर पर छवि खराब करेंगी।

क्या भारत H-vB अस्वीकृति दर की समस्या हल कर सकता है? ट्रंप कार्यकाल में यह दर चरम पर थी, हालांकि हाल के वर्षों में इसमें गिरावट आई है। 2024 में शुरुआती H-vB आवेदनों की अस्वीकृति दर घटकर 2.5% रही, जो 2023 में 3.5% और 2022 में 2.2% थी। मगर ट्रंप की वापसी पर अधिक कठोर नीतियां इसे फिर बढ़ा सकती हैं। अब पारंपरिक लॉटरी प्रणाली को वेतन-आधारित चयन प्रणाली से बदला जा रहा है। इसका अर्थ है कि लेवल एक यानी शुरुआती नौकरी चाहने वाले- चाहे अमेरिकी विश्वविद्यालयों से पढ़े हों- वीज़ा से वंचित हो सकते हैं। इससे अधिकतर स्टार्ट-अप्स और नए स्नातक प्रभावित होंगे।

प्रणालीगत पक्षपात : अमेरिकी समान अवसर रोजगार आयोग (EEOC) ने उन नियुक्ति प्रथाओं के खिलाफ चेतावनी दी है जो प्रवासी श्रमिकों को अनुचित प्राथमिकता देती हैं, जिसे 'राष्ट्रीय मूल के आधार पर भेदभाव' माना जा सकता है। टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (TCS) पर ऐसे ही आरोप लगे, जिसमें अमेरिकी पेशेवरों ने शिकायत की कि उन्हें कम वेतन वाले भारतीय H-vB कर्मचारियों से प्रतिस्थापित कर दिया गया। इसी तरह, कॉग्निज़ेंट पर भी भारतीयों को वरीयता देने और अन्य राष्ट्रीयताओं को दरकिनार करने के आरोप लगे। यह प्रवृत्ति अमेरिका में भारतीयों के प्रति आक्रोश बढ़ा रही है।

असुरक्षा और चिंता : कानूनी व नैतिक मुद्दों से परे, H-vB वीज़ा धारकों (तीन वर्ष की अवधि वाले) में नौकरी स्थिरता और आव्रजन अनिश्चितता को लेकर गहरी चिंता है। हालिया सर्वे में हर छह में से एक एनआरआई ने संभावित निर्वासन का डर जताया। अमेज़न, गूगल और माइक्रोसॉफ्ट जैसी कंपनियां अपने H-vB कर्मचारियों को अंतरराष्ट्रीय यात्रा से बचने की सलाह दे रही हैं। ग्रीन कार्ड में भारी बैकलॉग ने तनाव और बढ़ा दिया है।

क्या H-vB वाकई 'सस्ता श्रम' है : भले ही आम धारणा 'सस्ते श्रमिकों' की है, लेकिन आंकड़े अलग कहानी कहते हैं। भारतीय H-vB पेशेवरों का औसत वार्षिक वेतन लगभग 1.32 लाख डॉलर है। कुछ इंजीनियरिंग क्षेत्रों में तो वे अमेरिकी मूल के साथियों से भी अधिक कमाते हैं। साथ ही, वीज़ा स्पॉन्सरशिप की लागत 35,000 से 50,000 डॉलर तक होती है।

H-vB वीज़ा का परिदृश्य कानूनी जांच, श्रमिकों की असुरक्षा और आर्थिक दांव-पेंच का जटिल युद्धक्षेत्र बन चुका है। भारत को अपने कुशल पेशेवरों की रक्षा करनी होगी और सुनिश्चित करना होगा कि उनका आकलन योग्यता के आधार पर हो, न कि मूल देश के आधार पर।

समाधान : भारत को ऐसा उद्योग और रोजगार वातावरण विकसित करना होगा जो मानवीय हो, श्रम कानूनों का पालन करे और सिर्फ मुनाफे तक सीमित न हो। बेहतर वेतन और नौकरी सुरक्षा सुनिश्चित करने वाले कानून चाहिए। जब भारतीय प्रतिभाओं को अपने ही देश में सम्मान और अवसर मिलेंगे, तभी वे विश्व स्तर पर और अधिक मांग में होंगे।

(लेखक : वरिष्ठ पत्रकार हैं)

वीज़ा जैसी समस्याएं केवल अमेरिका तक सीमित नहीं हैं। ब्रिटेन ने भी नौकरियों पर रोक लगा दी है जब तक कि भारत के साथ मुक्त व्यापार समझौता नहीं होता। भारत को प्रतिभा को रोकने के लिए ज़बरदस्ती या नए कानून नहीं, बल्कि बेहतर नौकरी परिस्थितियां बनानी होंगी। इन्फोसिस के नारायण मूर्ति द्वारा सुझाए गए 70 घंटे साप्ताहिक कार्य या एलएंडटी के चेयरमैन एस.एन. सुब्रमण्यम द्वारा 90 घंटे के सप्ताह का सुझाव भारतीय तकनीकी पेशेवरों के साथ गंभीर अन्याय है। देश को 48 घंटे का सप्ताह, 8 घंटे का कार्य दिवस बहाल करना चाहिए, न कि औद्योगिक विवाद अधिनियम के तहत अमल में लाई गई 12 घंटे की पाली को लागू करना। ऐसी कठोर नीतियां ब्रेन-ड्रेन को बढ़ावा देंगी और भारतीय श्रमिकों की विश्व स्तर पर छवि खराब करेंगी। क्या भारत H-vB अस्वीकृति दर की समस्या हल कर सकता है? ट्रंप कार्यकाल में यह दर चरम पर थी, हालांकि हाल के वर्षों में इसमें गिरावट आई है। 2024 में शुरुआती H-vB आवेदनों की अस्वीकृति दर घटकर 2.5% रही, जो 2023 में 3.5% और 2022 में 2.2% थी। मगर ट्रंप की वापसी पर अधिक कठोर नीतियां इसे फिर बढ़ा सकती हैं। अब पारंपरिक लॉटरी प्रणाली को वेतन-आधारित चयन प्रणाली से बदला जा रहा है। इसका अर्थ है कि लेवल एक यानी शुरुआती नौकरी चाहने वाले- चाहे अमेरिकी विश्वविद्यालयों से पढ़े हों- वीज़ा से वंचित हो सकते हैं।

ट्रम्प की नीतियों पर भारतीय प्रवासियों में आपसी मतभेद

प्रभजोत सिंह

मूलत: ट्रम्प और मोदी की कहानी दो ढीठ, लोकलुभावन नेताओं की है, जो अहंकारी और सत्तावादी प्रवृत्ति के हैं, और वफ़ादारी के उस जाल की कहानी है जो दोनों को सत्ता में बनाए रखने में मदद करता है। और यह एक ऐसे अमेरिकी राष्ट्रपति की कहानी भी है जिसकी नज़र नोबेल पुरस्कार पर है, और जो भारतीय राजनीति के अचल तीसरे मोर्चे, यानी पाकिस्तान के साथ संघर्ष, से टकरा रहा है। द संडे न्यूयॉर्क टाइम्स ने हाल ही में अपने पहले पन्ने पर एक रिपोर्ट में लिखा।

यह लेख डोनाल्ड ट्रंप और नरेंद्र मोदी के बीच जटिल और अक्सर तनावपूर्ण संबंधों को दर्शाता है, एक ऐसी कहानी जिसने संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रवासी भारतीयों को गहराई से विभाजित कर दिया है। जहाँ कई प्रवासी भारतीय, आव्रजन, नशीली दवाओं और पिछली सरकारों के दौरान 'अव्यवस्थित' अमेरिका में व्यवस्था बहाल करने के उनके सख्त रुख के लिए ट्रंप का समर्थन करते हैं, वहीं कुछ अन्य उन पर मानवीय मूल्यों को कुचलने और उनके निर्देशों का पालन न करने वालों को दंडित करने का आरोप लगाते हैं।

प्रवासी समुदाय में विभाजन : न्यूयॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट, जिसका शीर्षक था 'ट्रंप और मोदी के बीच जबरदस्त विभाजन', ने नोबेल शांति पुरस्कार पाने की ट्रंप की महत्वाकांक्षाओं और दशकों पुराने भारत-पाकिस्तान संघर्ष को 'समाधान' करने के उनके बार-बार के दावों, दोनों को उजागर किया। हालांकि, मोदी ऐसे दावों पर भड़क गए और ट्रंप को याद दिलाया कि युद्धविराम पर नई दिल्ली और इस्लामाबाद के बीच वाशिंगटन की भागीदारी के बिना सीधे बातचीत हुई थी।

इस उपेक्षा और मोदी द्वारा ट्रंप की नोबेल पुरस्कार की आकांक्षाओं को नज़रअंदाज करने के कारण, संबंधों में खटास काफी बढ़ गई। यह गिरावट विवादास्पद व्यापार वार्ताओं की पृष्ठभूमि में आई, जो जल्द ही दंडात्मक शुल्कों के बोझ तले ध्वस्त हो गई।

टैरिफ और व्यापार युद्ध : जून में, अपनी आखिरी ठोस फ़ोन कॉल के कुछ हफ्ते बाद, ट्रंप ने भारत से आयात पर 25 प्रतिशत टैरिफ़ लगाकर उसे चौंका दिया। कुछ ही दिनों बाद, उन्होंने इस झटके को दोगुना कर दिया, रूसी तेल की भारतीय ख़रीद पर 25 प्रतिशत का और टैरिफ़ लगा दिया, जिससे कुल टैरिफ़ 50 प्रतिशत तक पहुंच गया।

इस अभूतपूर्व कदम ने भारत को ब्राज़ील की श्रेणी में ला दिया-एक और ऐसा देश जिसका नेतृत्व एक ऐसे नेता के हाथ में है जिसका ट्रंप से मतभेद हो गया था-जबकि पाकिस्तान पर केवल 19 प्रतिशत टैरिफ लगाया गया। इन दंडात्मक उपायों से भारत में आक्रोश फैल गया, जहाँ ट्रंप को 'पीठ में छुरा घोंपने वाला' करार दिया गया। महाराष्ट्र में, ट्रंप का एक विशाल पुतला सड़कों पर घुमाया गया और उस पर 'गुंडागर्दी' यानी सीधे-सीधे धमकाने का आरोप लगाया गया।

आव्रजन, वीज़ा और निर्वासन : टैरिफ से परे, ट्रंप के प्रवासी-विरोधी एजेंडे ने भारतीय हितों पर गहरा प्रहार किया। एच1-बी वीज़ा का सबसे बड़ा हिस्सा रखने वाले भारतीय पेशेवर, प्रतिबंधात्मक नीतियों का निशाना बन गए। छात्र वीज़ा पर उनके प्रशासन की सख्ती भारत के लिए एक और झटका थी, क्योंकि अमेरिका में हर चार में से एक अंतरराष्ट्रीय छात्र भारतीय है।

हालांकि, सबसे चौंकाने वाली घटना निर्वासन उड़ानों का आगमन था। बेड़ियों में जकड़े भारतीयों को अमृतसर और अन्य शहरों में हवाई जहाज से लाया गया, जो मोदी की वाशिंगटन यात्राओं के साथ ही हुआ। इस घटना ने घरेलू स्तर पर आक्रोश पैदा किया और मोदी के ट्रंप के साथ दोस्ती के बार-बार किए गए दावों को कमजोर कर दिया।

अहंकार की राजनीति : कभी मोदी-ट्रंप संबंधों की एक खासियत व्यक्तिगत केमिस्ट्री हुआ करती थी।

ट्रंप ने टेक्सास में भव्य 'हाउडी मोदी' रैली में शिरकत की और बाद में गुजरात में उतने ही शानदार 'नमस्ते ट्रंप' कार्यक्रम में उनकी मेज़बानी की गई, जहां एक लाख से ज़्यादा समर्थकों ने उनका स्वागत किया।

लेकिन जैसे-जैसे ट्रंप का दूसरा कार्यकाल आगे बढ़ा, विदेशी नेताओं के साथ उनके रिश्ते ज़्यादा लेन-देन वाले होते गए। कई लोगों ने उन्हें चापलूसी और तोहफ़ों से चलाना सीख लिया-चाहे ब्रिटेन के प्रधानमंत्री प्रिंस चार्ल्स का नोट लेकर पहुंचें, या यूक्रेन के वोलोडिमिरज़ेलेंस्की की सार्वजनिक रूप से प्रशंसा। हालांकि, मोदी ज़्यादा सतर्क हो गए और कनाडा में जी-7 शिखर सम्मेलन के बाद ट्रंप के वाशिंगटन आने के निमंत्रण को ठुकरा दिया, क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं उन्हें पाकिस्तान के सेना प्रमुख के साथ किसी असहज मुलाक़ात में न पड़ना पड़े।

एक रिश्ता जो मुक्त पतन की ओर अग्रसर है : 2025 के मध्य तक, मोदी-ट्रंप समीकरण ध्वस्त हो चुका था। 17 जून को एयरफ़ोर्स वन में 35 मिनट तक चली उनकी आखिरी फोन कॉल ने संबंधों को सुधारने का एक क्षणिक मौका दिया। लेकिन प्रगति के बजाय, इस कॉल ने मतभेदों को और बढ़ा दिया। मोदी ने वाशिंगटन में रुकने के ट्रंप के निमंत्रण को अस्वीकार कर दिया, जिससे अविश्वास और इस बात की स्वीकृति दोनों का संकेत मिला कि ट्रंप को भारत की संवेदनशीलताओं की ज़रा भी परवाह नहीं है।

कभी 'सच्चा दोस्त' रहे ट्रंप को अब दुश्मन समझा जाने लगा। ट्रंप ने क्वाड शिखर सम्मेलन के लिए अपनी भारत यात्रा रद्द कर दी। इस बीच, मोदी ने चीन के शीजिनपिंग और रूस के व्लादिमीर पुतिन के साथ संबंधों को मज़बूत करके भारत की स्थिति को मज़बूत करने की कोशिश की।

प्रवासी प्रतिक्रियाएं : प्रवासी भारतीयों के बीच, इन घटनाक्रमों ने मतभेदों को और गहरा कर दिया है। रूढ़िवादी अमेरिकी राजनीति से जुड़े लोग ट्रंप का बचाव एक ऐसे मज़बूत नेता के रूप में करते हैं जो भारत की क़ीमत पर भी, कड़े फ़ैसले लेने से नहीं डरते। उनका तर्क है कि अवैध आव्रजन और ड्रग्स पर उनकी कार्रवाई कई कानून-पालक प्रवासियों को प्रभावित करती है।

फिर भी, अमेरिका में भारतीयों का एक बड़ा वर्ग उनकी नीतियों को भेदभावपूर्ण और अपमानजनक मानता है। निर्वासन, छात्र वीज़ा प्रतिबंध और लक्षित शुल्कों को विश्वासघात के रूप में देखा जाता है जो मोदी की ट्रंप के साथ बहुचर्चित 'दोस्ती' के खोखलेपन को उजागर करते हैं।

आगे का रास्ता : कई पर्यवेक्षकों के लिए, मोदी-ट्रंप का मामला भू-राजनीति से कम और व्यक्तित्व से ज़्यादा जुड़ा है। दोनों ही नेता जनसभाओं, लोकलुभावन बयानबाज़ी और अपनी मज़बूत छवि के दम पर फले-फूले। लेकिन जब अहंकार टकराया-व्यापार को लेकर, नोबेल पुरस्कार की महत्वाकांक्षाओं को लेकर, पाकिस्तान को लेकर-तो रिश्ते टूट गए।

बीजिंग के प्रति मोदी की बढ़ती गर्मजोशी 'हिंदी-चीनी भाई-भाई' के पुनरुत्थान का संकेत है या ट्रंप को यह संदेश मात्र है कि 'भारत को इसकी परवाह नहीं है', इसकी व्याख्या स्वतंत्र है। यह स्पष्ट है कि प्रवासी समुदाय, जो कभी 'हाउडी मोदी-नमस्ते ट्रंप' की खुशमिजाजी को लेकर उत्साहित था, अब खुद को बिगड़ते रिश्तों के दुष्परिणामों से जूझता हुआ पा रहा है।

विदेश में रहने वाले भारतीयों के लिए, ट्रंप की नीतियां पहचान, वफ़ादारी और राजनीतिक पसंद की कसौटी बन गई हैं-परिवारों, समुदायों और पेशेवर नेटवर्क को विभाजित कर रही हैं। बहस सिर्फ ट्रंप या मोदी के बारे में नहीं है, बल्कि इस बारे में है कि भारत एक अप्रत्याशित दुनिया में खुद को कैसे स्थापित करता है जहाँ दोस्ती नाज़ुक है, और राष्ट्रीय हित अक्सर व्यक्तिगत अहंकार से टकराते हैं।

लेखक एक वरिष्ठ पत्रकार हैं और द ट्रिब्यून, चंडीगढ़ में लंबे समय तक कार्यरत रहे हैं। अब वह टारंटो कनाडा में रहते हैं)

■■■■

टैरिफ से परे, ट्रंप के प्रवासी-विरोधी एजेंडे ने भारतीय हितों पर गहरा प्रहार किया। एच1-बी वीज़ा का सबसे बड़ा हिस्सा रखने वाले भारतीय पेशेवर, प्रतिबंधात्मक नीतियों का निशाना बन गए। छात्र वीज़ा पर उनके प्रशासन की सख्ती भारत के लिए एक और झटका थी, क्योंकि अमेरिका में हर चार में से एक अंतरराष्ट्रीय छात्र भारतीय है।

सबसे चौंकाने वाली घटना निर्वासन उड़ानों का आगमन था। बेड़ियों में जकड़े भारतीयों को अमृतसर और अन्य शहरों में हवाई जहाज से लाया गया, जो मोदी की वाशिंगटन यात्राओं के साथ ही हुआ। इस घटना ने घरेलू स्तर पर आक्रोश पैदा किया और मोदी के ट्रंप के साथ दोस्ती के बार-बार किए गए दावों को कमजोर कर दिया।

अहंकार की राजनीति : कभी मोदी-ट्रंप संबंधों की एक खासियत व्यक्तिगत केमिस्ट्री हुआ करती थी। ट्रंप ने टेक्सास में भव्य 'हाउडी मोदी' रैली में शिरकत की और बाद में गुजरात में उतने ही शानदार 'नमस्ते ट्रंप' कार्यक्रम में उनकी मेज़बानी की गई, जहां एक लाख से ज़्यादा समर्थकों ने उनका स्वागत किया।

लेकिन जैसे-जैसे ट्रंप का दूसरा कार्यकाल आगे बढ़ा, विदेशी नेताओं के साथ उनके रिश्ते ज़्यादा लेन-देन वाले होते गए। कई लोगों ने उन्हें चापलूसी और तोहफ़ों से चलाना सीख लिया-चाहे ब्रिटेन के प्रधानमंत्री प्रिंस चार्ल्स का नोट लेकर पहुंचें, या यूक्रेन के वोलोडिमिरज़ेलेंस्की की सार्वजनिक रूप से प्रशंसा।

नेपाल में ओली सरकार की विदाई

■ डॉ. सतीश मिश्रा

नेपाल के प्रधानमत्रा क.पा. शमा ओली ने 9 सितम्बर 2025 को इस्तीफा दे दिया। यह इस्तीफा उस समय आया जब गहराई तक फैले भ्रष्टाचार के खिलाफ जेनरेशन-जेड (Gen Z) की अगुवाई में भारी-भरकम जनांदोलन सड़कों पर उतर आया। इस घटना की तुलना 2024 अगस्त में बांग्लादेश की स्थिति से की जा रही है, जब तत्कालीन प्रधानमंत्री शेख हसीना को देश छोड़कर भारत भागना पड़ा था। इससे पहले 2022 में श्रीलंका में जनआक्रोश ने गोतबाया राजपक्षे की सरकार को बाहर का रास्ता दिखा दिया था। इन तीनों लोकतांत्रिक सरकारों की विदाई में एक समानता यह भी रही कि नेपाल, बांग्लादेश और श्रीलंका में सेना और सुरक्षा बलों ने तटस्थता बरती और सत्ता हथियाने का कोई प्रयास नहीं किया।

ओली ने इस्तीफा तब दिया जब प्रदर्शनकारियों ने अनिश्चितकालीन कर्फ्यू की परवाह किए बिना पुलिस से भिड़ंत की। इससे एक दिन पहले सोशल मीडिया पर प्रतिबंध लगाए जाने से भड़की हिंसा में 19 लोग मारे गए थे। ओली के इस्तीफे के बाद संसद भंग कर दी गई। नेपाली सेना और अन्य सुरक्षा एजेंसियों के प्रमुखों ने एक संयुक्त अपील जारी कर प्रदर्शनकारियों से संयम बरतने और संवाद के जरिए संकट का समाधान निकालने की बात कही। 'व्यवस्था और स्थिरता बहाल करने का एकमात्र रास्ता शांतिपूर्ण संवाद है,' संयुक्त बयान में कहा गया। 'प्रधानमंत्री का इस्तीफा राष्ट्रपति द्वारा स्वीकार कर लिया गया है। अब हम सब से अपील करते हैं कि संयम रखें और जान-माल का और नुकसान न होने दें,' बयान में आगे कहा गया।

काठमांडू महानगरपालिका के मेयर बालेन शाह, जो स्वयं 'जैपर' हैं और सोशल मीडिया पर युवाओं के बीच बेहद लोकप्रिय हैं, ने लोगों से शांत रहने की अपील की। उनका बयान ओली के इस्तीफे की घोषणा के तुरंत बाद आया। शाह ने सोशल मीडिया पोस्ट में कहा-'हमने शुरू से स्पष्ट किया था कि यह पूरी तरह जेनरेशन-जेड का आंदोलन है। प्रिय युवाओं, आपके उत्पीड़क का इस्तीफा आ

चुका है। अब कृपया शांत रहें।' हालांकि सरकार ने 8 सितम्बर की रात ही सोशल मीडिया से प्रतिबंध हटा लिया था, लेकिन 19 लोगों की मौत के बाद प्रदर्शनकारियों ने ओली के इस्तीफे की मांग तेज कर दी और अंतत: वे प्रधानमंत्री कार्यालय में घुस गए। इन प्रदर्शनों ने राजनीतिक वर्ग के प्रति जनता के गुस्से को सामने ला दिया। गहरे और व्यापक भ्रष्टाचार ने जनता का विश्वास तोड़ा था। सोशल मीडिया पर बैन तो बस चिंगारी भर था, असल नाराज़गी वर्षों से पनप रहे भ्रष्टाचार को लेकर थी।

राष्ट्रपति पौडेल को दिए अपने इस्तीफे पत्र में ओली ने नेपाल के सामने 'असाधारण परिस्थितियों' का हवाला देते हुए कहा कि वे वर्तमान स्थिति के 'संवैधानिक और राजनीतिक समाधान' का रास्ता खोलने के लिए पद छोड़ रहे हैं। हालांकि सरकार ने सोशल मीडिया पर लगाया प्रतिबंध हटा लिया था, फिर भी युवाओं के नेतृत्व में आंदोलन भ्रष्टाचार के खिलाफ और 19 मौतों की जवाबदेही की मांग को लेकर जारी रहा।

श्रीलंका और बांग्लादेश में हुए आंदोलनों ने नेपाल के युवाओं को प्रेरणा दी। वहीं फिलीपींस में नेताओं के बच्चों की ऐशो-आराम की जिंदगी की तस्वीरें सोशल मीडिया पर वायरल हुई थीं। नेपाल में भी राजनेताओं के बच्चों की विलासितापूर्ण जीवनशैली के वीडियो टिक-टॉक पर सामने आए, जबकि यहां प्रति व्यक्ति आय केवल 1,300 डॉलर है। इससे भी युवाओं का गुस्सा भड़का।

प्रदर्शनकारियों का आक्रोश 'कर तो देना पड़ता है लेकिन उसका हिसाब नहीं मिलता' जैसी शिकायतों से उपजा। युवाओं को लगता था कि निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया में उन्हें दरकिनार किया जा रहा है। 'उनकी मांगों का मूल नियम-आधारित शासन है, जिसमें भाई-भतीजावाद और भ्रष्टाचार की जगह निष्पक्षता, जवाबदेही और न्याय हो।' स्कूल-कॉलेज के छात्र-छात्राओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया, कई तो अपनी वर्दी में ही सड़कों पर उतर आए। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, 'हैरानी की बात यह थी कि आंदोलन में किसी राजनीतिक दल का प्रभाव नहीं दिखा।'

इससे पहले प्रदर्शनकारियों ने ओली के निजी निवास (बालकोट) को आग के हवाले कर दिया था और पूर्व प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल, संचार मंत्री पृथ्वी सुब्बा गुरुड, पूर्व गृहमंत्री रमेश लेखख सहित कई नेताओं के घरों पर हमला किया। राष्ट्रपति पौडेल के निजी आवास और पूर्व प्रधानमंत्री शेर बहादुर देउबा के घर को भी निशाना बनाया गया।

'जेनरेशन-ज़ेड' के बैनर तले प्रदर्शनकारी 'केपी चोर, देश छोड़' और 'भ्रष्ट नेताओं पर कार्रवाई करो' जैसे नारे लगा रहे थे। यह समूह लंबे समय से भ्रष्टाचार के खिलाफ अभियान चला रहा है और रेडिट, इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफॉर्म पर मंत्रियों और प्रभावशाली लोगों के बच्चों की ऐशो-आराम भरी जीवनशैली का पर्दाफाश कर रहा है। उन्होंने वीडियो और तस्वीरें साझा कर यह सवाल उठाया कि यह धन-संपत्ति आखिर कहां से आई।

पिछले वर्षों के भ्रष्टाचार कांडों ने भी इस आंदोलन को हवा दी। इनमें 2017 का एयरबस सौदा खास है, जिसमें नेपाल एयरलाइंस ने दो A330 विमान खरीदे थे। इस सौदे की पांच साल लंबी जांच ने खुलासा किया कि सरकार को 1.47 अरब नेपाली रुपये (10.4 मिलियन डॉलर) का नुकसान हुआ। कई बड़े अधिकारियों को भ्रष्टाचार का दोषी ठहराया गया। दक्षिण एशिया की इन घटनाओं का भारत और पाकिस्तान पर क्या असर पड़ेगा, यह तो समय बताएगा, लेकिन भारत के राजनीतिक नेतृत्व और पाकिस्तान के सैन्य शासकों को इन परिस्थितियों का गंभीरता से विश्लेषण करना होगा।

(डॉ. सतीश मिश्रा वरिष्ठ पत्रकार और अनुभवी राजनीतिक विश्लेषक हैं)

नेपाल में उथल-पुथल : बेरोज़गारी और ठप पड़ी वृद्धि

■ शिवाजी सरकार

भारतीय उपमहाद्वीप में गंभीर उथल-पुथल का ताज़ा शिकार नेपाल बना है। के.पी. शर्मा 'ओली' सरकार के पतन, संसद में आगज़नी, पूर्व प्रधानमंत्रियों और मंत्रियों के घरों को जलाने, वित्त मंत्री और अन्य राजनीतिक नेताओं को खदेड़ने जैसी घटनाओं ने पिछले वर्ष 5 अगस्त 2024 को बांग्लादेश की घटनाओं की याद ताज़ा कर दी है। बढ़ती हिंसा के बीच ओली को इस्तीफ़ा देना पड़ा। दिलचस्प समानता यह है कि बांग्लादेश में २०२४ में और अब नेपाल में भी सेना प्रमुख ने सत्ता पर नियंत्रण किया है। बांग्लादेश में सेना नियंत्रण में है पर सीधे राजनीतिक कार्रवाई में शामिल नहीं है, हालांकि ढाका में उसने युवाओं से बातचीत की थी। काठमांडू में भी नेपाल सेना प्रमुख अशोक राज सिग्देल ने प्रदर्शनकारी युवाओं-जिन्हें अब जेनरेशन ज़ी कहा जा रहा है-से वार्ता और आगे का रास्ता तय करने का आह्वान किया।

लेकिन 8 सितम्बर को काठमांडू में भीड़ पर बेरहमी से गोली चलाई गई, जिसमें कम से कम 19 लोग मारे गए और 300 से अधिक घायल हुए। सरकार की असंवेदनशीलता और सहानुभूति की कमी ने अगले दिन लोगों को उग्र बना दिया। कहा जा रहा है कि यह बिना नेतृत्व वाली हिंसा थी, पर घटनाओं के क्रम से पता चलता है कि लक्ष्यबद्ध ढंग से चयन और तैयारी की गई थी। आगज़नी, सरकारी संपत्ति जलाने जैसी कार्रवाइयों के पीछे कोई अदृश्य नेतृत्व था जिसके पास संसाधन और कौशल दोनों थे। यह अभी आंका जाना बाकी है कि उन्हें समर्थन कहाँ से मिला।

भीड़ का गुस्सा 26 सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म्स पर प्रतिबंध के खिलाफ भी था, क्योंकि वही उनकी नाराज़गी व्यक्त करने का मंच थे। नेपाल के अधिकांश समाचार पत्र और चैनल सरकारी नीतियों के पक्ष में रहते हैं। यहाँ तक कि सत्ता समर्थक माने जाने वाले लोकप्रिय अख़बार कांतिपुर पोस्ट का दफ्तर भी जला दिया गया। सरकार का कहना था कि ऐप्स को सूचना-प्रसारण मंत्रालय में पंजीकरण कराना चाहिए था, जो उन्होंने नहीं किया। जबकि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता आवश्यक है, सवाल यह भी है कि क्या ऐप कंपनियाँ अड़ियल और घमंडी हैं? 90 फीसदी से ज्यादा प्लेटफॉर्म्स में पश्चिमी निवेश है।

सोशल मीडिया लोगों को जोड़ता है लेकिन अरब जगत और अन्य जगहों पर सामाजिक-राजनीतिक समस्याएँ भी पैदा करता रहा है। चीन ने जैसा अपना समानांतर तंत्र विकसित किया है, वैसा अन्य देशों में नहीं है। आशंकाएँ हैं कि ये प्लेटफ़ॉर्म केवल स्वतंत्र विचारों के आदान-प्रदान से परे अन्य उद्देश्यों के लिए भी इस्तेमाल हो रहे हैं। एशियाई देशों में इनके नियमन पर लगातार बहस हो रही है।कमज़ोर अर्थव्यवस्था वाले देशों में ऐप्स की व्यावहारिकता पर भी प्रश्न हैं। भारत की ख़बर प्रणाली की सीमाएँ दिखाती हैं कि नेपाल या बांग्लादेश हमारे लिए उतने ही पराए हैं जितना लैटिन अमेरिका। नेपाल संकट भारत को अपनी कमज़ोर समाचार-संग्रहण प्रणाली को लेकर सतर्क करता है।

समाचार घटनाओं के पीछे लंबे समय की कुंठा भी छिपी है। 2015 के भूकंप के बाद से नेपाल की अर्थव्यवस्था चरमराई हुई है। विश्व बैंक के अनुसार 2024 में 15-24 वर्ष की आयु के युवाओं में बेरोजगारी 20.8 फीसदी रही-एशिया में सबसे अधिक। काम की तलाश में भारत, खाड़ी देशों और मलेशिया जाने वाले नेपाली, जीडीपी में 33.१ फीसदी हिस्सेदारी रेमिटेंस से लाते हैं। लोगों का गुस्सा केवल गोलीकांड पर नहीं, बल्कि वर्षों की हताशा, भाई-भतीजावाद, भ्रष्टाचार और वंचना पर है। गरीबी घटी है लेकिन घरेलू निवेश, रोज़गार या औद्योगिक विकास से नहीं, जिससे अर्थव्यवस्था की नींव कमज़ोर रही। 17 साल में 14 बार सरकार बदलने से नीतिगत अस्थिरता रही और लंबी अवधि की योजनाएँ असंभव हुईं। 2006 में माओवादियों के उभार और राजशाही को पीछे धकेलने के बावजूद अर्थव्यवस्था नहीं बदली। बीस साल में कोई भी सरकार पूर्ण बहुमत से नहीं चल सकी। कुछ का मानना है कि यह नेपाल के लिए बफर का काम करता है। राजशाही भले सत्ता से बाहर हो, मगर राजनीतिक ताक़त बनी हुई है। राजशाही समर्थक और हिंदू शक्तियाँ इसे वापस लाना चाहती हैं। आर्थिक वृद्धि धीमी रही है-1996 से 2023 तक औसत वृद्धि 4.2 फीसदी। गरीबी 1999 में 97.1 फीसदी थी, जो अब 52.6 फीसदी बताई जाती है। लेकिन अर्थव्यवस्था कुछ जातीय-समूहों और निजी हाथों में है, जो मुनाफाखोरी पर केंद्रित हैं। उनके प्रभाव से रोजगार सृजन नहीं हो पाता।

पिछले एक दशक में नेपाल की वृद्धि अपने समकक्ष देशों से पीछे रही है। 2007 के बाद के संघर्ष, भूकंप और बाढ़ जैसी आपदाओं ने और चोट पहुँचाई। उच्च रेमिटेंस से मुद्रा का अति-मूल्यांकन हुआ और निर्यात पर प्रतिकूल असर पड़ा। खाड़ी देशों से लौटे प्रवासी समाज में घुलने-मिलने में कठिनाई झेलते हैं। महँगाई भी बड़ी समस्या है। चावल, दाल, सब्ज़ी और ईंधन की कीमतें लगातार बढ़ रही हैं। नेपाल की भारत से आयात निर्भरता और वैश्विक झटकों ने इसे और बढ़ा दिया है। विश्व बैंक के अनुसार नेपाल की अर्थव्यवस्था अन्य निम्न-मध्य आय वाले देशों जैसे बांग्लादेश, बोलिविया, किर्गिस्तान, लाओस, कंबोडिया या मोल्डोवा से पिछड़ी है। अमीरी-ग़रीबी की खाई बढ़ रही है। फिर भी विश्व बैंक का कहना है कि अगर नेपाल प्रवासन, निर्यात, जलविद्युत और डिजिटल क्षेत्र में सुधार करे तो तेज़ विकास कर सकता है। पर्यटन, डिजिटल अर्थव्यवस्था, बुनियादी ढाँचा और प्रतिस्पर्धी व्यावसायिक वातावरण में अवसर खोलने से रोज़गार और समृद्धि बढ़ सकती है। लेकिन संकटग्रस्त देश के लिए यह अभी केवल सिद्धांत भर है।

(लेखक : वरिष्ठ पत्रकार हैं)

■■■■

एससीओ शिखर सम्मेलन : वैश्विक भू-राजनीति में एक महत्वपूर्ण मोड़

गोपाल मिश्रा

31 अगस्त और एक सितम्बर, 2025 को चीन के टियांजिन में आयोजित शंघाई सहयोग संगठन (SCO) शिखर सम्मेलन वैश्विक भू-राजनीति में एक निर्णायक बदलाव को चिह्नित कर सकता है। हालांकि दीर्घकालिक प्रभावों का पूरी तरह से आकलन करने में हफ्तों लग सकते हैं, शिखर सम्मेलन के तत्काल प्रभाव- जिसमें भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और चीनी राष्ट्रपति शीजिनपिंग ने भाग लिया- सुझाव देता है कि एक नई विश्व व्यवस्था बन सकती है।

वाशिंगटन की नीतियों के लिए एक काउंटर : एससीओ शिखर सम्मेलन राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के तहत अमेरिकी व्यापार और विदेश नीति के साथ बढ़ती हताशा की पृष्ठभूमि के खिलाफ हुआ। इस साल मई में 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान भारत और पाकिस्तान के बीच संघर्ष विराम की मध्यस्थता करने के उनके बार-बार के दावों को नई दिल्ली ने खारिज कर दिया, जिससे उनकी विश्वसनीयता कम हो गई। इसके अलावा, अमेरिकी प्रतिबंधों के बावजूद, भारत ने अमेरिकी प्रभाव की सीमाओं को रेखांकित करते हुए रूसी तेल खरीदना जारी रखा।

ट्रंप की मुश्किलें और बढ़ा देने वाली उनकी बहुप्रचारित अलास्का शिखर वार्ता कोई सार्थक रणनीतिक या वित्तीय परिणाम हासिल करने में विफल रही। इसके बजाय, वाशिंगटन की आक्रामक टैरिफ नीतियों और अनिश्चित कूटनीति ने भारत, रूस और चीन के बीच सहयोग को मजबूत किया है- जो अमेरिकी गलत कदमों का एक अनपेक्षित परिणाम है।

अब इन देशों के बारे में चर्चा बढ़ रही है जो एक व्यापार व्यवस्था पर काम कर रहे हैं जो अमेरिकी डॉलर को दरकिनार करता है, संभावित रूप से वैश्विक व्यापार की रूपरेखा को फिर से तैयार करता है।

इतिहास की गूँज : एससीओ शिखर सम्मेलन ने फरवरी 1972 में अमेरिकी राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन की चीन की ऐतिहासिक यात्रा के साथ अपरिहार्य तुलना की है, जिसने शीत युद्ध की भू-राजनीति को मौलिक रूप से बदल दिया है। हेनरी किसिंजर द्वारा सहायता प्राप्त निक्सन ने बीजिंग को सफलतापूर्वक वाशिंगटन के करीब लाया, जिससे मास्को अलग-थलग हो गया। उस तालमेल ने अंतत: यूएसएसआर को कमजोर कर दिया और सोवियत पतन के बाद अमेरिका को एकमात्र वैश्विक महाशक्ति के रूप में स्थापित किया।

निक्सन ने अपनी यात्रा को 'दुनिया को बदलने वाला सप्ताह' बताया। आज, आधी सदी से भी अधिक समय के बाद, एससीओ शिखर सम्मेलन को समान रूप से निर्णायक क्षण के रूप में देखा जा सकता है-हालांकि इस बार अमेरिकी आधिपत्य के पतन के लिए।

विडंबना यह है कि यह ट्रम्प प्रशासन के 'स्व-लक्ष्य' हैं जिन्होंने रूस, भारत और चीन को करीब लाया है। हालांकि अनसुलझे तनाव बने हुए हैं, विशेष रूप से भारत-चीन सीमा पर, शिखर सम्मेलन ने कम से कम उम्मीद जगाई है कि बीजिंग देंगजियाओपिंग की व्यावहारिक दृष्टि को पुनर्जीवित करने पर विचार कर सकता है, जिसमें अंतरराष्ट्रीय सीमाओं को पहचानना और शत्रुता को कम करना शामिल है।

रजत जयंती शिखर सम्मेलन : तियानजिन सभा ने एससीओ की 25वीं राष्ट्राध्यक्षों की बैठक को चिह्नित किया, जिसमें अब दस पूर्ण सदस्य शामिल हैं- बेलारूस, चीन, भारत, ईरान, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, पाकिस्तान, रूस, ताजिकिस्तान और उज्बेकिस्तान। बेलारूस, सबसे नया प्रवेशी, आधिकारिक तौर पर जुलाई 2024 में शामिल हुआ।

रजत जयंती शिखर सम्मेलन ने दुनिया की आबादी और अर्थव्यवस्था के एक महत्वपूर्ण हिस्से का प्रतिनिधित्व करने वाले बहुपक्षीय ब्लॉक के रूप में संगठन के बढ़ते वजन पर प्रकाश डाला। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि इसने एकतरफा अमेरिकी नीतियों के खिलाफ एकजुट मोर्चे की संभावना को रेखांकित किया जो एशिया और अफ्रीका में विकासशील देशों को असमान रूप से प्रभावित करते हैं।

अमेरिकी आधिपत्य के लिए एक चुनौती : यदि निक्सन की चीन पहल ने एकमात्र महाशक्ति के रूप में अमेरिका के उदय का मार्ग प्रशस्त किया, तो एससीओ 2025 शिखर सम्मेलन एक बहुध्रुवीय दुनिया के उद्भव की शुरुआत कर सकता है। प्रमुख यूरेशियन शक्तियों के बीच घनिष्ठ आर्थिक और रणनीतिक संबंधों के साथ, वैश्विक बाजारों पर वाशिंगटन का उत्तोलन- विशेष रूप से डॉलर के माध्यम से- कमजोर हो सकता है।

यह विकास सीधे अपने आर्थिक प्रभुत्व को बनाए रखने के लिए चीन, भारत और अन्य विकासशील देशों से सस्ते श्रम का उपयोग करने के अमेरिकी अभ्यास को चुनौती देता है। लंबे समय से प्रतिबंधों, शुल्कों और सशर्त सहायता के बोझ तले दबे देशों के लिए, एससीओ अधिक स्वायत्तता का दावा करने का एक मंच बन सकता है।

ट्रम्प बनाम निक्सन : ट्रम्प और निक्सन के बीच का अंतर स्पष्ट है। निक्सन और किसिंजर वैश्विक सरेखण को नयी आकृति प्रदान करने में कूटनीतिक चालाकी का प्रदर्शन किया। जुलाई 1971 में, किसिंजर ने माओत्से तुंग के साथ निक्सन की सफलता की तैयारी के लिए पाकिस्तान से बीजिंग की एक गुप्त यात्रा भी की।

ट्रम्प, इसके विपरीत, तमाशा और नाटकीयता पर भरोसा किया है। पाकिस्तान के सेना प्रमुख असीम मुनीर को लुभाने का उनका प्रयास अभूतपूर्व व्हाइट हाउस लंच के साथ 'हलाल मांस' की पेशकश करता है, जो उनकी सतही पहुंच को दर्शाता है। टिकाऊ गठजोड़ बनाने की बात तो दूर, इस तरह के इशारे दक्षिण एशिया और इस्लामी दुनिया की जटिल वास्तविकताओं को कम करके आंकते हैं।

इसके अलावा, ट्रम्प के टैरिफ शासन ने पहले ही अमेरिकी रणनीतिक हितों और उसके सहयोगियों को चोट पहुंचाई है, जिससे वाशिंगटन की विश्वसनीयता कमजोर हो गई है। प्रतिद्वंद्वियों को अलग-थलग करने के बजाय, उनकी नीतियां उन्हें एक साथ करीब ला रही हैं।

मोदी की बढ़ती वैश्विक प्रोफ़ाइल : प्रधानमंत्री मोदी के लिए, शिखर सम्मेलन एक व्यक्तिगत जीत के रूप में चिह्नित हुआ। अमेरिकी दबाव और प्रतिबंधों के बावजूद, भारत विश्व मंच पर एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी के रूप में उभरा है, जिसका समर्थन पूर्व और पश्चिम दोनों ने किया है। तियानजिन में मोदी की उपस्थिति ने एक वैश्विक राजनेता के रूप में उनकी स्थिति को मजबूत किया, जिनकी आवाज उभरती बहुध्रुवीय व्यवस्था को आकार देने में मांगी जाती है।

एक नया भू-राजनीतिक अध्याय : तियानजिन में एससीओ शिखर सम्मेलन को एक निर्णायक क्षण के रूप में याद किया जा सकता है जब यूरेशिया की प्रमुख शक्तियां अमेरिकी एकतरफावाद का विरोध करने के लिए एक साथ आईं। जिस तरह निक्सन की 1972 की चीन यात्रा ने दुनिया को बदल दिया, 2025 एससीओ शिखर सम्मेलन एक नए भू-राजनीतिक युग का अग्रदूत हो सकता है- जिसमें अमेरिका अब नियमों को चुनौती नहीं देता है।

क्या यह एक स्थिर बहुध्रुवीय दुनिया या नई गलती लाइनों की ओर जाता है, यह देखा जाना बाकी है। लेकिन जो स्पष्ट है वह यह है कि शक्ति का वैश्विक संतुलन बदल रहा है- और एससीओ ने खुद को उस परिवर्तन के केंद्र में रखा है।

(गोपाल मिश्रा एक अनुभवी पत्रकार, राजनीतिक विश्लेषक, लेखक और मीडिया कार्यकर्ता हैं, अब वह ज्यादातर भू-राजनीतिक मामलों पर लिखते हैं)

मीडिया मैप

में विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें

One full Color Page : Rs. 150,000/- (one lakh fifty thousand only)

One full Page (Black and white) : Rs. 100000/- (One lakh only)

70 ज्ञानखंड-4, इंदिरापुरम, गाजियाबाद- 201014 (उत्तर प्रदेश)

दूरभाष : 9810385757/9910069262

Email : editor@mediamap.co.in

राष्ट्रीय सुरक्षा व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का संतुलन

डॉ. मोहम्मद इक़बाल सिद्दीक़ी

अक्टूबर 2020 में पत्रकार सिद्दीकी कप्पन को उत्तर प्रदेश में एक संवेदनशील मामले की रिपोर्टिंग के दौरान भारतीय दंड संहिता (IPC) की धारा 124A (देशद्रोह) के तहत गिरफ्तार किया गया। उन्हें जमानत मिलने से पहले दो साल से अधिक जेल में रहना पड़ा, जिससे उनका पारिवारिक और पेशेवर जीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ। यह मामला भारत में देशद्रोह क़ानून के दुरुपयोग का प्रतीक बन गया।

2023 में IPC की जगह भारतीय न्याय संहिता (BNS) लाई गई, जो एक जुलाई 2024 से प्रभावी हुई। इसके साथ ही धारा 124A की जगह धारा 152 लागू की गई। आलोचकों का कहना है कि यह धारा न केवल पुराने क़ानून की कमियाँ बनाए रखती है बल्कि दुरुपयोग की संभावना को और बढ़ाती है। 12 अगस्त 2025 को सुप्रीम कोर्ट ने सवाल उठाया कि क्या धारा 152 का 'दुरुपयोग की संभावना' इसे असंवैधानिक बना सकती है। राजस्थान उच्च न्यायालय ने तेजेंद्र पाल सिंह बनाम राजस्थान राज्य (2024) में पहले ही चेतावनी दी थी कि इस क़ानून का उपयोग वैध असहमति को दबाने के लिए नहीं होना चाहिए।

भारत की संप्रभुता की रक्षा के लिए सख्त कानून ज़रूरी हैं, लेकिन धारा 152 की अस्पष्ट भाषा नागरिकों की स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति के अधिकार पर ख़तरा डालती है। यह लेख देशद्रोह क़ानून के विकास, धारा 152 के निहितार्थ और लोकतांत्रिक स्वतंत्रताओं को सुरक्षित रखते हुए राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने की ज़रूरत की पड़ताल करता है।

भारत में देशद्रोह क़ानून का ऐतिहासिक संदर्भ : भारत में देशद्रोह क़ानून की शुरुआत 1870 में ब्रिटिश राज के दौरान IPC की धारा 124Aसे हुई। इसे राष्ट्रवादियों को दबाने के लिए लाया गया था। बाल गंगाधर तिलक को उनकी लेखनी के कारण 1897 में इसी धारा में दोषी ठहराया गया, जिससे उनका पारिवारिक और राजनीतिक जीवन बाधित हुआ।

स्वतंत्रता के बाद भी यह क़ानून बरकरार रहा और अक्सर सरकार के आलोचकों को निशाना बनाने के लिए इस्तेमाल किया गया। 2016 में JNU छात्र कन्हैया कुमार पर कथित देशविरोधी नारे लगाने का आरोप लगाकर देशद्रोह का मामला चलाया गया और वे महीनों जेल में रहे। 2010 में लेखिका अरुंधति रॉय को कश्मीर पर दिए गए बयान के लिए इसी तरह का मुक़दमा झेलना पड़ा। ये मामले दिखाते हैं कि किस तरह पत्रकारों, कार्यकर्ताओं और छात्रों को दबाने के लिए धारा 124Aका उपयोग हुआ।

लगातार दुरुपयोग के चलते सुप्रीम कोर्ट ने मई 2022 में एस.जी. वोंबटकेरे बनाम भारत संघ में सभी लंबित मामलों की सुनवाई रोक दी और सरकार से इस क़ानून की समीक्षा करने को कहा। लेकिन BNS की धारा 152 ने आलोचकों की चिंताओं को दूर करने के बजाय और गहरा कर दिया।

धारा 152 : प्रावधान और चिंताएं : BNS की धारा 152 उन कृत्यों को अपराध मानती है जो 'भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता को संकट में डालते हैं।' इसमें भाषण, इलेक्ट्रॉनिक संचार या आर्थिक साधन भी शामिल हैं। 'विघटनकारी गतिविधियाँ' जैसे अस्पष्ट शब्द इसकी परिभाषा को बहुत व्यापक बना देते हैं, जिससे मनमाने ढंग से गिरफ्तारी का रास्ता खुलता है।

तेजेंद्र पाल सिंह बनाम राजस्थान राज्य (2024) में एक सिख कार्यकर्ता को सरकारी नीतियों की आलोचना करने वाले सोशल मीडिया पोस्ट के लिए इसी धारा में गिरफ्तार किया गया था, जिसे हाईकोर्ट ने रद्द कर दिया। इसी तरह 2021 में छत्तीसगढ़ की आदिवासी कार्यकर्ता हिदमे मरकाम को खनन परियोजनाओं के खिलाफ विरोध पर UAPA

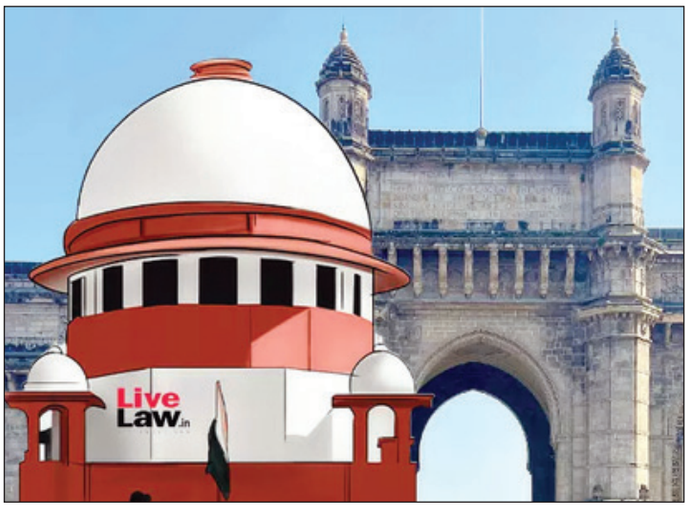

के तहत गिरफ्तार किया गया और वे 2023 तक हिरासत में रहीं। ये मामले दिखाते हैं कि धारा 152 पुराने देशद्रोह क़ानून जैसी ही दमनकारी प्रवृत्तियों को दोहराती है।

सख्त क़ानून की ज़रूरत : भारत को वास्तविक सुरक्षा ख़तरों का सामना है। 2008 के मुंबई हमलों में 166 लोगों की मौत हुई, जिसने आतंकवाद-विरोधी सख्त क़ानूनों की ज़रूरत उजागर की। 2020 में बिजली ग्रिड पर साइबर हमला हुआ। लोकतंत्रों जैसे ब्रिटेन ने Terrorism Act 2000 जैसे क़ानूनों के जरिए राष्ट्रीय सुरक्षा और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के बीच संतुलन साधा है। इसी तरह भारत में भी सटीक और स्पष्ट प्रावधान आवश्यक हैं।

धारा 152 के वर्तमान स्वरूप पर आपत्ति : सुप्रीम कोर्ट का 12 अगस्त 2025 का सवाल इसकी अस्पष्ट भाषा को लेकर गंभीर है। NCRB के आँकड़े (2014–2021) बताते हैं कि धारा 124A के तहत 475 मामले दर्ज हुए लेकिन केवल 12 दोषसिद्धियाँ हुईं। यानी दुरुपयोग ज़्यादा और न्याय कम। शुरुआती मामलों से स्पष्ट है कि धारा 152 का भी यही हाल होने वाला है।

इससे नागरिकों में भय का वातावरण बनता है और लोग अपने संवैधानिक अधिकार (अनुच्छेद 19(1)(A) का प्रयोग करने से डरते हैं। अनुच्छेद 21 (जीवन और स्वतंत्रता) पर भी इसका सीधा प्रभाव पड़ता है। उमर खालिद जैसे छात्रों और कार्यकर्ताओं की लंबी हिरासत इसका उदाहरण है।

संवैधानिक और विधिक दृष्टि : धारा 152 की संवैधानिकता अनुच्छेद 14 (समानता), 19 (अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता) और 21 (जीवन व स्वतंत्रता) के संदर्भ में संदिग्ध है।

- केदार नाथ सिंह बनाम बिहार राज्य (1962)– सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि केवल हिंसा भड़काने पर ही देशद्रोह लागू हो सकता है।
- श्रेय सिंघल बनाम भारत संघ (2015)– अस्पष्ट कानूनों को असंवैधानिक घोषित किया गया।

इसलिए धारा 152 का दायरा जितना व्यापक है, उतना ही यह संवैधानिक गारंटियों के खिलाफ खड़ा होता है।

राष्ट्रीय सुरक्षा और स्वतंत्रता का संतुलन : इस संतुलन के लिए कुछ सुधार आवश्यक हैं–

- सटीक परिभाषाएं– 'संप्रभुता को संकट' केवल हिंसा भड़काने या दुश्मन ताक़तों से सांठगांठ तक सीमित हो।
- न्यायिक नियंत्रण– मुकदमा दर्ज करने से पहले मजिस्ट्रेट या स्वतंत्र प्राधिकरण की अनुमति अनिवार्य हो।
- पारदर्शिता– हर मामले की सार्वजनिक रिपोर्टिंग अनिवार्य हो।

लोकतंत्र की ताकत असहमति में है, दमन में नहीं : भारत को अपनी संप्रभुता की रक्षा के लिए कानूनों की ज़रूरत है, लेकिन धारा 152 मौजूदा स्वरूप में उन स्वतंत्रताओं पर चोट करती है जिन्हें यह बचाने का दावा करती है।

इतिहास दिखाता है कि धारा 124A का दुरुपयोग हुआ और शुरुआती संकेत यही बताते हैं कि धारा 152 भी उसी राह पर है। पत्रकार सिद्दीकी कप्पन, कार्यकर्ता हिदमे मरकाम और छात्र उमर खालिद इसके जीवंत उदाहरण हैं।

यदि इस धारा को सटीक परिभाषा, न्यायिक निगरानी और पारदर्शिता से सुधारा न गया, तो इसे पूरी तरह समाप्त कर देना ही बेहतर होगा। भारत का लोकतंत्र खुली बहस और आलोचना से मज़बूत होता है, चुप कराए जाने से नहीं।

(लेखक : वरिष्ठ पत्रकार हैं)

■■■■

भारत में देशद्रोह कानून की शुरुआत 1870 में ब्रिटिश राज के दौरान IPC की धारा 124Aसे हुई। इसे राष्ट्रवादियों को दबाने के लिए लाया गया था। बाल गंगाधर तिलक को उनकी लेखनी के कारण 1897 में इसी धारा में दोषी ठहराया गया, जिससे उनका पारिवारिक और राजनीतिक जीवन बाधित हुआ।

स्वतंत्रता के बाद भी यह कानून बरकरार रहा और अक्सर सरकार के आलोचकों को निशाना बनाने के लिए इस्तेमाल किया गया। 2016 में JNU छात्र कन्हैया कुमार पर कथित देशविरोधी नारे लगाने का आरोप लगाकर देशद्रोह का मामला चलाया गया और वे महीनों जेल में रहे। 2010 में लेखिका अरुंधति रॉय को कश्मीर पर दिए गए बयान के लिए इसी तरह का मुक़दमा झेलना पड़ा। ये मामले दिखाते हैं कि किस तरह पत्रकारों, कार्यकर्ताओं और छात्रों को दबाने के लिए धारा 124Aका उपयोग हुआ।

लगातार दुरुपयोग के चलते सुप्रीम कोर्ट ने मई 2022 में एस.जी. वोंबटकेरे बनाम भारत संघ में सभी लंबित मामलों की सुनवाई रोक दी और सरकार से इस क़ानून की समीक्षा करने को कहा। लेकिन BNS की धारा 152 ने आलोचकों की चिंताओं को दूर करने के बजाय और गहरा कर दिया।

BNS की धारा 152 उन कृत्यों को अपराध मानती है जो 'भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता को संकट में डालते हैं।' इसमें भाषण, इलेक्ट्रॉनिक संचार या आर्थिक साधन भी शामिल हैं। 'विघटनकारी गतिविधियाँ' जैसे अस्पष्ट शब्द इसकी परिभाषा को बहुत व्यापक बना देते हैं, जिससे मनमाने ढंग से गिरफ्तारी का रास्ता खुलता है।

ऐतिहासिक तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर आरएसएस एजेंडा लागू

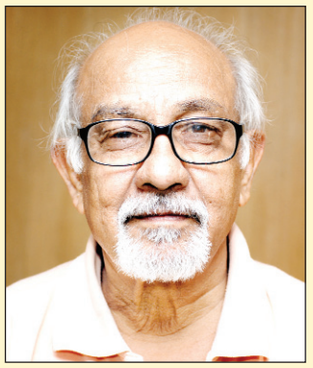

डॉ. सतीश मिश्रा

मोदी सरकार का ताज़ा प्रयास, कांग्रेस पर देश के बंटवारे का दोष मढ़ते हुए, तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर पेश करना और अपने मार्गदर्शक संगठन आरएसएस की भूमिका को छिपाना, तब उजागर हुआ जब एनसीईआरटी (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद) ने 'विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस' पर एक विशेष मॉड्यूल जारी किया।

इस मॉड्यूल में ऐतिहासिक तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर पेश किया गया है। इसमें मोहम्मद अली जिन्ना, कांग्रेस और तत्कालीन वायसराय लॉर्ड माउंटबेटन को भारत विभाजन का ज़िम्मेदार ठहराया गया है, जबकि हिंदू महासभा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (जिसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश की 79वीं स्वतंत्रता दिवस पर अपनी सबसे लंबी भाषण में सबसे बड़ा एनजीओ बताया था) की भूमिका का कहीं ज़िक्र नहीं है।

यह मॉड्यूल इतिहास को हिंदुत्व ताकतों के पक्ष में बदलने की सोची-समझी कोशिश है। इसमें कहा गया है कि विभाजन के बाद कश्मीर एक नई समस्या के रूप में सामने आया, जो पहले कभी भारत में मौजूद नहीं थी, और इसने देश की विदेश नीति के लिए चुनौती पैदा की। इसमें यह भी कहा गया है कि कुछ देश पाकिस्तान को लगातार मदद देते रहते हैं और कश्मीर के मुद्दे पर भारत पर दबाव डालते हैं।

मॉड्यूल कहता है- 'भारत का विभाजन गलत विचारों के कारण हुआ। भारतीय मुसलमानों की पार्टी मुस्लिम लीग ने 1940 में लाहौर में सम्मेलन किया। इसके नेता मोहम्मद अली जिन्ना ने कहा कि हिंदू और मुसलमान दो अलग-अलग धार्मिक दर्शन, सामाजिक प्रथाओं और साहित्य के अनुयायी हैं।'

'विभाजन के दोषी' शीर्षक खंड एनसीईआरटी मॉड्यूल लिखता है :

'आखिरकार 15 अगस्त 1947 को भारत विभाजित हो गया। लेकिन यह किसी एक व्यक्ति का काम नहीं था। इसके लिए तीन तत्व ज़िम्मेदार थे- जिन्ना, जिसने इसकी मांग की; कांग्रेस, जिसने इसे स्वीकार किया; और माउंटबेटन, जिसने इसे लागू किया। लेकिन माउंटबेटन ने एक बड़ी गलती की। उसने सत्ता हस्तांतरण की तारीख जून 1948 से घटाकर अगस्त 1947 कर दी। उसने सबको इसके लिए राज़ी कर लिया। इस कारण विभाजन से पहले पूरी तैयारियां नहीं हो सकीं। सीमांकन भी जल्दबाज़ी में किया गया। इसके लिए सर सायरिल रेडक्लिफ को केवल पांच हफ्ते दिए गए।'

'पंजाब में 15 अगस्त 1947 के दो दिन बाद तक भी लाखों लोगों को यह पता नहीं था कि वे भारत में हैं या पाकिस्तान में। इतनी जल्दीबाज़ी एक बड़ी लापरवाही थी।'

मॉड्यूल में यह भी कहा गया कि बाद में जिन्ना ने स्वीकार किया कि उन्होंने विभाजन की उम्मीद नहीं की थी। उन्होंने अपने सहयोगी से कहा, 'मैंने कभी नहीं सोचा था कि ऐसा होगा। मैंने कभी नहीं सोचा था कि अपने जीवनकाल में पाकिस्तान देख पाऊंगा।'

मॉड्यूल में सरदार वल्लभभाई पटेल को उद्धृत किया गया है जिन्होंने कहा था कि देश की स्थिति विस्फोटक हो चुकी थी और गृहयुद्ध से बेहतर विकल्प विभाजन था। वहीं महात्मा गांधी के रुख का भी उल्लेख है कि वे

विभाजन के खिलाफ थे, लेकिन कांग्रेस के निर्णय को हिंसा के ज़रिए रोकने को तैयार नहीं थे।

दो अलग-अलग मॉड्यूल : एनसीईआरटी ने दो अलग मॉड्यूल प्रकाशित किए हैं—एक कक्षा 6 से 8 के लिए (मिडिल स्टेज) और दूसरा कक्षा 9 से 12 के लिए (सेकेंडरी स्टेज)। ये पूरक संसाधन हैं, नियमित पाठ्यपुस्तकों का हिस्सा नहीं, और इन्हें प्रोजेक्ट्स, पोस्टर्स, चर्चाओं और बहसों के ज़रिए उपयोग करने का उद्देश्य है।

दोनों मॉड्यूल की शुरुआत : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 2021 के संदेश से होती है, जिसमें उन्होंने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस मनाने की घोषणा की थी।

पुस्तक में पीएम के X (पूर्व में ट्विटर) पर किए गए पोस्ट का हवाला दिया गया है : 'विभाजन के दर्द को कभी भुलाया नहीं जा सकता। हमारे लाखों भाई-बहनों को विस्थापित होना पड़ा और अनेक लोगों ने अंधी नफरत और हिंसा में अपनी जान गंवाई। अपने लोगों के संघर्ष और बलिदान की याद में, 14 अगस्त को विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस के रूप में मनाया जाएगा।'

मिडिल-स्टेज मॉड्यूल का दावा है कि विभाजन 'अनिवार्य नहीं था' बल्कि 'गलत विचारों' का नतीजा था। पटेल ने इसे 'कड़वी दवा' कहा था, जबकि नेहरू ने इसे 'बुरा लेकिन अपरिहार्य' माना।

सेकेंडरी-स्टेज मॉड्यूल विभाजन को मुस्लिम नेताओं की अलग पहचान की धारणा से जोड़ता है, जो 'राजनीतिक इस्लाम' में निहित थी और 'गैर-मुसलमानों के साथ स्थायी समानता को अस्वीकार करती थी।' इसमें कहा गया कि इसी विचारधारा ने पाकिस्तान आंदोलन को जन्म दिया, जिसके 'कुशल वकील-नेता' जिन्ना थे।

कांग्रेस का विरोध : एनसीईआरटी मोदी सरकार के निर्देशों पर काम कर रही है, जो आरएसएस एजेंडे को लागू करने में समय गंवाना नहीं चाहती। इन मॉड्यूल्स का उद्देश्य युवा दिमागों में महात्मा गांधी के नेतृत्व वाले स्वतंत्रता संग्राम के विकृत तथ्यों और झूठी कथा को बैठाना है।

कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने इस मॉड्यूल की मूल अवधारणा को चुनौती दी। उन्होंने सवाल किया- 'क्या इसमें 1938 का ज़िक्र है या नहीं? विभाजन के इतिहास में 1938 एक अहम तारीख है। क्यों? गुजरात में साबरमती के किनारे हिंदू महासभा का अधिवेशन हुआ था। वहां साफ़ कहा गया था कि हिंदू और मुसलमान एक देश में साथ नहीं रह सकते।'

उन्होंने आगे कहा : '1940 का ज़िक्र है? तब मुस्लिम लीग के लाहौर अधिवेशन में जिन्ना ने वही दोहराया, जो 1938 में हिंदू महासभा ने कहा था। फिर 1942 में, जब 'भारत छोड़ो आंदोलन' शुरू हुआ और कांग्रेस नेताओं ने प्रांतीय विधानसभाओं से इस्तीफा दे दिया, तब हिंदू महासभा और मुस्लिम लीग ने मिलकर प्रांतों- एनडब्ल्यूएफपी, बंगाल, सिंध-में साझा सरकारें बनाईं। सिंध विधानसभा में विभाजन का प्रस्ताव हिंदू महासभा और मुस्लिम लीग ने मिलकर रखा। क्या यह सब लिखा है मॉड्यूल में?'

खेड़ा ने कहा- 'अगर यह सब नहीं लिखा है तो इस किताब को आग लगा दो। यही सच्चाई है। विभाजन हिंदू महासभा और मुस्लिम लीग की जुगलबंदी से हुआ। इस इतिहास में खलनायक अगर कोई है, तो वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ है। आने वाली पीढ़ियां उन्हें माफ़ नहीं करेंगी।'

निष्कर्ष : मोदी सरकार का यह खतरनाक खेल तथ्यों को नज़रअंदाज़ कर हिंदू राष्ट्र बनाने की योजना का हिस्सा है, जिसकी तुलना केवल जर्मनी के हिटलर और इटली के मुसोलिनी की फासीवादी सरकारों से की जा सकती है। यह हमारे लोगों पर आई एक त्रासदी है।

(डॉ. सतीश मिश्रा वरिष्ठ पत्रकार और अनुभवी राजनीतिक विश्लेषक हैं)

♦♦

'आखिरकार 15 अगस्त 1947 को भारत विभाजित हो गया। लेकिन यह किसी एक व्यक्ति का काम नहीं था। इसके लिए तीन तत्व ज़िम्मेदार थे- जिन्ना, जिसने इसकी मांग की; कांग्रेस, जिसने इसे स्वीकार किया; और माउंटबेटन, जिसने इसे लागू किया। लेकिन माउंटबेटन ने एक बड़ी गलती की। उसने सत्ता हस्तांतरण की तारीख जून 1948 से घटाकर अगस्त 1947 कर दी। उसने सबको इसके लिए राज़ी कर लिया। इस कारण विभाजन से पहले पूरी तैयारियां नहीं हो सकीं। सीमांकन भी जल्दबाज़ी में किया गया। इसके लिए सर सायरिल रेडक्लिफ को केवल पांच हफ्ते दिए गए।' 'पंजाब में 15 अगस्त 1947 के दो दिन बाद तक भी लाखों लोगों को यह पता नहीं था कि वे भारत में हैं या पाकिस्तान में। इतनी जल्दीबाज़ी एक बड़ी लापरवाही थी।' मॉड्यूल में यह भी कहा गया कि बाद में जिन्ना ने स्वीकार किया कि उन्होंने विभाजन की उम्मीद नहीं की थी। उन्होंने अपने सहयोगी से कहा, 'मैंने कभी नहीं सोचा था कि ऐसा होगा। मैंने कभी नहीं सोचा था कि अपने जीवनकाल में पाकिस्तान देख पाऊंगा।' मॉड्यूल में सरदार वल्लभभाई पटेल को उद्धृत किया गया है जिन्होंने कहा था कि देश की स्थिति विस्फोटक हो चुकी थी और गृहयुद्ध से बेहतर विकल्प विभाजन था। वहीं महात्मा गांधी के रुख का भी उल्लेख है कि वे विभाजन के खिलाफ थे, लेकिन कांग्रेस के निर्णय को हिंसा के ज़रिए रोकने को तैयार नहीं थे।

♦♦

मंदिरों की चांदी और स्कूलों की बर्बादी

मीडिया मैप न्यूज नेटवर्क

देश में मंदिरों को सजाने पर करोड़ों रुपये खर्च हो रहे हैं। उनके कपाट, कलश से लेकर मुकुट तक में सोने का इस्तेमाल किया जा रहा है। लाइटिंग, सजावट, लाउडस्पीकर और रख-रखाव पर बड़ी रकम खर्च होती है। सरकार और मंत्रियों की मदद भी इसमें शामिल रहती है। भाजपा की अगुवाई वाली राज्य सरकारें स्कूल बंद करने, बच्चों को स्कूल जाने से रोकने के एजेंडे पर काम कर रही हैं। 2014 से अब तक देश भर में 89441 प्राथमिक और उच्च प्राथमिक बंद किये जा चुके हैं। इन में से 60 प्रतिशत मध्यप्रदेश और उत्तर प्रदेश में बंद हुए हैं। प्राथमिकताएं बदलने के कारण स्कूलों की हालत जर्जर है। राजस्थान के झालावाड़ जिले की घटना इसका ताजा उधारण है, जहां एक सरकारी स्कूल की जर्जर इमारत की छत गिरने से सात बच्चों की मौत हो गई और कम से कम 24 बच्चे घायल हो गए। ये सभी बच्चे 6 से 14 साल की उम्र के थे और अनुसूचित जाति एवं जनजाति से ताल्लुक रखते थे। वे इतने गरीब घरों से थे कि उनके अंतिम संस्कार के लिए लकड़ियों का भी ठीक से इंतज़ाम नहीं हो सका और पुराने टायर जलाकर चिता में आग लगाई गई। जाहिर है, आज के दौर में ग्रामीण इलाकों के सरकारी स्कूलों में सिर्फ वही बच्चे पढ़ने जाते हैं जिनके माता-पिता निजी स्कूलों का खर्च उठाने में सक्षम नहीं होते।

जहां तक निजी स्कूलों में शिक्षा के स्तर की बात है तो वह भी सवालों के घेरे में है। स्कूल शिक्षा के स्तर, स्कूलों में रजिस्ट्रेशन, बच्चों के लिए उपलब्ध सुविधाएं और देश में शिक्षा की समग्र स्थिति का आकलन करने वाली संस्था 'असर' की रिपोर्ट के मुताबिक, आठवीं कक्षा के बच्चों को तीसरी कक्षा की अपनी मातृभाषा की किताब पढ़ने में कठिनाई होती है। वे मामूली गणित के सवाल भी हल नहीं कर पाते। स्कूलों में रजिस्ट्रेशन घटा है, स्कूल छोड़ने वाले बच्चों की संख्या बढ़ी है। कितने ही स्कूलों में पीने के पानी और शौचालय की सुविधा नहीं है। इस ओर सरकार का कोई ध्यान नहीं है। सरकारी स्कूलों की इमारतें पुरानी ओर जर्जर हो चुकी हैं। इनके रख-रखाओ की किसी को फ़िक्र नहीं है। काम से काम निजी स्कूलों की इमारतें तो इतनी असुरक्षित नहीं होतीं कि कभी भी छत या दीवार गिर जाए।

निजी स्कूलों के भी कई स्तर हैं, सबसे निचले स्तर के स्कूल कस्बों या झुग्गी बस्तियों में चलते हैं, जहां अंग्रेजी के नाम पर माता-पिता को लुभाया जाता है। इसके बाद मध्यम स्तर के स्कूल आते हैं, जहां निचले मध्यम वर्ग के परिवार अपने बच्चों को सिर्फ सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए भेजते हैं और मन में यह उम्मीद रखते हैं कि एक दिन वे उच्च मध्यम वर्ग के सामाजिक दायरे में शामिल हो जाएंगे।

आखिर में आते हैं वे स्कूल जो मध्यम और उच्च मध्यम वर्ग के लिए बनाए गए हैं, जहां पांच से सात सितारा जैसी सुविधाएं उपलब्ध होती हैं। इन्हें आम भाषा में 'क्रीमी लेयर' कहा जाता है। इन स्कूलों की बसों से लेकर कक्षाओं तक में एयर कंडीशनर लगे होते हैं, स्कूल के अंदर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र होता है, कैंटीन में बहुराष्ट्रीय कंपनियों के उत्पाद मिलते हैं, और शौचालय, पुस्तकालय, सांस्कृतिक हॉल, खेल के मैदान-सब उच्च गुणवत्ता के होते हैं। इसके बदले एक-एक बच्चे से महीने के लाखों रुपये फीस ली जाती है। उच्च मध्यम वर्ग यह फीस आसानी से देता है और मध्यम वर्ग अपनी जरूरतें काटकर या फिर गलत तरीकों से आय बढ़ाकर फीस का इंतज़ाम करता है। शादी में खर्च और महंगे स्कूलों में पढ़ाने की होड़ ने देश में भ्रष्टाचार को उच्च स्तर तक पहुंचा दिया है।

शिक्षा प्रणाली में मौजूद यह वर्गीय विभाजन अब भारतीय समाज में इतना आम हो चुका है कि इस के कारण किसी के माथे पर शिकन तक नहीं आती कि हमने अपने भविष्य के नागरिकों को किस जाल में फंसा दिया है। ऐसे समाज में अगर सात बच्चों

♦♦

निजी स्कूलों के भी कई स्तर हैं, सबसे निचले स्तर के स्कूल कस्बों या झुग्गी बस्तियों में चलते हैं, जहां अंग्रेजी के नाम पर माता-पिता को लुभाया जाता है। इसके बाद मध्यम स्तर के स्कूल आते हैं, जहां निचले मध्यम वर्ग के परिवार अपने बच्चों को सिर्फ सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए भेजते हैं और मन में यह उम्मीद रखते हैं कि एक दिन वे उच्च मध्यम वर्ग के सामाजिक दायरे में शामिल हो जाएंगे। आखिर में आते हैं वे स्कूल जो मध्यम और उच्च मध्यम वर्ग के लिए बनाए गए हैं, जहां पांच से सात सितारा जैसी सुविधाएं उपलब्ध होती हैं। इन्हें आम भाषा में 'क्रीमी लेयर' कहा जाता है। इन स्कूलों की बसों से लेकर कक्षाओं तक में एयर कंडीशनर लगे होते हैं, स्कूल के अंदर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र होता है, कैंटीन में बहुराष्ट्रीय कंपनियों के उत्पाद मिलते हैं, और शौचालय, पुस्तकालय, सांस्कृतिक हॉल, खेल के मैदान-सब उच्च गुणवत्ता के होते हैं। इसके बदले एक-एक बच्चे से महीने के लाखों रुपये फीस ली जाती है। उच्च मध्यम वर्ग यह फीस आसानी से देता है और मध्यम वर्ग अपनी जरूरतें काटकर या फिर गलत तरीकों से आय बढ़ाकर फीस का इंतज़ाम करता है। शादी में खर्च और महंगे स्कूलों में पढ़ाने की होड़ ने देश में भ्रष्टाचार को उच्च स्तर तक पहुंचा दिया है।

♦♦

की अचानक मौत पर भी कोई व्यापक प्रतिक्रिया न हो, तो इसमें हैरानी कैसी? समाज जब स्वार्थी हो जाता है तो सरकार के लिए अपनी जिम्मेदारियों से बच निकलना आसान हो जाता है। वह पूरा समय चुनावी अभियान की मानसिकता से काम करती है। अखबारों और टीवी पर रोज दिखाई देने वाली तस्वीरों में प्रधानमंत्री किसी न किसी चीज का उद्घाटन करते, शिलान्यास करते या किसी नई योजना की घोषणा करते दिखाई देते हैं। यह अलग बात है कि प्रधानमंत्री द्वारा उद्घाटन किया गया पुल एक बरसात भी नहीं झेल पाता, कई बार एक ही जगह दो-दो बार शिलान्यास किया जाता है और योजना पर जितना पैसा खर्च नहीं होता, उससे ज्यादा उसके प्रचार-प्रसार पर खर्च होता है।

हालत यह है कि अब ट्रेन को हरी झंडी दिखाने से लेकर सफाई कर्मचारियों को झाड़ू बांटने तक हर काम को प्रचार कार्यक्रम की तरह पेश किया जाता है, जबकि इन कामों के लिए प्रशासनिक अफसर और कर्मचारी हैं जिन्हें तनख्वाह इन्हीं कामों के लिए दी जाती है। इन कामों में न तो किसी प्रचार की जरूरत है और न ही नेताओं या मंत्रियों की। प्रशासन से काम करवाने के लिए जिनके हाथ में सरकार की लगाम है, उन्हें भी काम करना होता है, लेकिन अब किसी को काम से मतलब नहीं, सिर्फ फोटो खिंचवाने से मतलब है।

इसीलिए झालावाड़ में स्कूल की छत गिरने से मरे बच्चों के परिजनों से मिलते नेताओं की तस्वीरें हैं, अस्पताल में घायल बच्चों से मिलते नेताओं की तस्वीरें हैं, लेकिन इस एक हादसे से सबक लेकर राज्य के बाकी सरकारी स्कूलों का निरीक्षण करते या उनमें सुधार करवाते नेताओं की कोई तस्वीर नहीं है। प्रचार की ललक इतनी बढ़ गई है कि मौत, ज़िंदगी, हादसे और त्योहार तक को नहीं बक्शा जाता।

करदाताओं के पैसे से सरयू नदी के किनारे दिवाली पर एक लाख दीये जलाकर रिकॉर्ड बनाया जाता है, कांवड़ियों पर फूल बरसाते हुए टीवी पर दिखाया जाता है, प्रधानमंत्री सैनिकों के साथ त्योहार मना कर सुर्खियां बटोरते हैं। हादसों को रोकने पर ध्यान न देकर हादसे के बाद तस्वीरें खिंचवाने की होड़ लगी होती है

कोई पीछे नहीं रहना चाहता। यह सब इसलिए है क्योंकि सरकार जानती है कि जनता के प्रति उसकी कोई जवाबदेही नहीं है। जनता तभी सवाल करेगी जब कोई बड़ी घटना होगी, और सरकार उन्हें दिखावटी कदमों से संतुष्ट कर देगी। मौजूदा भाजपा सरकार को अपने मतदाताओं को खुश करना और अपनी गलती दूसरों पर थोपना अच्छी तरह आता है।

वह यह भी जानती है कि कुछ दिनों के हंगामे के बाद सवाल बंद हो जाएंगे और जनता भूल जाएगी। अगर नहीं भूली तो उसे किसी नए तमाशे में उलझा दिया जाएगा। अगर जनता सचेत होती तो सरकार से जरूर पूछती कि राज्य सरकार ने पिछले 5 साल में 1675 करोड़ रुपये स्कूलों की बेहतरी और विकास के लिए मंजूर किए, तो उसका हिसाब कहां है? यह रकम कहां खर्च हुई, और अगर नहीं हुई तो कहां गई? जैसे अभी बिहार में कैग (CAG) की रिपोर्ट से पता चला है कि 71 हजार करोड़ रुपये का कोई हिसाब ही नहीं है कि कहां और कैसे खर्च हुए। जो हाल बिहार का है, वही हाल दूसरे राज्यों का भी होगा। जनता को बुनियादी सवाल पूछने या इस पर सोचने से भटकाने के लिए उन्हें बेकार की खबरों, मंदिर-मस्जिद, नफरती बयानबाजी, एनकाउंटर, पूजा-पाठ, गाय-गोबर, अंतरराष्ट्रीय दौरे, यात्रा-रैली, जन्मदिन और आम की दावत में व्यस्त रखा जाता है।

जब कभी सरकारी स्कूलों में गिरते स्तर या संसाधनों की कमी जैसे मुद्दों पर बातचीत होती है, तो उन्हें टालने के लिए नए तमाशे किए जाते हैं। कभी मुख्यमंत्री सरकारी स्कूलों के बच्चों से मिलते हैं, कभी लेपटॉप या साइकिल देने का ऐलान होता है और प्रधानमंत्री मोदी का हर साल 'परीक्षा पर चर्चा' कार्यक्रम तो होता ही है।

लाखों-करोड़ों रुपये इन कार्यक्रमों पर खर्च किए जाते हैं ताकि बच्चों को भाजपा और नरेंद्र मोदी का प्रशंसक बनाया जा सके। 2022 की नरेंद्र मोदी की गुजरात यात्रा की वह तस्वीर पाठकों को याद होगी, जिसमें वे एक स्कूल की कक्षा में बच्चों के साथ बैठे नजर आए थे। बाद में पता चला कि वह पूरा सेट तैयार किया गया था, यानी सब कुछ नकली था, सिर्फ प्रधानमंत्री असली थे। जब देश के प्रधानमंत्री असली कक्षा में बैठने की तकलीफ न उठा सकें, तो कैसे उम्मीद की जा सकती है कि इस देश में झालावाड़ जैसे हादसे दोबारा नहीं होंगे? हालांकि नई शिक्षा नीति 2020 में सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का 6% शिक्षा पर खर्च करने का उल्लेख किया गया था। इसे लागू करने से शिक्षा क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव आने की बात कही गई थी। लेकिन एक तरफ इससे भाषा विवाद पैदा हुआ है और दूसरी तरफ शिक्षा महंगी हुई है। ऐसे में सवाल पैदा होता है कि गरीबों के बच्चे कैसे पढ़ेंगे, मंदिरों को सजा, स्कूलों को बर्बाद करके देश का विकास होगा या गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के द्वारा। पढ़ेगा नहीं तो कैसे आगे बढ़ेगा इंडिया।

■■■■

मंच पर गांधी की आत्मा : इतिहास को जीवंत करता नाटकों का दोहरा प्रदर्शन

चंद्र कुमार एडवोकेट

पिछले कुछ वर्षों से, दिल्ली स्थित थिएटर समूह 'भाग्यम आर्ट्स एंड आइडियाज' महात्मा गांधी के सम्मान में भावपूर्ण और विचारोत्तेजक प्रस्तुतियों के साथ अपनी एक अलग पहचान बना रहा है। गांधी जयंती मनाना इस समूह के लिए एक वार्षिक परंपरा बन गई है और उनकी प्रस्तुतियों को उनकी मौलिकता और इतिहास के कल्पनाशील चित्रण के लिए व्यापक रूप से सराहा गया है। इस वर्ष, कंपनी ने कुछ विशेष की घोषणा की है-नई दिल्ली के तानसेन मार्ग स्थित 'त्रिवेणी ऑडिटोरियम' में नाटकों का एक दोहरा प्रदर्शन, जो गांधी के अहिंसा के दर्शन और उसकी वैश्विक प्रतिध्वनि को जीवंत रूप से प्रस्तुत करने का वादा करता है।

दोनों प्रस्तुतियां, 'सत्याग्रह' और 'किंग-गांधी', क्रमश: 27 सितम्बर (शनिवार) और एक अक्टूबर (बुधवार) को मंचित की जाएंगी। दोनों की परिकल्पना, लेखन और निर्देशन सुरन्या अय्यर ने किया है, जिन्होंने इतिहास, रंगमंच और संगीत को सम्मोहक मंचीय अनुभवों में पिरोने के लिए अपनी ख्याति अर्जित की है।

अहिंसा के साथ भारत के संबंधों पर पुनर्विचार : पहला नाटक, 'सत्याग्रह', दर्शकों को भारत के अहिंसक स्वतंत्रता संग्राम के मूल में ले जाता है। घटनाओं के केवल कालानुक्रमिक पुनर्कथन के बजाय, यह मंच विभिन्न स्वरों के माध्यम से गांधी के अभियानों को जीवंत करता है, उनके दर्शन को रवींद्रनाथ टैगोर और सुभाष चंद्र बोस जैसे अन्य नेताओं के दृष्टिकोणों के साथ जोड़ता है। इस सूक्ष्म प्रस्तुति के माध्यम से नाटक स्वतंत्रता आंदोलन के भीतर अहिंसक प्रतिरोध की शक्ति और सीमाओं पर चल रही बहसों को उजागर करता है।

शास्त्रीय भारतीय प्रदर्शन परंपराओं के तत्वों से समृद्ध, यह नाटक जितना एक सांस्कृतिक अनुभव है, उतना ही एक राजनीतिक अनुभव भी है। प्रसिद्ध भरतनाट्यम और कथकली की जोड़ी स्वर्णालीकुंडू और आकाश मलिक ने इस प्रस्तुति में अपनी कलात्मकता का परिचय दिया है, जबकि संगीत कैराना घराने के उस्ताद आरिफ अली खान ने तैयार किया है, जो पूरे कलाकारों की टोली के साथ लाइव प्रस्तुति देंगे। रंगमंच, नृत्य और संगीत का यह संयोजन दर्शकों को गांधीवादी संघर्ष की भावना से ओतप्रोत करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

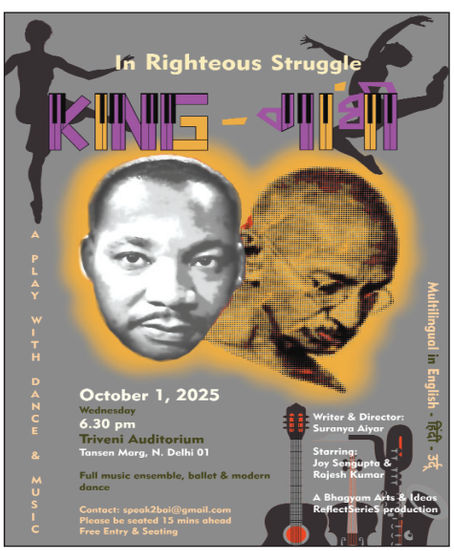

महासागरों के पार गांधी का संदेश : जहां सत्याग्रह भारत के औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संघर्ष की आंतरिक झलक प्रस्तुत करता है, वहीं दूसरा नाटक, 'किंग-गांधी', यह दर्शाता है कि कैसे गांधी की विरासत ने महाद्वीपों के पार जाकर नस्लीय न्याय के लिए आंदोलनों को प्रेरित किया। यह नाटक अफ्रीकी अमेरिकियों की गुलामी से लेकर नागरिक अधिकार आंदोलन तक के सफ़र को दर्शाता है, और गांधी के तरीकों और मार्टिन लूथर किंग जूनियर जैसे नेताओं की रणनीतियों के बीच गहरे संबंधों को उजागर करता है।

शीर्षक ही 20वीं सदी की दो महान हस्तियों- महात्मा गांधी और मार्टिन लूथर किंग जूनियर- के बीच संवाद को दर्शाता है, जो भौगोलिक और परिस्थितियों से अलग होने के बावजूद, अहिंसक प्रतिरोध में अपने विश्वास से एकजुट थे। यह नाटक किंग और उनके गुरुओं द्वारा हिंसा का सहारा लिए बिना लाखों लोगों को संगठित करने में गांधी की सफलता के लिए व्यक्त की गई प्रशंसा को उजागर करता है। किंग स्वयं अक्सर गांधी के संघर्ष को इस बात का प्रमाण बताते थे कि अहिंसा न केवल नैतिक रूप से श्रेष्ठ है, बल्कि उत्पीड़न

को समाप्त करने में राजनीतिक रूप से भी प्रभावी है।

यह प्रस्तुति जीवंतता के साथ इस इतिहास को पुनर्जीवित करती है, जिसमें एक लाइव जैज़ बैंड का उपयोग किया गया है जो गॉस्पेल, विरोध गीतों और नागरिक अधिकार युग के क्लासिक गीतों पर आधारित है। वैभव आहूजा की मौलिक रचनाएँ जैज़-फ़्यूज़न की संवेदनाओं से संगीत को ओतप्रोत करती हैं, जबकि विक्रांत सम्राट की कोरियोग्राफी बैले और जैज़ नृत्य के माध्यम से गतिशीलता प्रदान करती है। इस समूह में जागरण के पैंटोमाइम कलाकार भी शामिल हैं, जो यह सुनिश्चित करते हैं कि नाटक एक शक्तिशाली कथा और एक मनोरम दृश्य प्रदर्शन दोनों प्रदान करे।

कला रूपों का मिश्रण : दोनों नाटक अंग्रेजी और हिंदी में द्विभाषी हैं, जिससे ये व्यापक दर्शकों के लिए सुलभ हैं। अय्यर की दृष्टि यह सुनिश्चित करती है कि दोनों भाषाओं के भाषी इन प्रस्तुतियों का पूरा आनंद ले सकें, बिना किसी सूक्ष्मता या भावना को खोए। प्रस्तुतियों में अभिनीत प्रसंगों, पाठ, गीत और नृत्य का ऐसा मिश्रण है जो गांधीजी की विविध जीवन-पद्धतियों के लोगों को एक साथ लाने की क्षमता को प्रतिध्वनित करता है।

इस अभिनय समूह में भारत के कुछ सबसे प्रतिभाशाली कलाकार शामिल हैं, जिनमें मुंबई के जाने-माने रंगमंच और फिल्म अभिनेता जॉयसेन गुप्ता, प्रतिष्ठित दास्तानगोई कलाकार राजेश कुमार और स्वयं अय्यर शामिल हैं। उनकी उपस्थिति प्रस्तुतियों में गंभीरता और विविधता जोड़ती है और ऐतिहासिक पात्रों को गहराई और संवेदनशीलता के साथ जीवंत करती है।

विचारों और भावनाओं का रंगमंच : 'भाग्यम आर्ट्स एंड आइडियाज़' को सबसे अलग बनाने वाली बात है बौद्धिक रूप से सशक्त और भावनात्मक रूप से मार्मिक प्रस्तुतियां प्रस्तुत करने की इसकी क्षमता। सत्याग्रह में, दर्शक भारत के स्वतंत्रता सेनानियों के सामने आने वाली दुविधाओं का सामना करेंगे और गांधी के विकल्पों के नैतिक और राजनीतिक महत्व पर विचार करेंगे। किंग-गांधी में, वे देखेंगे कि कैसे गांधी का संदेश सीमाओं से परे, आधी दुनिया में नस्लीय अन्याय से जूझ रहे लोगों से बात करता है।

इन नाटकों का उद्देश्य पुरानी यादों को ताज़ा करना नहीं, बल्कि इतिहास के साथ जीवंत संवाद प्रस्तुत करना है। गांधी को टैगोर, बोस और किंग जैसी हस्तियों के साथ रखकर, ये प्रस्तुतियां अन्याय के विरुद्ध अहिंसा की निरंतर प्रासंगिकता को उजागर करती हैं, चाहे वह औपनिवेशिक भारत में हो या अलगाववादी अमेरिका में।

निःशुल्क प्रवेश, खुला निमंत्रण : दोनों प्रस्तुतियां त्रिवेणी ऑडिटोरियम में शाम 6.30 बजे शुरू होंगी। प्रत्येक शो लगभग 90 मिनट का होगा, जिसमें 15 मिनट का अंतराल होगा। सुगम्यता की भावना के अनुरूप, प्रवेश निःशुल्क है और सीटें पहले आओ, पहले पाओ के आधार पर दी जाएंगी।

दिल्ली के दर्शकों के लिए, यह डबल बिल गांधी की विरासत से एक गहन और रचनात्मक रूप में जुड़ने का एक दुर्लभ अवसर प्रदान करता है। रंगमंच प्रेमी, इतिहास के छात्र, और अहिंसा की अंतर-सांस्कृतिक प्रतिध्वनियों में रुचि रखने वाले, सभी को इन शामों से कुछ न कुछ सीखने को मिलेगा।

ऐसे समय में जब विश्व संघर्ष, असमानता और विभाजन से जूझ रहा है, भाग्यम आर्ट्स एंड आइडियाज दर्शकों को गांधी की शिक्षाओं की ओर लौटने के लिए आमंत्रित कर रहा है- अतीत के अवशेष के रूप में नहीं, बल्कि वर्तमान के लिए जरूरी संभावनाओं के रूप में।

(लेखक मीडियामैप न्यूज़ नेटवर्क के प्रबंध संपादक हैं)

सत्याग्रह भारत के औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संघर्ष की आंतरिक झलक प्रस्तुत करता है, वहीं दूसरा नाटक, 'किंग-गांधी', यह दर्शाता है कि कैसे गांधी की विरासत ने महाद्वीपों के पार जाकर नस्लीय न्याय के लिए आंदोलनों को प्रेरित किया। यह नाटक अफ्रीकी अमेरिकियों की गुलामी से लेकर नागरिक अधिकार आंदोलन तक के सफ़र को दर्शाता है, और गांधी के तरीकों और मार्टिन लूथर किंग जूनियर जैसे नेताओं की रणनीतियों के बीच गहरे संबंधों को उजागर करता है। शीर्षक ही 20वीं सदी की दो महान हस्तियों- महात्मा गांधी और मार्टिन लूथर किंग जूनियर- के बीच संवाद को दर्शाता है, जो भौगोलिक और परिस्थितियों से अलग होने के बावजूद, अहिंसक प्रतिरोध में अपने विश्वास से एकजुट थे। यह नाटक किंग और उनके गुरुओं द्वारा हिंसा का सहारा लिए बिना लाखों लोगों को संगठित करने में गांधी की सफलता के लिए व्यक्त की गई प्रशंसा को उजागर करता है। किंग स्वयं अक्सर गांधी के संघर्ष को इस बात का प्रमाण बताते थे कि अहिंसा न केवल नैतिक रूप से श्रेष्ठ है, बल्कि उत्पीड़न को समाप्त करने में राजनीतिक रूप से भी प्रभावी है। यह प्रस्तुति जीवंतता के साथ इस इतिहास को पुनर्जीवित करती है, जिसमें एक लाइव जैज़ बैंड का उपयोग किया गया है जो गॉस्पेल, विरोध गीतों और नागरिक अधिकार युग के क्लासिक गीतों पर आधारित है।

टाइटैनिक त्रासदी पर लखनऊ में प्रदर्शनी

15 अप्रैल 1912 को 2000 वीआईपी यात्रियों से भरा हुआ टाइटैनिक समुद्र में समा जाता है। यह उद दौर की वह घटना थी जिसने दुनिया में तहलका मचा दिया था। जहाज के डूबने की यह घटना फिल्मी पर्दे पर भी धूम मचा चुकी है। लेकिन इस घटना को उस दौर में न्यूयार्क के अख्बारों में क्या और कैसी खबरें छपीं यह देखना और पढ़ना एक दिलचस्प लम्हे से कम नहीं है। वहीं 15 अगस्त 1947 को भारत की आजादी की सुर्खियों को भारत के साथ पेरिस के अखबार ने किस अंदाज में छापा या प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की डेथ के समाचारों को किस तरह से प्रस्तुत किया गया। देश विदेश की ऐसी कई ऐतिहासिक घटनाओं को छापने वाले दुर्लभ समाचार पत्रों की प्रदर्शनी इन दिनों लखनऊ के कोकोरी आर्ट गैलरी में लगाई गई है। इस प्रदर्शनी का इनॉगरेशन किया प्रसार भारती के चेयरमैन नवनीत सहगल ने।

इस प्रदर्शनी में प्रदर्शित सभी देश व विदेशों के ऐतिहासिक घटनाओं से संबंधित दुर्लभ समाचार पत्रों के संग्रहकर्ता लखनऊ के सुबूर उस्मानी (आई आर एस) हैं। जिन्होंने एक लंबे समय से इन विशेष समाचार पत्रों का संग्रह किया है।

जेबा हसन

इस प्रदर्शनी की क्यूरेटर वंदना सहगल ने कहा कि अखबारी कागज के आविष्कार के बाद से ही समाचार पत्र मानवजाति का अभिन्न अंग रहे हैं। इस धरती पर जो भी घटनाएँ घटती हैं, हमारे पर्यावरण पर जो भी विपत्तियाँ आती हैं, मानव जाति द्वारा जो भी अभिलेख रचे जाते हैं समाचार पत्र उन सबका लेखा-जोखा रखते हैं। ये दैनिक समाचार प्रदान करते हैं, जिनमें राजनीतिक, व्यावसायिक, अपराध, खेल, मनोरंजन आदि जैसे विविध विषय शामिल होते हैं, जो स्थानीय घटनाओं से लेकर वैश्विक मामलों तक शामिल हो सकते हैं। इतिहासकार अक्सर अतीत की घटनाओं को समझने के लिए समकालीन समाचार रिपोर्टों पर भरोसा करते हैं।

संग्राहकों की दुनिया में, ऐतिहासिक शीर्षकों वाले समाचार पत्रों का संग्रह काफी लोकप्रिय रहा है। सुबूर उस्मानी बचपन से ही समाचार पत्र संग्रह करते रहे हैं और आदान-प्रदान व संपर्कों के माध्यम से उनके पास कला, संस्कृति से जुड़ी काफी दुर्लभ और ऐतिहासिक समृद्ध संग्रह है। समाचार पत्रों के इन दुर्लभ संग्रहों को देखने के बाद, जहाँ जीवन बदल देने वाली घटनाओं का दस्तावेजीकरण किया गया है, इसे देखकर कोई भी आश्चर्यचकित हो सकता है कि इन घटनाओं ने मानव जाति के इतिहास, राष्ट्रों के भाग्य को कैसे आकार दिया, और यह भी कि इनके घटित होने से पहले जीवन कैसा था।

संग्रहकर्ता सुबूर उस्मानी ने कहा कि बचपन की मेरी सबसे यादगार यादों में से एक थी अपने पिता की किताबों के साथ बिताया गया समय और उनके अख़बारों के संग्रह की खुशबू में डूबे रहना, जिसने मेरे लिए आश्चर्य और अन्वेषण की एक नई दुनिया खोल दी। उसके बाद से मैंने अखबार इकट्ठा करना शुरू कर दिया। एक बेकार पड़ा ट्रंक मेरी अनमोल संपत्ति बन गया क्योंकि उसमें वो सब कुछ रहता था जो मुझे उस उम्र में प्रासंगिक और दिलचस्प लगता था। पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की हत्या की खबर वाला अख़बार मेरे पास रखा पहला अख़बार था, वह साल 1989 था। यही वो साल था जब मेरा पहला पत्र 'संपादक के नाम पत्र' कॉलम में प्रकाशित हुआ था। तब मैं 10 साल का था।

बचपन में जो रुचि शुरू हुई, वो बाद

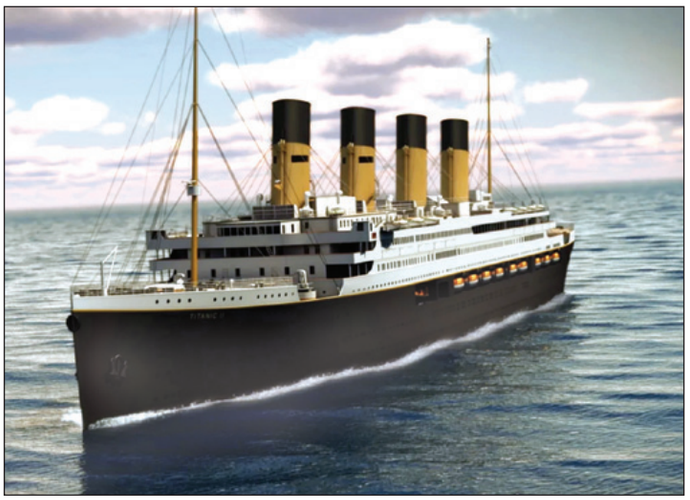

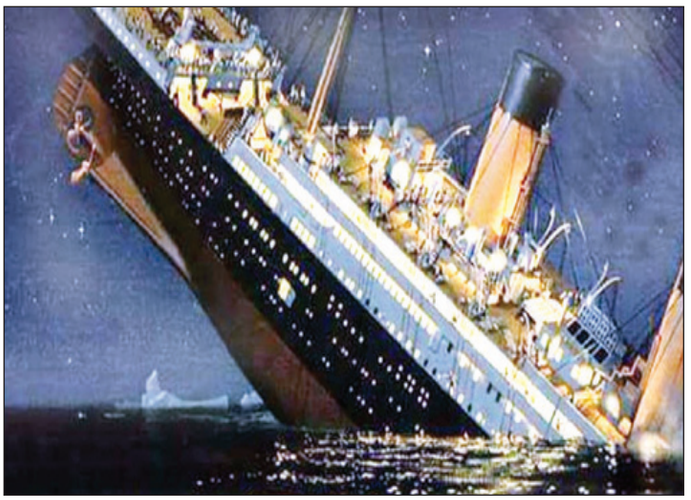

में जुनून बन गई क्योंकि मैंने उन अखबारों और पत्रिकाओं को इकट्ठा करना और उनकी सूची बनाना शुरू कर दिया जिनमें उन महत्वपूर्ण घटनाओं को शामिल किया गया था जिनके बारे में मुझे लगता था कि एक दिन इतिहास की किताबों में उनका जिक्र जरूर होगा, साथ ही साथ विभिन्न स्रोतों से बीते जमाने के पुराने अख़बार भी इकट्ठा करता रहा। कुछ मुझे मेरे पिता ने दिए थे, कुछ मुझे कबाड़ी बाज़ारों में मिले थे, कुछ मुझे तोहफे में मिले थे और कुछ मैंने ऑनलाइन प्लेटफॉर्म से हासिल किए थे।

यहां प्रदर्शित समाचार पत्र मानव इतिहास के महत्वपूर्ण पड़ावों को समेटे हुए हैं। युद्धों और क्रांतियों से लेकर उपनिवेशवाद के उन्मूलन और विज्ञान, अन्वेषण, खेल और संस्कृति में अभूतपूर्व उपलब्धियों तक, प्रत्येक समाचार पत्र एक कहानी उसी रूप में प्रस्तुत करता है जिस रूप में वह पहली बार दुनिया के सामने आई थी। आज पुराने समाचार पत्रों को पढ़ना इतिहास को उसी रूप में पढ़ना है जैसा वह घटित हुआ था, उस पर बाद के परिप्रेक्ष्य या व्याख्या का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है, अतीत की वास्तविकता का अनुभव करने और उस मानवीय पहलू को देखने का इससे बेहतर तरीका और कोई नहीं है जिसका इतिहास ग्रंथों में अक्सर अभाव रहता है।

उदाहरण के लिए, टाइटैनिक के डूबने या हिरोशिमा पर परमाणु बम गिराए जाने पर दुनिया भर में छाए भय और शोक के बारे में पढ़ना या चंद्रमा पर मानव जाति के पहले कदम या हमारे देश की स्वतंत्रता पर छाए उल्लास के बारे में पढ़ना, वस्तुत: वहां मौजूद होने जैसा है, उस घटित हो रहे नाटक का ठीक उसी रूप में अनुभव करना जैसा वह घटित हुआ था। स्क्रीन के वर्चस्व वाले युग में पल रही युवा पीढ़ी के लिए, यह प्रदर्शनी अतीत से एक ठोस जुड़ाव और मूल मुद्रित समाचारों के माध्यम से इतिहास को जानने, महत्वपूर्ण शीर्षकों को देखने और खुली ताजी हवा में घुलती सूखी कागज की खुशबू में साँस लेने का निमंत्रण है। प्रदर्शनी के कोऑर्डिनेटर भूपेंद्र कुमार अस्थाना ने बताया कि प्रदर्शनी के बारे में जाने माने लेखक जावेद अख्तर ने अपने भेजे गए संदेश में लिखा कि 'तारीखी अख़बारात की नुमाइश की मुबारकबाद, इस प्रदर्शनी में लोग देखेंगे के सहाफत कितना लंबा सफर करके यहां तक आई है और उनको इसका इल्म हो जरुरी है।'

इस प्रदर्शनी में कुल 56 दुर्लभ व ऐतिहासिक घटनाओं को कवर करने वाले देश भर के महत्ववपूर्ण समाचार पत्रों, चित्रों को प्रदर्शित किया गया है। महत्त्वपूर्ण दस्तावेज के रूप में लखनऊ में इस प्रकार कि पहली प्रदर्शनी है। इस प्रदर्शनी में सभी समाचार पत्रों को बहुत ही सुन्दर तरीकों से प्रदर्शित करने का विचार व कल्पना कलाकार धीरज यादव का है। काकोरी ट्रेन ऐक्शन के शताब्दी वर्ष को ध्यान में रखते हुए प्रदर्शनी में शहीद हुए चार महत्वपूर्ण व्यक्ति रामप्रसाद बिस्मिल, राजेंद्र नाथ लहरी, रोशन सिंह, अशफाकुल्ला खा को याद करते हुए उनके भी दुर्लभ चित्र प्रदर्शित किए गए हैं। यह प्रदर्शनी 12 अगस्त 2025 तक प्रात: 11 बजे से सायं 8 बजे तक अवलोकनार्थ लगी रहेंगी।

(लेखक : वरिष्ठ पत्रकार हैं)

संग्रहकर्ता सुबूर उस्मानी ने कहा कि बचपन की मेरी सबसे यादगार यादों में से एक थी अपने पिता की किताबों के साथ बिताया गया समय और उनके अख़बारों के संग्रह की खुशबू में डूबे रहना, जिसने मेरे लिए आश्चर्य और अन्वेषण की एक नई दुनिया खोल दी। उसके बाद से मैंने अखबार इकट्ठा करना शुरू कर दिया।

एक बेकार पड़ा ट्रंक मेरी अनमोल संपत्ति बन गया क्योंकि उसमें वो सब कुछ रहता था जो मुझे उस उम्र में प्रासंगिक और दिलचस्प लगता था। पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की हत्या की खबर वाला अख़बार मेरे पास रखा पहला अख़बार था, वह साल 1989 था। यही वो साल था जब मेरा पहला पत्र 'संपादक के नाम पत्र' कॉलम में प्रकाशित हुआ था। तब मैं 10 साल का था।

बचपन में जो रुचि शुरू हुई, वो बाद में जुनून बन गई क्योंकि मैंने उन अखबारों और पत्रिकाओं को इकट्ठा करना और उनकी सूची बनाना शुरू कर दिया जिनमें उन महत्वपूर्ण घटनाओं को शामिल किया गया था जिनके बारे में मुझे लगता था कि एक दिन इतिहास की किताबों में उनका जिक्र जरूर होगा, साथ ही साथ विभिन्न स्रोतों से बीते जमाने के पुराने अख़बार भी इकट्ठा करता रहा।

कुछ मुझे मेरे पिता ने दिए थे, कुछ मुझे कबाड़ी बाज़ारों में मिले थे, कुछ मुझे तोहफे में मिले थे और कुछ मैंने ऑनलाइन प्लेटफॉर्म से हासिल किए थे। यहां प्रदर्शित समाचार पत्र मानव इतिहास के महत्वपूर्ण पड़ावों को समेटे हुए हैं।

पंजाब, जहां तबाही जीवन का एक भ्रम बन गया है

प्रभजोत सिंह

उनके लिए एक बड़ा संघर्ष है। उन्हें कभी भी खुद के साथ शांति से रहने का समय नहीं मिलता है। अपने जीर्ण-शीर्ण घरों से आश्रयों में आगे पीछे जाना उनके लिए एक दिनचर्या बन गई है।

पिछले छह महीने उनके लिए कठिन और कठिन दोनों रहे हैं। कई बार, उनकी राष्ट्रीयता पर सवाल उठाया गया था। चूंकि प्रकृति ने सभी मानव निर्मित सीमाओं को मिटा दिया, इसलिए उन्होंने प्राकृतिक, भौगोलिक और मानव निर्मित बाधाओं को काट दिया ताकि वे जो कुछ भी बचा था उसे साझा कर सकें ताकि प्राधिकरण में उन लोगों की उदासीनता से बढ़े हुए अपने सबसे खराब प्राकृतिक आपदा से एक-दूसरे को बचाया जा सके।

इस हद तक कि ऐतिहासिक गुरुद्वारा श्री करतारपुर साहिब कुछ दिनों के लिए जलमग्न हो गया। सिखों ने अंतरराष्ट्रीय सीमा से कुछ किमी दूर अपने सबसे पवित्र मंदिरों में से एक तक पहुंचने के लिए दशकों तक लड़ाई लड़ी थी।

यह युद्ध और पानी से पीड़ित दो पंजाबों की कहानी है। जब से अंग्रेजों ने भारत छोड़ने से पहले, उन्हें भारतीय और पाकिस्तानी राष्ट्रीयताओं में विभाजित किया, तब से उन्होंने शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का अर्थ खो दिया है। इस बीच, वे खतरे- प्राकृतिक या मानव निर्मित-के जीवित होने पर जल्दी से आगे बढ़ना सीखने में कामयाब रहे हैं।

पिछले छह महीनों से उनके लिए जीवन बेहद कठिन और दर्दनाक हो गया है। हालाँकि दोनों देशों-पाकिस्तान और भारत- को 'अंग्रेजों से आजादी' मिलने के बाद से उन्हें कई बार उखाड़ फेंका गया है, लेकिन पिछले छह महीनों ने 1947 के बाद से पहले किसी भी समय की तुलना में उनके जीवन पर कहर बरपाया है।

यह सब तब शुरू हुआ जब भारत और पाकिस्तान युद्ध में गए, हालांकि संक्षेप में, और अब फिर जब मानसून ने अपना प्रकोप कम कर दिया।

सीमा पर रहना कभी आसान नहीं रहा। बुनियादी नागरिक सुविधाओं से वंचित, हर अब और फिर, उन्हें बेदखली या निकासी का सामना करना पड़ता है। सीमित संसाधनों और जीविका के साधनों के साथ, वे हमेशा दोनों पक्षों के सुरक्षा बलों की नजर में संदिग्ध बने रहते हैं। जो लोग प्रशासन में दूर-दूर तक बैठे हैं, राजनीतिक और प्रशासनिक दोनों तरह के फैसले ले रहे हैं, उनकी दुर्दशा और उनके अस्तित्व के बारे में कभी परवाह किए बिना।

उनके विचार से नदियों में पानी के प्राकृतिक प्रवाह को रोकना उनके अधिकार क्षेत्र में आ गया है, और वे तय कर सकते हैं कि नदियां किस तरफ बहती हैं या गरीब किसान बाड़ वाली सीमाओं के पार अपनी छोटी भूमि जोत के साथ कैसे जीवित रहते हैं।

जबकि भारतीय पंजाब के किसान भाग्यशाली हैं कि उनके पास बीमा पॉलिसियां हैं- शायद केवल कागजों में- उनकी फसलों और उनके मवेशियों दोनों के लिए, अन्य पंजाब में उन लोगों के पास प्राकृतिक और मानव प्रेरित आपदाओं से लड़ने के लिए ऐसा कोई समर्थन नहीं है।

जब विभाजन हुआ, तो अंग्रेजों ने क्षेत्रों को विभाजित किया, लेकिन नदियों सहित प्राकृतिक उपहारों को कैसे विभाजित किया जाए, इस पर कोई जानकारी नहीं थी। पंजाब का नाम उन नदियों की संख्या से लिया गया है जो इसके क्षेत्र को पार करती हैं। पांच नदियों में से, रावी और सतलुज सीमाओं के पार सैकड़ों हजारों छोटे और सीमांत किसानों को जीवित कर रही हैं।

पंजाब के सैकड़ों किसानों ने अपने दुधारू पशुओं को मानव निर्मित सीमाओं के पार विनाशकारी रावी और सतलुज के पानी में बहते हुए देखा। बाढ़ में हजारों एकड़ कृषि भूमि पोषक तत्वों से वंचित हो गई है। उपजाऊ खेतों से, वे भूमि के बंजर टुकड़े बन गए हैं। नदियों के स्थानांतरण पाठ्यक्रम और नदी के इलाके ने दशकों से जटिल सीमा सीमांकन किया है।

इस साल के कठोर दक्षिण-पश्चिम मानसून ने न केवल दो पंजाबों में सैकड़ों लोगों की जान ले ली है, बल्कि बड़ी संख्या में मवेशियों की मौत का कारण भी बना है। जबकि भारतीय पंजाब में, किसान मशीनीकृत खेती पर निर्भर हैं, वे परिवार की आय के पूरक के लिए भी बड़े पैमाने पर दुधारू मवेशियों पर निर्भर हैं। पाकिस्तान के पंजाब में, कृषि अभी भी पारंपरिक तरीकों से की जाती है, जहां मवेशी अभी भी बड़े पैमाने पर खेतों में खेती करते हैं।

पाकिस्तानी अधिकारियों ने अपने भारतीय समकक्षों पर रावी और सतलुज नदियों में अधिशेष पानी छोड़ने का आरोप लगाया। हालांकि भारतीय अधिकारियों ने इस आरोप से इनकार किया और कहा कि पाकिस्तानी अधिकारियों को नदियों के पाकिस्तानी हिस्से में पानी छोड़ने से पहले समय पर सूचित कर दिया गया था। स्थिति जो भी हो, भुक्तभोगी कोई और नहीं बल्कि गरीब लोग हैं, चाहे उनकी राष्ट्रीयता कुछ भी हो।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं और द ट्रिब्यून, चंडीगढ़ में लंबे समय तक कार्यरत रहे हैं। अब वह टारंटो कनाडा में रहते हैं)

गुणवत्ता की मुहर-प्रत्यायन का महत्व

यह कई साल पहले की बात है। मेरी बहन, जो भारतीय राजस्व सेवा (Indian Revenue Service) में अधिकारी है, ने एक दिन मुझे फोन किया और पूछा–

'अनिल, तुम क्या करते हो?'

मैंने कहा- 'मैं प्रत्यायन (Accreditation) के क्षेत्र में काम करता हूं। क्या इसका तुम्हें कुछ अर्थ समझ में आता है?'

उसने कहा – 'नहीं।'

मैंने पूछा- 'क्या तुमने ISO 9001 के बारे में सुना है?'

उसने कहा- 'हाँ।'

तब मैंने समझाया- 'बाज़ार में कुछ संस्थाएँ हैं जो ISO 9001 मानक के लिए प्रमाणपत्र देती हैं। हम इन संस्थाओं का अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार प्रत्यायन करते हैं और एक अंतरराष्ट्रीय प्रणाली का हिस्सा हैं। अब कुछ समझ आया?'

उसने कहा- 'हाँ।'

अब मेरी बारी थी पूछने की- 'लेकिन तुमने यह क्यों पूछा?'

उसने जवाब दिया- 'आदित्य (उसका 10 साल का बेटा) पूछ रहा था कि मामा (आप) ऐसा क्या करते हैं कि इतना विदेश यात्रा करते रहते हैं।'

मजाक अपनी जगह, लेकिन संदेश साफ था कि यदि आप प्रत्यायन के क्षेत्र में हैं, तो शायद आपका परिवार भी नहीं जानता कि आप वास्तव में क्या करते हैं।

अनिल जौहरी

प्रत्यायन का मतलब क्या है : मामला और पेचीदा इसलिए हो जाता है क्योंकि भारत में अस्पतालों का प्रत्यायन NABH ने प्रसिद्ध किया और विश्वविद्यालयों/शिक्षा संस्थानों का प्रत्यायन NAAC ने। विदेशों में भी इसी तरह की संस्थाएं हैं- जैसे अमेरिका में स्वास्थ्य सेवाओं के लिए JCI, और प्रबंधन शिक्षा के लिए AMBA और BGA।

तो प्रश्न है- वह प्रत्यायन क्या है जिसमें मैं जुड़ा हुआ था?

यह व्यवसायों और सभी हितधारकों के लिए समझना जरूरी है।

मानक और अनुपालन : हमारे पास अलग-अलग क्षेत्रों के लिए मानक होते हैं-

- उत्पाद (जैसे बिजली का इस्तरी),
- सेवाएं (जैसे प्रशिक्षण सेवाओं के लिए ISO 29993),
- प्रक्रियाएँ (जैसे ऑर्गेनिक उत्पाद),
- प्रणालियाँ (जैसे ISO 9001),
- यहाँ तक कि व्यक्ति भी (जैसे योग शिक्षक या वेल्डर)।
- एक बार मानक तय हो जाए, अगला कदम होता है उन पर अनुपालन की जाँच करना।
- उत्पादों के लिए यह आसान है-उनकी जाँच/परीक्षण कर लो।
- सेवाओं, प्रक्रियाओं, प्रणालियों और व्यक्तियों के लिए-निरीक्षण, ऑडिट या परीक्षा लेनी पड़ती है।

कौन करता है अनुपालन की जाँच : ऐसी जाँच सक्षम संस्थाओं द्वारा की जाती है जिन्हें प्रयोगशालाएँ (labs), निरीक्षण संस्थाएँ (Inspection Bodies) या प्रमाणन संस्थाएँ (Certification Bodies) कहते हैं।

बाज़ार में कई प्रकार की संस्थाएँ हैं :

- सरकारी (जैसे BIS या स्वस्थ्य के तहत परीक्षण केंद्र),
- निजी (जैसे DNV, TuV, BV, SGS) या कुछ छोटे नाम (जैसे IQC)।

लेकिन सवाल है- आप कैसे सुनिश्चित होंगे कि वे सक्षम हैं?

- शायद इसलिए कि वे सरकारी हैं?
- या उनके ब्रांड नाम से?
- या किसी दोस्त के अनुभव पर?

लेकिन यह कोई औपचारिक तरीका नहीं है। हमें एक ऐसी प्रणाली चाहिए जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि ये अनुरूपता मूल्यांकन निकाय (Conformity Assessment Bodies) वास्तव में सक्षम हैं। यहीं पर प्रत्यायन (Accreditation) आता है।

वैश्विक प्रत्यायन प्रणाली : दुनिया भर में अनुरूपता मूल्यांकन निकायों- जैसे प्रयोगशालाएँ, निरीक्षण संस्थाएँ, प्रमाणन संस्थाएँ, और हाल ही में कार्बन उत्सर्जन/क्रेडिट से जुड़े सत्यापन निकाय- का प्रत्यायन किया जाता है।

इनके लिए ISO ने अलग-अलग मानक बनाए हैं :

- ISO 17011- प्रत्यायन निकायों के लिए
- ISO 17020- निरीक्षण निकायों के लिए
- ISO 17021-प्रबंधन प्रणाली प्रमाणन निकायों के लिए
- ISO 17024-व्यक्तियों के प्रमाणन निकायों के लिए

- ISO 17029 – सत्यापन/वैधीकरण निकायों के लिए
- ISO 17065 – उत्पाद/प्रक्रिया/सेवा प्रमाणन निकायों के लिए
- इन्हें ISO17000 श्रृंखला के मानक कहा जाता है।

प्रत्यायन निकाय (Accreditation Bodies - ABs)

- विकसित देशों में ये अक्सर निजी होते हैं।
- विकासशील देशों में आमतौर पर सरकार इन्हें स्थापित करती है।
- यूरोप में कानून है कि प्रत्येक देश में केवल एक राष्ट्रीय प्रत्यायन निकाय होगा।
- परंतु अधिकांश देशों में ऐसा नियम नहीं है, इसलिए कई ABs हो सकते हैं (जैसे अमेरिका, जापान, कोरिया, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, नेपाल आदि)।

भारत में लंबे समय तक दो प्रमुख ABS थे-

- NABCB
- NABL

पिछले कुछ वर्षों में निजी क्षेत्र में भी ABS आए हैं, जैसे- QAI, FDAS और IQAS। इसके अलावा विदेशी ABs भी भारत में सेवाएँ देते हैं। भारत में ABs पर कोई कानूनी पाबंदी नहीं है- यह पूरी तरह खुला और अनियमित बाज़ार है।

अंतरराष्ट्रीय निगरानी प्रणाली : इन ABs पर केवल एक स्वैच्छिक निगरानी रहती है, जो दो अंतरराष्ट्रीय निकायों द्वारा चलती है-

- ILAC (International Laboratory Accreditation Cooperation) – परीक्षण और निरीक्षण के लिए
- IAF (International Accreditation Forum)- प्रमाणन और सत्यापन के लिए दोनों 2026 में मिलकर Global Accreditation Cooperation बनने वाले हैं।

ये निकाय क्षेत्रीय प्रत्यायन समूहों (जैसे APAC, EA, IAAC) के माध्यम से काम करते हैं। हर चार साल में प्रत्यायन निकायों और क्षेत्रीय निकायों का मूल्यांकन होता है। इससे एक वैश्विक समकक्षता सुनिश्चित होती है- उदाहरण के लिए, इस प्रणाली के तहत जारी कोई ISO 9001 प्रमाण पत्र विश्वभर में मान्य और स्वीकार्य होता है।

स्वैच्छिक लेकिन प्रभावी प्रणाली : ध्यान रहे यह प्रणाली पूरी तरह स्वैच्छिक है। किसी देश में कोई क़ानून नहीं है जो कहे कि किसी

प्रत्यायन निकाय को ILAC/IAF का सदस्य होना ही चाहिए।

- कुछ देशों (जैसे चीन, दुबई, दक्षिण कोरिया और यूरोप) में ही कानूनी प्रावधान हैं।
- फिर भी बाज़ार दबाव और लाभों के कारण ज़्यादातर ABs और CABs इस प्रणाली को अपनाते हैं।
- भारत में भी- FSSAI और CDSCO जैसे नियामकों ने अपने नियमों में इसे शामिल किया है। कई मुक्त व्यापार समझौतों (जैसे भारत-सिंगापुर FTA, 2005) में भी इसका उल्लेख है।

वैकल्पिक प्रत्यायन प्रणालियां : IAF/ILAC प्रणाली के अलावा भी प्रत्यायन प्रणालियां मौजूद हैं-

- NFCCC- जलवायु परिवर्तन समझौते के तहत
- APEDA- भारत में ऑर्गेनिक प्रमाणन के लिए (NPOP के तहत)
- SA 8000- अपनी स्वयं की प्रणाली
- FSC (Forest Stewardship Council) – अपनी प्रत्यायन संस्था ASI-NA बनाई, जो अन्य योजनाओं (जैसे MSC, ASC, RSPO) को भी सेवा देती है। हालाँकि ये प्रणालियाँ महत्वपूर्ण हैं, लेकिन संख्या में कम हैं।

विश्वसनीयता और सतर्कता : IAF/ILAC प्रणाली तीन स्तंभों पर आधारित है-

- निष्पक्षता (Impartiality)
- क्षमता (Competence)
- निरंतरता (Consistency)

आप यह देख सकते हैं कि कोई परीक्षण रिपोर्ट या प्रमाणपत्र वास्तव में प्रत्यायन प्राप्त है या नहीं- उस पर AB का लोगो (accreditation mark) होता है। इसके अलावा ISO प्रमाणपत्रों का वैश्विक डेटाबेस भी है (https://www.iafcertsearch.org/)। यदि आपका प्रमाणपत्र यहां सूचीबद्ध नहीं है, तो उसकी प्रामाणिकता संदिग्ध है।

व्यवसायों को सावधान रहना चाहिए – कई नकली ABs यूरोप/अमेरिका के पते दिखाकर प्रमाणपत्र बेचते हैं। ये तथाकथित 'ISO प्रमाणपत्र' बेहद सस्ते में बेचे जाते हैं और असल में केवल प्रमाणपत्र छापने की फैक्ट्रियाँ हैं।

निष्कर्ष : प्रत्यायन (Accreditation) एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जो अनुरूपता मूल्यांकन निकायों की क्षमता, विश्वसनीयता और अंतरराष्ट्रीय स्वीकृति को सुनिश्चित करती है। इससे परीक्षण रिपोर्ट, प्रमाणन और निरीक्षण रिपोर्ट सीमा-पार व्यापार में स्वीकार्य होती हैं।

यदि कोई अन्य प्रणाली मौजूद न हो, तो IAF/ILAC प्रणाली व्यवसायों के लिए सबसे सुरक्षित विकल्प है ताकि वे प्रयोगशालाओं, निरीक्षण संस्थाओं और प्रमाणन निकायों पर भरोसा कर सकें और धोखाधड़ी से बच सकें।

(लेखक नेशनल एक्रेडिटेशन बोर्ड फॉर सर्टिफिकेशन बॉडीज़ के पूर्व मुख्य कार्यकारी अधिकारी और मानकीकरण के क्षेत्र में एक अंतरराष्ट्रीय प्राधिकरण हैं)

चुनाव की ओर बढ़ते बांग्लादेश में मीडिया की सुरक्षा

नव ठाकुरिया

5 अगस्त 2025 को लाइव टेलीविजन पर राष्ट्र को संबोधित करते हुए बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के प्रमुख डॉ. मुहम्मद यूनुस ने घोषणा की कि यह दक्षिण एशियाई देश अगले वर्ष फरवरी के पहले सप्ताह में 13वें जातीय संसद चुनाव की ओर अग्रसर होगा। अपने संबोधन में उन्होंने यह भी कहा कि एक जीवंत लोकतंत्र के लिए प्रेस की स्वतंत्रता एक मुख्य शर्त है।

डॉ. यूनुस ने 2024 के जुलाई-अगस्त जनआंदोलन की वर्षगांठ को चिह्नित करते हुए कहा कि बीते दिनों को देखते हुए यह स्पष्ट होता है कि स्वतंत्र पत्रकारिता के रास्ते में सबसे बड़ी और प्रारंभिक बाधा स्वयं सरकार थी। यह वही जनआंदोलन था, जिसने देश के एकमात्र नोबेल पुरस्कार विजेता को कार्यवाहक सरकार का प्रमुख नियुक्त करने का मार्ग प्रशस्त किया था और प्रधानमंत्री शेख हसीना को सत्ता से हटा दिया था।

मूल बांग्ला भाषा में दिए गए अपने भाषण में 'गरीबों के लिए बैंकर' के रूप में प्रसिद्ध डॉ. यूनुस ने याद दिलाया कि कैसे पिछले साल 5 अगस्त को 17 करोड़ की मुस्लिम-बहुल आबादी वाले देश में छात्रों और आम नागरिकों के एक बड़े जनआंदोलन का चरम देखा गया था।

डॉ. यूनुस ने कहा कि उनकी सरकार ने नागरिक जीवन को प्रभावित करने वाले विभिन्न क्षेत्रों में सुधार के लिए अनेक पहल की हैं। उन्होंने कहा कि अब कोई भी व्यक्ति, चाहे वह मुख्यधारा मीडिया से हो या सोशल मीडिया से, सरकार की खुलेआम आलोचना कर सकता है। यहां तक कि अब राज्य द्वारा संचालित मीडिया भी सरकार की आलोचना कर सकता है- जो हाल ही में तक अकल्पनीय था।

पत्रकारों के बीच जवाबदेही सुनिश्चित

डॉ. यूनुस ने 2024 के जुलाई-अगस्त जनआंदोलन की वर्षगांठ को चिह्नित करते हुए कहा कि बीते दिनों को देखते हुए यह स्पष्ट होता है कि स्वतंत्र पत्रकारिता के रास्ते में सबसे बड़ी और प्रारंभिक बाधा स्वयं सरकार थी। यह वही जनआंदोलन था, जिसने देश के एकमात्र नोबेल पुरस्कार विजेता को कार्यवाहक सरकार का प्रमुख नियुक्त करने का मार्ग प्रशस्त किया था और प्रधानमंत्री शेख हसीना को सत्ता से हटा दिया था। मूल बांग्ला भाषा में दिए गए अपने भाषण में 'गरीबों के लिए बैंकर' के रूप में प्रसिद्ध डॉ. यूनुस ने याद दिलाया कि कैसे पिछले साल 5 अगस्त को 17 करोड़ की मुस्लिम-बहुल आबादी वाले देश में छात्रों और आम नागरिकों के एक बड़े जनआंदोलन का चरम देखा गया था। डॉ. यूनुस ने कहा कि उनकी सरकार ने नागरिक जीवन को प्रभावित करने वाले विभिन्न क्षेत्रों में सुधार के लिए अनेक पहल की हैं। उन्होंने कहा कि अब कोई भी व्यक्ति, चाहे वह मुख्यधारा मीडिया से हो या सोशल मीडिया से, सरकार की खुलेआम आलोचना कर सकता है। यहां तक कि अब राज्य द्वारा संचालित मीडिया भी सरकार की आलोचना कर सकता है- जो हाल ही में तक अकल्पनीय था।

करने हेतु बांग्लादेश प्रेस काउंसिल का पुनर्गठन किया गया है और पत्रकारों को सशक्त बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण भी शुरू किए गए हैं, जिससे वे गलत सूचना का मुकाबला कर सकें।

डिजिटल सुरक्षा अधिनियम (जो बाद में साइबर सुरक्षा अधिनियम से प्रतिस्थापित हुआ) का उल्लेख करते हुए, जिसे पूर्ववर्ती निरंकुश शासन ने पत्रकारों के खिलाफ एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया था। डॉ. यूनुस ने इसके निरस्तीकरण की घोषणा की और इसके अंतर्गत दर्ज सभी मामलों को वापस लेने की बात कही। लेकिन जमीनी हकीकत परेशान करने वाली बनी हुई है।

मीडिया कर्मियों की कानूनी और सामाजिक सुरक्षा के संदर्भ में, हाल ही में Ymen Singh आधारित समाचार पत्र दैनिक प्रतिदिनेर कागोज से जुड़े पत्रकार मो. असदुज्जमां तुहिन की हत्या ने मीडिया स्वतंत्रता की भयावह स्थिति को उजागर किया है। 40 वर्षीय तिन को 7 अगस्त की शाम गाजीपुर में एक चाय की दुकान पर कुछ हमलावरों ने बेरहमी से काट डाला।

प्रारंभिक पुलिस जांच के अनुसार, तुहिन को इसलिए निशाना बनाया गया क्योंकि उन्होंने रंगदारी की एक घटना का वीडियो बनाते हुए अपराधियों को पकड़ लिया था। नजदीकी भवन से मिली सीसीटीवी फुटेज से पुष्टि हुई कि तुहिन की मौके पर ही मौत हो गई। उनके पीछे पत्नी मुक्ता अख्तर, दो बेटे और अन्य परिजन हैं।

अगले दिन पुलिस ने हत्या के सिलसिले में चार लोगों (मो. केतु मिजान, उनकी पत्नी परुल अख्तर उर्फ गोलापी, मो. स्वतंत्र, सुमन

और अल-अमीन) को गिरफ्तार किया। बाद में दो और व्यक्तियों (शाह जलाल, फैसल हसन) को भी गिरफ्तार किया गया।

गाजीपुर में ही 6 अगस्त को दैनिक बांग्लादेशेर आलो के पत्रकार अनवर हुसैन पर भी कुछ बदमाशों ने दिनदहाड़े हमला कर दिया। हुसेन स्थानीय विक्रेताओं और ऑटो रिक्शा चालकों से रंगदारी वसूलने वालों के खिलाफ रिपोर्टिंग कर रहे थे।

इससे पहले 25 जून को ढाका के नवीनगर इलाके में एक अन्य पत्रकार (खंदकार शाह आलम) की हत्या कर दी गई थी। हमलावर एक रिहा हुआ कैदी था, जिसे विश्वास था कि आलम की दैनिक मातृजगत में की गई रिपोर्टिंग के कारण उसे जेल जाना पड़ा।

'बांग्लादेश में पत्रकारों पर हमले केवल शारीरिक हिंसा तक सीमित नहीं हैं।'

द डेली स्टार अखबार के एक संपादकीय के अनुसार, ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल बांग्लादेश की एक हालिया रिपोर्ट बताती है कि अगस्त 2024 से जुलाई 2025 के बीच 496 पत्रकारों को प्रताड़ित किया गया, 266 को जुलाई जनआंदोलन से जुड़े मामलों में आरोपी बनाया गया, और 3 की ड्यूटी के दौरान हत्या कर दी गई। इसी अवधि में आठ संपादकों और 11 निजी टीवी समाचार प्रमुखों को बर्खास्त किया गया और कम से कम 150 पत्रकारों को नौकरी से निकाल दिया गया।

संपादकीय ने यह भी कहा कि शेख हसीना के निरंकुश शासन के पतन के बाद जनता को एक अधिक स्वतंत्र और राजनीतिक हस्तक्षेप से मुक्त मीडिया की उम्मीद थी, लेकिन वर्तमान प्रशासन अब तक प्रेस की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठा पाया है।

कुछ दिन पहले, नई दिल्ली स्थित राइट्स एंड रिस्क्स एनालिसिस ग्रुप (RRAG) ने एक रिपोर्ट जारी की, जिसमें दावा किया गया कि अगस्त 2024 के बाद से बांग्लादेश में पत्रकारों और मीडिया हाउसों पर हमलों, कानूनी उत्पीड़न और सरकारी डराने-धमकाने की घटनाओं में नाटकीय वृद्धि हुई है। रिपोर्ट के अनुसार जुलाई 2025 तक, डॉ. यूनुस की अगुवाई वाली अंतरिम सरकार के कार्यकाल में कम से कम 878 पत्रकारों को निशाना बनाया गया, जिनमें से 431 को शारीरिक हमले या आपराधिक

धमकियों का सामना करना पड़ा। RRAG के निदेशक सुहास चकमा ने बताया कि पिछले एक साल में पत्रकारों के खिलाफ लगभग 195 आपराधिक मामले दर्ज किए गए। बांग्लादेश फाइनेंशियल इंटेलिजेंस यूनिट जैसी संस्थाओं ने, जो पहले मीडिया के खिलाफ इस्तेमाल नहीं होती थीं, पिछले वर्ष 107 पत्रकारों को नोटिस जारी किए। इसके अलावा, 167 पत्रकारों को प्रेस मान्यता देने से भी इनकार कर दिया गया, जिनमें से कई पूर्व हसीना शासन से जुड़े माने जाते हैं। घरेलू मीडिया संगठनों के अलावा, पेरिस स्थित रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स (RSF) ने भी सरकार से मांग की कि तुहिन की हत्या और हुसैन पर हमले में शामिल अपराधियों को जल्द से जल्द न्याय के कठघरे में लाया जाए और पत्रकारों की सुरक्षा सुनिश्चित की जाए। जिनेवा आधारित प्रेस एम्बलम कैंपेन (PEC) ने भी ढाका सरकार से अपराधियों को पकड़ने के लिए त्वरित कार्रवाई की मांग की। PEC अध्यक्ष ब्लैज लेम्पेन ने इन अपराधों की निंदा करते हुए कहा, 'यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि एक पत्रकार को अपराध उजागर करने की कीमत अपनी जान देकर चुकानी पड़ी।' उन्होंने अंतरिम सरकार से अपील की कि बांग्लादेश में आगामी आम चुनाव से पहले पत्रकारों की सुरक्षा सुनिश्चित की जाए।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

डिजिटल सुरक्षा अधिनियम (जो बाद में साइबर सुरक्षा अधिनियम से प्रतिस्थापित हुआ) का उल्लेख करते हुए, जिसे पूर्ववर्ती निरंकुश शासन ने पत्रकारों के खिलाफ एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया था। डॉ. यूनुस ने इसके निरस्तीकरण की घोषणा की और इसके अंतर्गत दर्ज सभी मामलों को वापस लेने की बात कही। लेकिन जमीनी हकीकत परेशान करने वाली बनी हुई है।

मीडिया कर्मियों की कानूनी और सामाजिक सुरक्षा के संदर्भ में, हाल ही में ढ्ढद्बद्दह्ट स्द्बट्टद्दद्ध आधारित समाचार पत्र दैनिक प्रतिदिनेर कागोज से जुड़े पत्रकार मो. असदुज्जमां तुहिन की हत्या ने मीडिया स्वतंत्रता की भयावह स्थिति को उजागर किया है। 40 वर्षीय तिन को 7 अगस्त की शाम गाजीपुर में एक चाय की दुकान पर कुछ हमलावरों ने बेरहमी से काट डाला।

प्रारंभिक पुलिस जांच के अनुसार, तुहिन को इसलिए निशाना बनाया गया क्योंकि उन्होंने रंगदारी की एक घटना का वीडियो बनाते हुए अपराधियों को पकड़ लिया था। नजदीकी भवन से मिली सीसीटीवी फुटेज से पुष्टि हुई कि तुहिन की मौके पर ही मौत हो गई।

- गाजीपुर में ही 6 अगस्त को दैनिक बांग्लादेशेर आलो के पत्रकार अनवर हुसैन पर भी कुछ बदमाशों ने दिनदहाड़े हमला कर दिया। हुसेन स्थानीय विक्रेताओं और ऑटो रिक्शा चालकों से रंगदारी वसूलने वालों के खिलाफ रिपोर्टिंग कर रहे थे।
- इससे पहले 25 जून को ढाका के नवीनगर इलाके में एक अन्य पत्रकार (खंदकार शाह आलम) की हत्या कर दी गई थी। हमलावर एक रिहा हुआ कैदी था, जिसे विश्वास था कि आलम की दैनिक मातृजगत में की गई रिपोर्टिंग के कारण उसे जेल जाना पड़ा। 'बांग्लादेश में पत्रकारों पर हमले केवल शारीरिक हिंसा तक सीमित नहीं हैं।'
- द डेली स्टार अखबार के एक संपादकीय के अनुसार, ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल बांग्लादेश की एक हालिया रिपोर्ट बताती है कि अगस्त 2024 से जुलाई 2025 के बीच 496 पत्रकारों को प्रताड़ित किया गया, 266 को जुलाई जनआंदोलन से जुड़े मामलों में आरोपी बनाया गया, और 3 की ड्यूटी के दौरान हत्या कर दी गई। इसी अवधि में आठ संपादकों और 11 निजी टीवी समाचार प्रमुखों को बर्खास्त किया गया और कम से कम 150 पत्रकारों को नौकरी से निकाल दिया गया।
- संपादकीय ने यह भी कहा कि शेख हसीना के निरंकुश शासन के पतन के बाद जनता को एक अधिक स्वतंत्र और राजनीतिक हस्तक्षेप से मुक्त मीडिया की उम्मीद थी, लेकिन वर्तमान प्रशासन अब तक प्रेस की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठा पाया है।

संस्मरण

दिल्ली के मुख्यमंत्री-अतीत व वर्तमान

अमिताभ श्रीवास्तव

कल जब मैंने मुख्य मंत्री रेखा गुप्ता द्वारा बुलाई गई चार दिवसीय विधानसभा सत्र की रिपोर्टिंग के लिए अपना पीआईबी कार्ड इस्तेमाल कर दिल्ली विधानसभा का दौरा किया, तो मेरी अपेक्षाएं बहुत ऊंची थीं। प्रेस रूम पत्रकारों की तुलना में टीवी कैमरों से ज्यादा भरा हुआ था– यह स्वाभाविक ही था। वहां मुझे छोड़कर कोई ऐसा पत्रकार नहीं था जो मुझे जानता हो, सिवाय आलोक गौड़ (स्व. रमेश गौड़ के पुत्र) के। यह भी स्वाभाविक था क्योंकि मैं लगभग 25 साल बाद दिल्ली विधानसभा में गया था।

मैंने 1998 में 'इवनिंग न्यूज' में लगभग 15 साल की सक्रिय पत्रकारिता के बाद दिल्ली छोड़ दी थी। लेकिन यह भी स्वाभाविक है। फ्रीलांसरों को कभी वैसा 'भाव' नहीं मिलता जैसा नियमित पत्रकारों को मिलता है। 2013 में 'सहारा टाइम' के बिना किसी पूर्व सूचना के बंद हो जाने के बाद यह बात मुझे अच्छी तरह समझ आ गई। तो बात मेरे दर्जे की नहीं थी। सबसे निराशाजनक बात यह थी कि प्रेस रूम में कार्यरत अधिकारियों की ओर से कोई आधिकारिक सूचना नहीं दी जा रही थी।

ज्यादातर पत्रकार टीवी स्क्रीन पर चाय और चिप्स के साथ कार्यवाही देख रहे थे। कोई भी नोट्स नहीं बना रहा था। यह बात तब और स्पष्ट हो गई जब मैं प्रेस गैलरी में पहुंचा। वहां लगभग दस वरिष्ठ पत्रकार नोट्स ले रहे थे। पत्रकारिता में तस्वीरों से ज्यादा महत्व लिखित शब्द का होता है।

पूर्व मुख्यमंत्री मदनलाल खुराना को छोड़कर बाकी सब सामान्य थे। मुझे याद है एक बार मैं उनके कमरे में उनका इंटरव्यू कर रहा था। जैसे ही मेरे कैमरामैन एचसी तिवारी (जो अब हमारे बीच नहीं हैं) ने कैमरा निकाला, खुराना लगभग पांच मिनट तक एक खास एंगल में पोज़ बनाए खड़े रहे। बाद में तिवारी ने बताया कि किसी ने खुराना जी से कहा था कि उनका दायां प्रोफाइल उन्हें बहुत हैंडसम दिखाता है। खुराना ने मुझे कभी परेशान नहीं किया। जब भी मैंने उन्हें कॉल किया,

मुझे याद है एक बार मैं उनके कमरे में उनका इंटरव्यू कर रहा था। जैसे ही मेरे कैमरामैन एचसी तिवारी (जो अब हमारे बीच नहीं हैं) ने कैमरा निकाला, खुराना लगभग पांच मिनट तक एक खास एंगल में पोज़ बनाए खड़े रहे। बाद में तिवारी ने बताया कि किसी ने खुराना जी से कहा था कि उनका दायां प्रोफाइल उन्हें बहुत हैंडसम दिखाता है। खुराना ने मुझे कभी परेशान नहीं किया। जब भी मैंने उन्हें कॉल किया, उन्होंने जानकारी देने में कभी संकोच नहीं किया। जब हवाला कांड में उनका नाम आने पर उन्हें इस्तीफा देना पड़ा और साहिब सिंह वर्मा मुख्यमंत्री बने, तब खुराना हमारे सबसे अच्छे मित्र बन गए। लगभग हर दिन या एक दिन छोड़कर वे हमें- तीन चुनिंदा पत्रकारों को- कनिष्क होटल में चाय पर बुलाते और नए मुख्यमंत्री के खिलाफ दस्तावेज दिखाते। हमारे माध्यम से उन्होंने बीजेपी को इतना नुकसान पहुंचाया कि चुनाव से पहले ही पार्टी को साहिब सिंह वर्मा को हटाकर सुषमा स्वराज को लाना पड़ा। बीजेपी बुरी तरह हार गई और कांग्रेस की शीला दीक्षित मुख्यमंत्री बनीं। लेकिन शीला दीक्षित की बात करने से पहले, मैं साहिब सिंह वर्मा की सराहना करना चाहूँगा। मुझे लगता है मैं उनका सबसे बड़ा आलोचक था। मेरा 'इवनिंग न्यूज' हर दिन मसालेदार खबरें देता था जिसे बाकी अखबार उठाते थे।

ज्यादातर पत्रकार टीवी स्क्रीन पर चाय और चिप्स के साथ कार्यवाही देख रहे थे। कोई भी नोट्स नहीं बना रहा था। यह बात तब और स्पष्ट हो गई जब मैं प्रेस गैलरी में पहुंचा। वहां लगभग दस वरिष्ठ पत्रकार नोट्स ले रहे थे। पत्रकारिता में तस्वीरों से ज्यादा महत्व लिखित शब्द का होता है।

उन्होंने जानकारी देने में कभी संकोच नहीं किया।

जब हवाला कांड में उनका नाम आने पर उन्हें इस्तीफा देना पड़ा और साहिब सिंह वर्मा मुख्यमंत्री बने, तब खुराना हमारे सबसे अच्छे मित्र बन गए। लगभग हर दिन या एक दिन छोड़कर वे हमें- तीन चुनिंदा पत्रकारों को- कनिष्क होटल में चाय पर बुलाते और नए मुख्यमंत्री के खिलाफ दस्तावेज दिखाते। हमारे माध्यम से उन्होंने बीजेपी को इतना नुकसान पहुंचाया कि चुनाव से पहले ही पार्टी को साहिब सिंह वर्मा को हटाकर सुषमा स्वराज को लाना पड़ा।

बीजेपी बुरी तरह हार गई और कांग्रेस की शीला दीक्षित मुख्यमंत्री बनीं। लेकिन शीला दीक्षित की बात करने से पहले, मैं साहिब सिंह वर्मा की सराहना करना चाहूँगा। मुझे लगता है मैं उनका सबसे बड़ा आलोचक था। मेरा 'इवनिंग न्यूज' हर दिन मसालेदार खबरें देता था जिसे बाकी अखबार उठाते थे।

उन्होंने एक बार किसी से कहा था कि उन्होंने शोभना भरतिया (बिरला जी की बेटी) से डिनर पर मुलाकात की, लेकिन अमिताभ श्रीवास्तव को 'काबू' नहीं कर पाए। (धन्यवाद 'हिंदुस्तान टाइम्स' को, जिसने मेरे 27 साल के कार्यकाल में कभी मेरी रिपोर्टिंग में हस्तक्षेप नहीं किया।) लेकिन वही साहिब सिंह वर्मा हर सुबह एक घंटा मीडिया से बात करने के लिए तय रखते थे-उस समय न व्हाट्सएप था, न मोबाइल। 1998 में जब मुझे 'हिंदुस्तान टाइम्स' के लिए देहरादून भेजा गया, तब वर्मा पंत विश्वविद्यालय आए थे।

मैंने उनसे मजाक में कहा, 'आप खुश होंगे मुझे 'तड़ीपार' देख कर।' उन्होंने मुझे गले लगा लिया और कहा, 'सब भूल जाओ, जब भी दिल्ली आओ, मुझे कॉल जरूर करना।' वह मौका जल्दी ही आ गया। बायपास सर्जरी के बाद मुझे कानपुर ट्रांसफर किया गया और 2003 में बेटी की शादी के लिए मुझे पैसों की जरूरत थी। मैं दिल्ली गया और अपने पीएफ के पैसे लेने के लिए कॉल किया- उन्होंने कहा तीन महीने लगेंगे। हताश होकर मैंने सुबह 7 बजे साहिब सिंह वर्मा को कॉल किया- जो उस समय केंद्रीय श्रम मंत्री थे।

उन्होंने फोन अपने घर पर बैठे श्रम आयुक्त को थमा दिया और दो दिन में मुझे मेरा पैसा मिल गया। जब शीला दीक्षित को दिल्ली कांग्रेस की अध्यक्ष बनाया गया, तो मैंने लिखा था कि वह और दिल्ली के उस समय के बीजेपी अध्यक्ष (नाम भूल रहा हूं)-अब तक लड़े गए छह चुनाव हार चुके थे।

एक बार डीपीसीसी ने जनपथ के एक रेस्तरां में पत्रकारों को पार्टी दी। मुझे देखते ही जगदीश टाइटलर ने मेरा हाथ पकड़ा और शीला दीक्षित के पास ले जाकर कहा, 'यह वही बदमाश है जो आपके बारे में निगेटिव खबरें छापता है।' उन्होंने मुस्कराते हुए कहा, 'अरे कोई बात नहीं। वो अपना काम कर रहा है, मैं अपना।' बाद में उन्होंने दिल्ली में तीन बार चुनाव जीतकर इतिहास रच दिया।

उनके बाद अरविंद केजरीवाल आए, लेकिन मुझे कभी इस 'पाइड पाइपर ऑफ इंडिया' से मिलने का मौका नहीं मिला। बाद की घटनाओं ने यह साबित किया कि ऐसे इंसान को जानने का कोई अफसोस भी नहीं रहा। और अब आई हैं रेखा गुप्ता- एक सच्ची दिल्ली वाली- जो हर दिन कुछ नया करके चौंकाती हैं।

एक दिन उन्होंने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की कि 15 साल पुरानी गाड़ियों को फाड़ने की बजाय उनकी फिटनेस, माइलेज और प्रदूषण स्तर की जाँच की जाए। एनसीआर के हजारों वरिष्ठ नागरिक, जिनकी गाड़ियों का पांच साल के लिए रिन्यूअल हुआ था, उनके इस सोच के लिए धन्यवाद दे रहे हैं।

कल उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए 'यू स्पेशल' बसें फिर से शुरू करने की घोषणा की- जैसे हमारे समय में होती थीं। खुद दौलतराम कॉलेज की छात्रा रही हैं, तो वे दिल्ली यूनिवर्सिटी की विरासत को फिर से जीवंत करना चाहती हैं। लेकिन मेट्रो के आने के बाद बसों की जगह सीमित है, तो इस प्रयोग को देखना होगा।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

नवीकरणीय ऊर्जा संक्रमण भारत की रणनीतिक हिस्सेदारी

नवीकरणीय ऊर्जा की ओर वैश्विक बदलाव केवल एक पर्यावरणीय अनिवार्यता नहीं है- यह मूल रूप से आर्थिक शक्ति संरचनाओं, व्यापार गतिशीलता और भू-राजनीतिक संरेखण को नया आकार दे रहा है। कहीं भी यह परिवर्तन मध्य पूर्व की तुलना में अधिक परिणामी नहीं है, एक ऐसा क्षेत्र जो लंबे समय से आर्थिक अस्तित्व के लिए जीवाश्म ईंधन के निर्यात पर निर्भर है। साथ ही, भारत जैसे देश एक महत्वपूर्ण चौराहे पर खड़े हैं, जो रणनीतिक निवेश, तकनीकी अनुकूलन और राजनयिक जुड़ाव के माध्यम से इस बदलाव को भुनाने के लिए तैयार हैं।

अतुल बलराम

जीवाश्म ईंधन की घटती मांग :

मध्य पूर्व की समृद्धि, दशकों से, तेल और गैस निर्यात के इर्द-गिर्द घूमती रही है। खाड़ी सहयोग परिषद (जीसीसी) के देश-विशेष रूप से सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, कतर और कुवैत- हाइड्रोकार्बन से अपने सरकारी राजस्व का 70% से अधिक प्राप्त करते हैं। हालांकि, कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए वैश्विक प्रतिबद्धताएं, बैटरी भंडारण में प्रगति, सौर और पवन प्रौद्योगिकियों की गिरती लागत, और बढ़ती इलेक्ट्रिक वाहन अपनाने से जीवाश्म ईंधन की दीर्घकालिक मांग तेजी से कम हो रही है।

अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (IEA) के अनुसार, 2050 तक, नवीकरणीय स्रोतों को वैश्विक स्तर पर नई बिजली उत्पादन के 90% से अधिक के लिए जिम्मेदार होने का अनुमान है। यूरोप ने पहले से ही मध्य पूर्वी तेल पर अपनी निर्भरता को कम करना शुरू कर दिया है, और यहां तक कि चीन-एक बार क्षेत्र का सबसे बड़ा खरीदार-अपनी घरेलू नवीकरणीय क्षमता को बढ़ा रहा है। नतीजतन, मध्य पूर्वी तेल निर्यातकों को अपने आर्थिक मॉडल पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर किया जा रहा है।

मध्य पूर्व विविधीकरण और हरित ऊर्जा धुरी :

इस गिरावट का सामना करते हुए, मध्य पूर्वी अर्थव्यवस्थाएं विविधीकरण कार्यक्रम शुरू कर रही हैं। सऊदी अरब के विजन 2030 का उद्देश्य अक्षय ऊर्जा द्वारा संचालित भविष्य के हरे शहर NEOM जैसी मेगा-परियोजनाओं के माध्यम से अपनी तेल निर्भरता को कम करना है। यूएई ने मोहम्मद बिन राशिद अलमकतूम सोलर पार्क जैसे सौर पार्कों में निवेश किया है और अपनी स्वच्छ ऊर्जा शाखा मसदर लॉन्च की है। ये प्रयास एक क्षेत्रीय धुरी का संकेत देते हैं, हालांकि प्रगति असमान बनी हुई है और अभी भी पेट्रोडॉलर द्वारा भारी रूप से रेखांकित की गई है।

इसके अतिरिक्त, कई खाड़ी राष्ट्र खुद को हरित हाइड्रोजन और अमोनिया के संभावित निर्यातकों के रूप में स्थान दे रहे हैं, निर्यात के लिए स्वच्छ ईंधन का उत्पादन करने के लिए अपनी प्रचुर मात्रा में सौर ऊर्जा का लाभ उठा रहे हैं। सफल होने पर, यह खोए हुए तेल राजस्व के एक हिस्से को बदल सकता है, लेकिन ये बाजार अभी भी शुरुआती चरण में हैं और वैश्विक प्रतिस्पर्धा का सामना कर रहे हैं।

भारत की ऊर्जा सुरक्षा और आर्थिक हिस्सेदारी :

भारत, दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा ऊर्जा उपभोक्ता, इस संक्रमण से गहराई से प्रभावित है। ऐतिहासिक रूप से मध्य पूर्वी तेल पर निर्भर- इस क्षेत्र से अपने कच्चे तेल का लगभग 60% आयात करना- भारत की ऊर्जा सुरक्षा खाड़ी से निकटता से जुड़ी हुई है। हालांकि, यह

निर्भरता रणनीतिक कमजोरियों के साथ आती है, जिसमें मूल्य अस्थिरता, भू-राजनीतिक तनाव (जैसे ईरान संकट या लाल सागर व्यवधान), और व्यापार असंतुलन शामिल हैं।

अक्षय ऊर्जा में बदलाव भारत को इस समीकरण को फिर से संतुलित करने का मौका प्रदान करता है। घरेलू स्तर पर, भारत आक्रामक रूप से अपनी नवीकरणीय क्षमता को बढ़ा रहा है, जिसका लक्ष्य 2030 तक 500 गीगावॉट गैर-जीवाश्म ऊर्जा है। यह दीर्घकालिक तेल आयात निर्भरता को कम करता है और ऊर्जा संप्रभुता को बढ़ाता है। इसके अलावा, केवल जीवाश्म ईंधन के बजाय नवीकरणीय सहयोग पर खाड़ी देशों के साथ जुड़कर भारत भविष्य के लिए अधिक तैयार साझेदारी बना सकता है।

हरित हाइड्रोजन और भारत-मध्य पूर्व सहयोग :

एक उभरता हुआ अवसर ग्रीन हाइड्रोजन में निहित है। भारत के राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन का उद्देश्य देश को हाइड्रोजन उत्पादन और निर्यात के लिए एक वैश्विक केंद्र बनाना है। मध्य पूर्वी देश, अपनी कम लागत वाली सौर क्षमता के साथ, इस क्षेत्र पर भी नजर गड़ाए हुए हैं। एक सहयोगी भारत-खाड़ी हाइड्रोजन कॉरिडोर भारत को ग्रीन हाइड्रोजन और इसके डेरिवेटिव आयात करने या मध्य पूर्वी सुविधाओं में सह-निवेश करने की अनुमति दे सकता है।

Indian energy majors like Adani, Reliance, and NTPC are already e&plor-ing partnerships in the UAE and Saudi Arabia for green energy. Such syner-gies can ensure mutual benefits: India gains stable access to green fuels and investment opportunities; Middle East nations secure long-term buyers and strategic diversification.

भारत, दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा ऊर्जा उपभोक्ता, इस संक्रमण से गहराई से प्रभावित है। ऐतिहासिक रूप से मध्य पूर्वी तेल पर निर्भर- इस क्षेत्र से अपने कच्चे तेल का लगभग 60% आयात करना- भारत की ऊर्जा सुरक्षा खाड़ी से निकटता से जुड़ी हुई है। हालांकि, यह निर्भरता रणनीतिक कमजोरियों के साथ आती है, जिसमें मूल्य अस्थिरता, भू-राजनीतिक तनाव (जैसे ईरान संकट या लाल सागर व्यवधान), और व्यापार असंतुलन शामिल हैं।अक्षय ऊर्जा में बदलाव भारत को इस समीकरण को फिर से संतुलित करने का मौका प्रदान करता है। घरेलू स्तर पर, भारत आक्रामक रूप से अपनी नवीकरणीय क्षमता को बढ़ा रहा है, जिसका लक्ष्य 2030 तक 500 गीगावॉट गैर-जीवाश्म ऊर्जा है। यह दीर्घकालिक तेल आयात निर्भरता को कम करता है और ऊर्जा संप्रभुता को बढ़ाता है।

Geopolitical and Diaspora Dimensions :

अर्थशास्त्र से परे, भारत-मध्य पूर्व नवीकरणीय संबंधों का एक भू-राजनीतिक कोण है। जैसा कि तेल वैश्विक शक्ति समीकरणों पर अपनी पकड़ खो देता है, सॉफ्ट पावर, तकनीकी कूटनीति और जलवायु नेतृत्व नए गठबंधनों को परिभाषित करेगा। भारत, जलवायु मंचों में अपनी बढ़ती आवाज और अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) जैसे समूहों में भागीदारी के साथ, गहरे क्षेत्रीय प्रभाव का निर्माण कर सकता है।

खाड़ी में भारत का विशाल प्रवासी-9 मिलियन से अधिक मजबूत-एक महत्वपूर्ण पुल बना हुआ है। कई भारतीय पेशेवर अब न केवल पारंपरिक क्षेत्रों में बल्कि इस क्षेत्र में नवीकरणीय परियोजनाओं के निर्माण, इंजीनियरिंग और प्रबंधन में भी शामिल हैं। यह कार्यबल परिवर्तन मध्य पूर्व की विकसित हरित अर्थव्यवस्था में भारत की हिस्सेदारी को मजबूत कर सकता है।

जोखिम और रणनीतिक सिफारिशें :

हालांकि, संक्रमण जोखिम के साथ भी आता है। तेल राजस्व में तेजी से गिरावट खाड़ी अर्थव्यवस्थाओं को अस्थिर कर सकती है, संभावित रूप से प्रेषण, व्यापार और क्षेत्रीय स्थिरता को प्रभावित कर सकती है-जो भारत के लिए महत्वपूर्ण है। इसलिए, भारत को एक संतुलित दृष्टिकोण पर जोर देना चाहिए-अपने स्वयं के ऊर्जा संक्रमण में तेजी लाते हुए खाड़ी स्थिरता का समर्थन करना।

नीति निर्माताओं को प्राथमिकता देनी चाहिए :

- हरित ईंधन पर ध्यान केंद्रित करने वाले दीर्घकालिक ऊर्जा सहयोग समझौते;
- सौर, भंडारण और हाइड्रोजन पर संयुक्त अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रम;
- लिथियम और दुर्लभ पृथ्वी जैसे नवीकरणीय आदानों के लिए रणनीतिक भंडार और व्यापार गलियारे;
- ISA और I22 (भारत-इज़राइल-UAE-USA) जैसे मंचों के माध्यम से बहुपक्षीय सहयोग।

समाप्ति : नवीकरणीय ऊर्जा क्रांति वैश्विक शक्ति की रूपरेखा को फिर से तैयार कर रही है। मध्य पूर्व के लिए, यह अस्तित्वगत आर्थिक चुनौतियों और पुनर्निमाण की तत्काल आवश्यकता है। भारत के लिए, यह तेल निर्भरता से राहत और रणनीतिक, हरित साझेदारी के लिए एक प्रवेश द्वार दोनों प्रदान करता है। अगला दशक परिभाषित करेगा कि क्या यह संक्रमण एक साझा अवसर बन जाता है- या छूटे हुए अवसरों की कहानी। भारत को तेल के बाद के मध्य पूर्व के ऊर्जा भविष्य में अपनी हिस्सेदारी का दावा करने के लिए अभी कार्य करना चाहिए।

(लेखक ने द पायनियर, वाराणसी से अपने पत्रकारिता जीवन की शुरुआत करते हुए भारत और विदेशों में कई समाचार पत्रों में काम किया है)

मीडिया मैप

उदार जनतंत्र का सजग प्रहरी

संरक्षक सदस्यता : रु. 50,000/-

आजीवन सदस्यता : रु. 20,000/- (व्यक्तिगत), रु. 40,000/- (संस्थागत)
विशेष सदस्यता : रु. 5000/- (व्यक्तिगत), रु. 10,000/- (संस्थागत)
सामान्य सदस्यता (5 वर्ष) : रु. 2500/- (व्यक्तिगत) और रु. 5000/- (संस्थागत)

(डॉक खर्च सहित)

---

1. हां मैं 'मीडिया मैप' हिन्दी मासिक पत्रिका का (व्यक्तिगत/संस्थागत) विशेष सदस्यता/आजीवन सदस्यता/संरक्षक सदस्यता के रूप में 'मीडिया मैप' के नाम नकद/चेक/डिमांड ड्राफ्ट नं : ..... दिनांक : ..... के रूप में धनराशि रु. ..... की सहयोग राशि संलग्न कर रहा/रही हूं।

2. मैंने दिनांक : ..... को नकद/चेक/डी.डी. ..... के माध्यम से 'मीडिया मैप' हिन्दी मासिक पत्रिका का (व्यक्तिगत/ संस्थागत) विशेष सदस्यता/आजीवन सदस्यता/संरक्षक सदस्यता के रूप में धनराशि रु. ..... कार्यालय के पता- 70 ज्ञानखंड-4, इंदिरापुरम, गाजियाबाद- 201014 (उत्तर प्रदेश) पर भेज दिया है।

3. मैंने 'मीडिया मैप' हिन्दी मासिक पत्रिका का (व्यक्तिगत/संस्थागत) विशेष सदस्यता/आजीवन सदस्यता/संरक्षक सदस्यता के रूप में धनराशि रु. ..... 'मीडिया मैप' के (भारतीय स्टेट बैंक, नीतिखंड इंदिरापुरम, गाजियाबाद के चालू खाता संख्या : **43812481024, IFSC** कोड नं.- **SBIN0005226)** में दिनांक..... को जमा करा दिए हैं। इसकी सूचना Email : editor@mediamap.co.in द्वारा भेज दी है।

मेरा पूरा विवरण निम्न प्रकार से है, कृपया मेरे पते पर 'मीडिया मैप' पत्रिका भेजने की कृपा करें।

पूरा नाम : ..... डाक का पता : .....

पिन कोड : ..... मोबाइल/फोन नं. : .....

हस्ताक्षर

मीडिया मैप **Media Map**

पंजीकृत कार्यालय : 2324, सेक्टर-डी, पॉकेट-2, वसंतकुंज, नई दिल्ली
Email : editor@mediamap.co.in, Contact: 9810385757/9910069262

नाम : ..... पता : ..... से नकद/चेक/डी.डी द्वारा

राशि. रुपया : ..... दिनांक : ..... को पत्रिका की सदस्यता हेतु प्राप्त किया।

(प्राप्तकर्ता के हस्ताक्षर)

RNI NO. : UPHIN/2016/68336

See Media Map Website

Website link: www.mediamap.co.in

View Media Map YouTube

Media Map News

जनसंवाद 7 : खानपान पर रोक क्यों? Ep- 124
3 views • 4 hours ago

जन संवाद 6 : नेहा हो या कुणाल, व्यंग्य से क्यों डरना? Ep- 123
4 views • 4 hours ago

विविधा 15 : जज को भी छह महीनों की सजा : Ep- 122
27 views • 21 hours ago

विविधा- 14 : कंपनी की तानाशाही - आपके प्रोडक्ट को ख़राब कर रहें हैं। Ep- 121
6 views • 23 hours ago

आर्थिक सहयोग की अपील

उदार लोकतंत्र और गैर-सांप्रदायिक विश्वास के दर्शन से जुड़ा, मीडियामैप समाचार नेटवर्क एक गैर-व्यावसायिक संगठन है। हम आप जैसे गंभीर और समझदार पाठकों को संबोधित करना चाहते हैं। वरिष्ठ मीडियाकर्मियों के समूह द्वारा किया गया यह एक स्वैच्छिक प्रयास है, जिसका किसी राजनीतिक, सामाजिक या व्यावसायिक समूह से कोई संबंध नहीं है। मीडिया मैप के प्रकाशन को निरंतर व सुचारु रूप से जारी रखने हेतु आपका सहयोग आवश्यक है।

- ***State Bank of India***
- ***Account No. 43812481024***
- ***IFSC # SBIN0005226***
- ***प्रस्तुत QR कोड को स्कैन करें।***

प्रकाशक
MBKM Foundation, एक पंजीकृत गैर-लाभकारी संगठन

पंजीकृत कार्यालय
फ्लैट नंबर: 2332, सेक्टर-डी, पॉकेट-2, वसंत कुंज, दक्षिण दिल्ली

RNI No. : UPHIN/2016/68336

Please Stay with us and Explore the Beauty of the Surrounding Areas

Scholars Destination

PLEASE CONTACT

9045005700 | 9910322682 | www.sdmotel.com | info@sdmotel.com

BHALUGAAD WATERFALL

KAINCHI DHAM

MUKTESHWAR DHAM

CHAULI KI JALI